विलाससूची ।

भूमिका ।

साहित्य में इतिहास का बहुत ऊंचा दर्जा है। हिन्दी में अभी इतिहास की बहुत कमी है। हिन्दी-साहित्य-संसार में अभी तक सच्चे इतिहास लेखक तथा इतिहास पाठक बहुत कम देखे जाते हैं। परंतु अब लोगों का ध्यान इस ओर कुछ कुछ झुका सा जान पड़ता है। इसी लिये सभा ने भी इतिहास ग्रन्थों के प्रकाशन में अधिक ध्यान देना आरंभ किया है।

इतिहास एक रूखा सूखा विषय है। इसी कारण लोग उस ओर कम ध्यान देते हैं। परंतु जब सच्चे इतिहास के साथ सुन्दर कविता का मेल हो जाता है तब उसकी छटा दुगुनी मनमोहनी हो जाती है। इस हेतु साहित्य पर उन कवियों का बड़ा भारी एहसान होता है जो ऐतिहासिक काव्य लिखते हैं। ऐसे ऐतिहासिक काव्य ही अजर और अमर होकर साहित्य की शोभा बढ़ाते हैं।

यह ग्रंथ भी ऐसा ही एक ऐतिहासिक काव्य है। इसे राजपूताना निवासी "मान" कवि ने विक्रमी संवत् १७३४ में लिखना आरंभ किया था। मालूम होता है कि इस ग्रन्थ को कवि ने तीन वर्ष बाद समाप्त किया है क्योंकि सं० १७३७ तक की घटनाओं का वर्णन इसमें पाया जाता है। इसमें उदयपुराधीश महाराणा राजसिंह के समय का वर्णन है। जिस समय का वर्णन कवि ने इस पुस्तक में किया है उस समय का साधारण कालज्ञान पाठक को अवश्य होना चाहिये, नहीं तो कहीं कहीं कुछ बातों के समझने में

कठिनाई पड़ेगी। यह ग्रन्थ ठीक उसी समय लिखा गया है जिस समय इसमें वर्णित घटनायें हो रही थीं। अतएव इसके वर्णन प्रामाणिक मानने योग्य हैं। उस समय की देशदशा यों थी। अकबरी समय की सुख और शांति की छटा पर मलिनता आ गई थी। औरंगज़ेब ने बाप को कैद और भाइयों को धोखे से मार काट कर राज्य को अपने हस्तगत किया था। हिन्दुओं पर जज़िया (एक प्रकार का कर) जारी हो चुका था। राजघरानों की रूपवती बहू बेटियों पर औरंगज़ेब की बुरी दृष्टि प्रबलता से पड़ने लगी थी। औरंगज़ेब की कौन कहे उस समय के छोटे छोटे सूबेदार और सैनिक अफसर भी हिन्दुओं की रूपवती बहू बेटियों को अपना ही माल समझते थे। देवमूर्तियां तोड़ी जा रही थीं, मंदिरों के मसाले से मस्जिदें तैयार हो रही थीं। ऐसे समय में हिन्दुओं की धार्मिक दशा कैसी संकटापन्न रही होगी, और उनके मनोभाव कैसे रहे होंगे इसका भी विचार पाठक को कर लेना चाहिये।

जिस समय समस्त भारत में औरंगज़ेबी जुल्म उत्पात मच रहा था उसी समय संयोगवश राजपूताना में तीन प्रबल पराक्रमी और नामी नामी राजा हुए। जयपुर के सिंहासन पर वीर श्रेष्ठ महाराजा जयसिंह जी, जोधपुर के सिंहासन पर प्रसिद्ध वीरवर महाराजा यशवन्त सिंह जी, और मेवाड़ के पवित्र राजसिंहासन पर वीरकेशरी महाराणा राजसिंह जी विराजमान थे। ये तीनों महाराज बड़े ही तेजस्वी और स्वधर्मानुरागी थे। इनको औरंगज़ेब अपने हाथ की कठपुतली बनाना चाहता था परंतु बना न सका। ...

उसने प्रथम दो महाराजों को धोखे से (टाड साहेब के लेखानुसार) विष दिलवा कर मरवा डाला और यशवंत सिंह के कई एक पुत्रों को भी धोखे ही से मार डाला। महाराजा यशवन्त सिंह का केवल कई मास का एक बालक पुत्र (अजित सिंह) बच गया था। औरंज़ेब ने उसे भी हथियाना चाहा। परंतु उस बालक की माता मेवार की राजकन्या थी। इसी रिश्ते से उस बालक की माता ने मेवारपति महाराणा राजसिंह की शरण ली। राजसिंह ने बालक अजित सिंह को अपने पास बोला लिया और उसकी रक्षा की। राजसिंह पर औरंगज़ेब की ख़फ़गी का यही मुख्य कारण था।

इसके पहिले ही रूप नगर की राजकुमारी प्रभावती पर औरंगज़ेब मोहित हुआ था और उसके साथ विवाह करना चाहता था। विवाह होने ही को था, और कुछ शाही सेना भी रूप नगर तक पहुंच चुकी थी कि उक्त राजकुमारी ने राजसिंह की शरण ली, और राजसिंह ने शाही सेना को मार काट कर उक्त राजकुमारी का उद्धार करके उसके साथ विवाह कर लिया। इससे औरंगज़ेब चिढ़ा हुआ था ही। अब अजित सिंह को शरण देने से उसके क्रोध का पारा १०८ डिगरी से भी अधिक ऊंचा चढ़ गया और राजसिंह पर हमला बोल दिया गया।

महाराणा राजसिंह भी उन दिनों जवानी की उमंगों पर थे। सच्चा और उच्च कुलीन क्षत्रिय रक्त उनकी नसों में दौड़ रहा था। उन्हों ने भी कमर कस कर औरंगज़ेब का मुकाबला किया और ऐसी धीरता और निपुणता से युद्ध किया कि औरंगज़ेब के दांत खट्टे हो गये। इसी युद्ध का वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है।

इसी युद्ध के समय मेवार में एक घोर अकाल भी पड़ा था। उस समय महाराणा राजसिंह ने 'राजसर' नामक एक बड़ा तालाब और उसी तालाब के किनारे एक बड़ा विष्णु मंदिर और निकट ही 'राजनगर' नामक ग्राम बसाकर अपनी प्रजापालकता और नीतिनिपुणता का भी परिचय दिया था। इस बात का भी वर्णन इस पुस्तक के आठवें विलास में आया है।

पुस्तक में १८ विलास हैं जिनका संक्षेप यों है—

(१) सरस्वतीविनय। संवत् १७३४ में ग्रंथारंभ। मौरी वंशज चित्रांगद का मेदपाट नामक नगर बसाकर १८ प्रान्तों पर राज्य करना। सातवीं पीढ़ी में चित्रंग नामक राजा का होना। शिव वर से बप्पारावल की उत्पत्ति। हारीत मुनि के वर से बप्पा रावल का राजा होना और चित्रांगद को जीत कर चित्तौर लेना। स्वप्न में हारीत सिद्ध का दर्शन देकर रावल की पदवी देना।

(२) बप्पा रावल की वंशावली। जगत सिंह की सभा का वर्णन। उदयपुर नगर का वर्णन (बहुत ही अच्छा है)। संवत् १६८६ में जगतसिंह जी के पुत्र राजसिंह का जन्म। उनकी जन्म कुंडली और फल। ११ वर्ष की आयु तक का वर्णन।

(३) राजसिंह जी का प्रथम विवाह बूंदी में होना। बूंदी नरेश छत्रसाल हाड़ा की दो लड़कियां थीं। दोनों का विवाह एकही समय रचा गया था। जेठी पुत्री का विवाह राजसिंह के साथ; छोटी का विवाह जोधपुर के राजकुमार यशवंत सिंह के साथ। दोनों बरातें साथ ही

आई थीं। प्रथम किस की भांवरें होनी चाहियें इस विषय में दोनों बरातों में कुछ झगड़ा हुआ, परंतु छत्रसाल जी के समझाने से झगड़ा शान्त हुआ और मंडप में पहिले राजसिंह ही की भांवरें हुईं।

(४) 'ऋतुविलास' नामक बाग का वर्णन—(वर्णन बहुत ही सुन्दर है)।

(५) राजसिंह जी का २३ वर्ष की अवस्था में सं० १७०८ में सिंहासनासीन होना।

(६) सिंहासनासीन होने पर 'टीकादारी' की रस्म के अनुसार दिग्विजय को निकलना और मुगल राज्य के 'मालपुर' नामक ग्राम को लूट लेना। उस समय मुगल सम्राट शाहजहां का साम्राज्य था।

(७) रूपनगर के राजा मानसिंह राठौर की बहिन रूपकुमारी (प्रभावती) को औरंगज़ेब ने ब्याहना चाहा। रूपकुमारी ने स्वयं पत्र लिख कर राजसिंह को बोलाया। राजसिंह ने वहां जाकर रूपकुमारी से विवाह किया।

(८) ७ वर्ष का अकाल पड़ा। राजसिंह ने सं० १७१७ में कैलपुरा के निकट 'राजसर' नामक बड़ा तालाब बनवाया, एक विष्णु मंदिर बनवाया, और तुलादान किया।

(९) औरंगज़ेब और जोधपुराधीश यशवंत सिंह की नोक झोक का वर्णन। राजसिंह ने जोधपुर की सहायता की। वहां के बालक राजा को अपनी शरण में रक्खा।

(१०) औरंगज़ेब ने जोधपुर के बालक राजा (अजितसिंह) को मांगा, राजसिंह ने इनकार किया, औरंगज़ेब ने चढ़ाई की। दोनों ओर से युद्ध की तैयारियां हुईं। औरंग-

फ़ौज अजमेर में पड़ा रहा और अपने शाहज़ादा अकबर को उससे लड़ने भेजा। सामंतों की सलाह से राजसिंह ने लड़ाई करना ही ठीक ठहराया।

(११) 'देवसूरी' की घाटी में विक्रम सोलंकी और गोपीनाथ कमधज्ज ने रूमी सेना का विनाश किया।

(१२) कुंवर उदयभान के दूसरे युद्ध का वर्णन।

(१३) मोनवारा युद्ध में महासिंह, रतन सिंह, और केशरी सिंह नामक सामंतों ने गोरी फौज को पराजित किया।

(१४) गंगासिंह सगतावत (केशरीसिंह के पुत्र) ने मुगलसेना का 'हस्तीयूथ' छीन लिया।

(१५) भीमसिंह (राजसिंह के बड़े पुत्र) ने गुजरात पर चढ़ाई कर के (मुगल राज्य का एक सूबा समझ कर) उस देश को लूट लिया परंतु पिता की आज्ञा से वे शीघ्र ही वहां से लौट आये।

(१६) सांवलदास (बधनौर नरेश) ने बधनौर की ओर से आती हुई मुगल सेना को छिन्न भिन्न कर के भगा दिया। रुहेला खां इस सेना का सर्दार था और कुल सेना १२००० थी।

(१७) दयालसाह (राज्यमंत्री) ने मालवा पर (मुगलराज्य का सूबा समझ कर) चढ़ाई की। उज्जैन नगर लूट लिया और मालवा जीत लिया।

(१८) शाहज़ादा अकबर (औरंगज़ेब का पुत्र) ने चित्तौर पर चढ़ाई की। उस के साथ ५०००० सेना थी। (यह घटना संवत् १७३७ की है) राजसिंह के पुत्र जयसिंह ने

अकबर का मुकाबला किया। बहुत कठिन युद्ध हुआ। अंत में शाहज़ादा हार कर अजमेर को भाग गया।

पुस्तक का अंतिम उल्लास पढ़ते पढ़ते भास होने लगता है कि कवि यहीं पर ग्रंथ को समाप्त नहीं करना चाहता था, परंतु इसी वर्ष (संवत् १७३७ वि०) महाराणा राजसिंह का देहान्त होगया। इस लिये कवि ने अचानक ग्रंथ की समाप्ति की है।

सभा ने इस पुस्तक का सम्पादन भार मुझे सौंपा और मैंने सहर्ष स्वीकार किया। मैं युक्तप्रदेश का निवासी हूं। पुस्तक में राजपूताना के शब्दों की भरमार है। मैंने अपनी शक्ति भर तो कसर कोताही नहीं की, परंतु बहुत सम्भव है कि इसमें अनेक अशुद्धियां हो गई हों। इस लिये पाठकों से नम्रतापूर्वक निवेदन है कि उन अशुद्धियों के कारण सभा पर कोई दोषारोपण न करें वरन् उसका कारण मेरी अल्पज्ञता ही समझें। यदि सुविज्ञ पाठक इतनी कृपा और करें कि अशुद्धियों से सभा को सूचित कर दें तो मुझे पूर्ण आशा है कि द्वितीय संस्करण में सभा उन पर ध्यान देकर संशोधन कर देगी।

काशी
२९-११-१९१२

विनीत,
भगवानदीन।

राजविलास ।
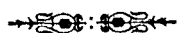
दोहा ।

सेवत सुर नर मुनि सकल, अकल अनूप अपार ।
बिबुध मात बागेश्वरी, दिन दिन सुखदातार ॥ १ ॥
देवी ज्योँ तुम करि दया, कालिदास कवि कीन ।
बरदायिनि त्योँ देहु बर, निर्मल उक्ति नवीन ॥ २ ॥
पइयेँ बर कविराज पद, लच्छी वंछित लील ।
तुम तुट्ठै जगतारनी, सुमति सँयोग सुसील ॥ ३ ॥
कौन गिनै मरु रेतुकन, को घन बुंद कहंत ।
को तारायन परि कहेँ, त्योँ गुन आदि अनंत ॥ ४ ॥
जपियहिँ तुम कौं जग जननि, अधिक ग्रंथ आरंभ ।
कवित कथा मंगल करत, दूरि हरन दुख दंभ ॥ ५ ॥
सांप्रत देहु सरस्वती, वानी सरस विलास ।
भारति जग पोषनि भरनि, इच्छित पूरन आस ॥६॥
चित्रकोट पति राज चिर, राज सिंह महारान ।
सूर्य वंश वर सहस कर, षल षंडन षूंमान ॥ ७ ॥
गावत जसु जस छंद गुन, पावत सुख भरपूर ।
सुपसायेँ तुम सारदा, दुरित प्रनासहिँ दूर ॥ ८ ॥

बीणा पुस्तक कर प्रबर, बाहन बिमल मराल ।
सेत बसन भूषन सजै, रीझी देत रसाल ॥ ९ ॥

कवित्त ।

रीझी देत रसाल रंग रस में सुररानी । गुनवंती गय गमनि बाग देवी ब्रह्मानी ॥ निशपति मुख मृग नयनि कांति कोटिक दिनकर कर। सचराचर संचरनि अगम आगम अपरंपर ॥ भय हरनि भगत जन भगवती बचन सुधारस बरसती । राजेश राण गुण संवरत सुप्रसन्न ह्वौ सरस्वती ॥१०॥

गीतामालती ।

सुप्रसन्न सरसुति मात सुमिरत कोटि मंगल कारनी । भारती सुभर भँडार भरनी विकट संकट वारनी ॥ देवी अबोधहिँ बोध दायक सुमति श्रुत संचारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ ११ ॥

आई निरंतर हसित आननि महि सुमाननि मोहनी । संकरी सकल सिँगार सज्जित रुद्र रिपुदल रोहनी ॥ वपु कनक कांति कुमारि विधिजा अजर तूंहीं जारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १२ ॥

पयतल प्रबाल किलाल पल्लव दुति महावर दीपए। अंगुली नष दह विमल उज्जल जोति तारक

जीपए ॥ अनवट अनोपम बीछिया अति धुनि मनोहर धारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १३ ॥

झमकंति झंझरि नाद रुण झुण पाय पायल पहिरना । कमनीय मुद्रावली किंकिनि अअर पय आभूषना ॥ कलधौत कूरम समय मन क्रम पाप पीड़ प्रहारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १४ ॥

कदली सुखंभ अधो कि करि कर जंघ जुग बर जानिये । शुचि शुभग सार नितंब प्रस्थल वाघ कटि बाषानिये ॥ वापिका नाभि गँभीर सुवर्णित महा रिपु दल मारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १५ ॥

चरनालि कटि तट लाल चरना पवर अरु पट कूलयं । मेषला कंचन रतन मंडित देव दूष दुकूलयं ॥ दीपती दुति जनु भानु द्वाद्स अघ तिमर अपहारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १६ ॥

तिमि तुल्ल कुखिस मध्य तिवलिय उरज उभय अनोपमां । किधौं नालिकेर कि कनक कुंभ सुकुंभिकुंभ सुऊपमं ॥ कंचुकी जरकस कसियं कोमल आदि

अमियअहारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १७ ॥

भुज दंड लंब बिशाल श्रीभर कनक भूरि सुकं-कनां । पोंचीय गजरा बहिरषा प्रिय बाहुबंध सुबं-धँना ॥ महिंदीय रंगहिं पानि मंडित बेलि सोभव धारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १८ ॥

करसाष कमनिय रूप कोमल मुद्रिका बर मंडनं । उपमान मूंगफली सु उत्तम अरुन नषर अषंडनं ॥ पुस्तकरु वीन सुपानि पल्लव बेदराग बिथारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १९ ॥

कहियै निगोदर हार कंठहि मुत्ति माल मनो-हरं । मषतूल गुन चौकी कनक मनि चारु चंपकली उरं ॥ तपनीय हंसरु पोति तिलरी कंठश्री सुख कारनी। अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२०॥

बिधु सकल कल संजुत्त बदनी चिबुक गाड़ सु-षाहियै । बिद्रुम कि बंधूजीव वर्णो सहज अधर सराहियै ॥ दुति दसन बीज सुपक्व दारिम भेष जन मन हारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ २१ ॥

रसना सुरंती श्रवति नव रस तालु मृदु तर तासयं। सतपत्र पुष्प समान सुरभित अधिक बदन उसासयं॥ कलकंठ बचन बिलास कुहकति अगम नि-गम उच्चारनी। अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जयजगतारनी॥ २२॥

शुकराय चंचु कि भुवनमनिशिष नासिका बर निरखियै। कलधौत नथ मधि लाल मुत्तिय ऊपमा आकरषियै॥ मनु राज दर गुरू शुक्र मंगल सोह बर संभारनी। अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ २३॥

अरबिंद पुष्प कि मीन अक्ष सु प्रचल षंजन पेषियं। सारंग शिशु दृग सरिस सुंदर रेह अंजन रेषियं॥ संभृत्त जुग जनु सुधा संपुट विश्व सकल विहारनी। अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ २४॥

मनु कनक संपुट सुघट मंजुल पिशित पुष्ट कपोल दो। दीपंत श्रुत जनु दोइ रवि ससि लसत कुंडललोलदो॥ इनहेत अति उद्योत आनन विघन सघन विडारनी। अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ २५॥

कोदंड आकृति भृकुटि कुटिलिति मानु भमहिं सुमधुकरं। लहि कमल कुसुम सुवास लोयन स्वैर सं-

ठिय वपु सरं ॥ किं अंवर उपमा कहय लघु कवि शत्रु जय संहारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ २६ ॥

सुविशाल भाल कि अष्टमी ससि चरचि केसरि चंदना । बिंदुली लाल सिँदूर सुवर्णित वर्ण पुष्प सुवंदना ॥ अनि तिलक जटित जराउ ऊपित सकल काम सुधारनी । अद्भुत अनूपमराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ २७ ॥

शिर भाल संधि सुसीसफूलह सहसकिरन समानयं । राषडी निरषत चित्त रंजति वेणि व्याल बषानयं ॥ मोतिन सुमांग जवादि मंडित अधम लोक उधारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनिजयतिजयजगतारनी ॥२८॥

अंशुक कि इंदु मयूष उज्जल भीन अति दुतिझलमलं । सुरवरहिं निर्म्मित सरस सुर नित परम पावन पेसलं ॥ मन रंग ऊढति महामाई विपति कंद विदारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ २९ ॥

चंबेलि जूही जाइ चंपक कुंद करणी केवरा । मचकुंद मालति दवन मुग्गर चारु कंठहिं चौसरा ॥ तंबोल मुख महकंत त्रिपुरा ब्रह्मरूप विचारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनिजयतिजयजगतारनी ॥ ३० ॥

अज अजर अमर अपार अवगत अग अखंड अनंतयं । ईश्वरी आदि अनादि अव्यय अति अनोप अचिंतयं ॥ कर जोरि कहि कवि मान किंकर अरजतं अवधारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ ३१ ॥

कवित्त ।

जय जय जगतारनी सारदा सुमति समप्पन । कुमति कु कवित कुभास कठिन कलिमल दुखकप्पन ॥ अकल अनोपम अंग मात पूरन चितित मन । सदा तास सुमिरंत धवल मंगल लहियै धन ॥ श्रीराजसिंह राना सबल महिपतियां शिरमुकटमनि । गावंत तास गुण बंद गुरु धणियांणी दिज्जै सुधुनि ॥ ३२ ॥

दोहा ।

धणियांणी दीजै सु धुनि, सरसी वांणि सुशाल ।
चित्रकोट पति जस चऊँ, रचि रचि छंद रसाल ॥३३॥
इन परि सुनि कवि कृत अरज, मात होइ सनमुक्ख ।
बोली यों अमृत बचन, सकल समप्पन सुक्ख ॥ ३४ ॥
गावहु गावहु सुकवि गुन, ठिक करि मन इक ठांउँ ।
राज राण जस छंद रचि, हों तुम्ह पूरौ हाँउँ ॥३५॥
सुवर दयौ श्री सरस्वती, आई अभिमुख आइ ।
शीश चढ़ाय लयौ सुकवि, प्रत मिसु चिकरनपाइ॥३६॥
उद्यम ग्रन्थह काज अब, दिवस महाभल देखि ।
कीनौ आलसि दूरि करि, लाभ अनंत सुलेखि॥ ३७ ॥

कवित्त ।

सुभ संवत दस सात बरस चौंतीस बधाई । उत्तम मास असाढ़ दिवस सत्तमि सुखदाई ॥ बिमल पाख बुधवार सिद्धि बर जोग संपत्तौ । हरषकार रिषि हस्त रासि कन्या ससि रत्तौ ॥ तिन द्यौस मात त्रिपुरा सुतवि कीनौ ग्रंथ मंडानकवि । श्रीराजसिंह महाराण कौ रचि यहिं जस जौं चंद रवि ॥ ३८ ॥

अति पावस उल्हरिय करिय कण्ठल धुरकाली । आसा बंधि असाढ़ हरष करसणि कर हाली ॥ बद्दल-दल वित्थुरिय चारु चपला चमकंतह । गज्जघोष गम्भीर मोर गिरि सोर मचंतह ॥ आदीत सोम छवि आवरिय घण आयौ घमसाण घण । बरसंत बुंद बड़ बड़ बिमल जलधर वल्लभ जगत जण ॥ ३९ ॥

पद्धरी ।

आसाढ़ मास आयो अनूप, रचि उत्तर कंठल श्यामरूप । बद्दल चढंत बज्जत सुवाइ, उल्हरिय सुपावस समय आइ ॥ ४० ॥

चहुँ ओर जोर चपला चमक्क, झल हलत तेज रवि सम झमक्क । घुरहरत घोर घण गुहिर घोष, पावंत सुनिव संसार पोष ॥ ४१ ॥

केकी करंत गिरवर किंगार, सजि पंष छत्र नाचंत सार । महि मिलिय सयल सिरि मेघ माल, बरसंत बुंद बड़ बड़ विशाल ॥ ४२ ॥

जल बहत जोर थलहलत खाल, पयधार पतत दगगग प्रनाल । पप्पीह चीह पिउ पिउ पुकार, भूरूह विहस्सि अट्टार भार ॥ ४३ ॥

धोवंत सिहरि घन धवलधार , पुहवी सुकीन जल थल प्रचार ॥ नीलांणी धर वरसंत नीर, चितरंग आनि मनु पहरी चीर ॥ ४४ ॥

महियल सुरग उपजे ममोल, अति अरुन अंग कोमल अमोल ॥ बगपंति श्याम बद्दल विहार, हिय मध्य पहरि मनु मुत्ति हार ॥ ४५ ॥

सब हलकि चली सलिता सँपूर, बज्जंत बारि लग्गत विधूर । उछलंत छोल ऊघल अपार, पथ थकित पथिक को लहय पार ॥ ४६ ॥

निघ्घमिक बलन न लगंत नाव, तट उपट बहत अति जोर ताव । भोंरह परंत लागंत भीर, तरुवर उपारिलैं चलिय तीर ॥ ४७ ॥

निरषंत नीर नीरधिन माय, छवि चंद सूर राषी सुछाय । हलहलत भरित सरवर हिलोर, रव समभि परंत न भेक रोर ॥ ४८ ॥

डहडहत हरित डंबर डहक्क, कोकिल करंत उपवन कुहक्क । मालती कुन्द केतकी मूल, फूले सुवृक्ष चंपक सफूल ॥ ४९ ॥

गिरि भेदि शृङ्ग किय गलम मात, निष्तरण

झरत झरहरनि घात । गहराय पत्त गहबर गहक्क,
मधुकर सुगुंज तरुवर महक्क ॥ ५० ॥

टपकंत बुन्द तरु पव्व डाल, मंडव सुकीन
द्रुम वल्लि माल । बग टग लगाय पावस बइट्ठ, दारा
सु बकी पतिव्रता दिट्ठ ॥ ५२ ॥

झुकि विटपि सजल मारुत झकोर, घन उमड़ि
घुमड़ि बरसंत घोर । चतुरंग चंग रचि इंद्र चाप,
बिरहनि करंत विह्वल विलाप ॥ ५२ ॥

यामिनी तमस अति च्यारि याम, करि कोप
काय बाधंत काम । धनवंत लोक निज धवल धाम,
बरसंत मेघ विलसंत वाम ॥ ५३ ॥

जगमगति निशा षद्योत जोति । इच्छे सुहच्छ-
नन सुद्धि होति । पर मुग्ध लब्ध पंथक प्रमोद,
वेताल करत बन घन विमोद ॥ ५४ ॥

झर मंडि इंद तम रह्यो झुक्कि, धाराधर पर
वद्दल सु धुक्कि । हुंकार नाद बन सिंह हुक्कि, ढूढंत
भक्ष निशिचार ढुक्कि ॥ ५५ ॥

बोलंत झिल्लि इक सांस बैन, मानिनि वियोग
मन मथत मैन । दीसंत मग्ग दामिनि दमक्क,
चितचोर मध्त उपजे चमक्क ॥ ५६ ॥

सारंग करत गायन सुजान, रीझंत जेह सुनि
राय राण । मल्हार घटत माचंत मेह, नर नारि
चित्त बाधंत नेह ॥ ५७ ॥

संवत सु सत्त दह सतक सार, बच्छर चौतीसम धरि विचार। सब लोक उंक निज२ सचेंन, आसाढ़ सेत सत्तमी अंन ॥ ५८ ॥

देवी सु आइ बरदान दीन, कवि मान ग्रंथ आरंभ कीन। चीतौर धनी कहियै चरित्र, पढि छंद बिबिधि रचि जस पवित्र ॥ ५९ ॥

सब हिंदवान कुल रवि समान, राजंत राज श्री राजराण। इक लिग रूप मेवार ईश, याचक जन मन पूरन जगीश ॥ ६० ॥

लहियैं जु नाम तस लच्छि लील । संपजै संग सज्जन सुशील ॥ दारिद्र दुख नासंत दूरि । ठहै रिद्धि सिद्धि संपति हजूरि ॥ ६१ ॥

दोहा ।

देश देश फिरि देखते, अति उत्तम षिति आज ।
धर्म्म देश मेवार धर, सब देसां सिरताज ॥ ६२ ॥
जिण घर हरि घर देश जिंहि, ग्राम ग्राम प्रति ग्राम ।
असुरायन धरनी अवर, रटैं नहीं जहं राम ॥ ६३ ॥
दरसन षट जे देषियै, पंडित पढ़त पुरान ।
वेद च्यारि जह बांचिये, तेज नहीं तुरकान ॥ ६४ ॥
सकल जहां पूजै मुरित, नव देवल निपजंत ।
नह अन्याय इक निमिष को, भाषा भल भाषंत ॥ ६५ ॥
गाम नगर पुर कोट गढ़, बसैं बहुत सुपवास ।
सुन्दर नर नारी सकल, वित्तवंत कर वास ॥ ६६ ॥

पग पग जल जहं पाइयै, नदी तलाब निवान ।
सालि गोधुमा सेलड़ी, सर्प्पिष सुरभि सुषान ॥६७॥
मौठ मसूर माषा मुदग, जौ बहु चना रुहार ।
धान नीपजै जिहिं धरा, अमित अमाप अपार ६८।

कवित्त ।

हद्द न्याय हिँदवान राण श्री राज सुराजहिं ।
पिशुन चोर पिल्लियहि न्याय करि साधु निवाजहिं ॥
वसैं सकल सुषवास गाम पुर नगर कोट गढ़ । सुन्दर
रूप सुजान सधन नर नारि सुकृत दृढ़ ॥ तीरथ
तलाव तटनी तहां निशि वासर निरभय निगम ॥ सब
देश देश देखे सु परि देश न को मेवार सम ॥ ६९ ॥

हनूफाल ।

मालउ मरु मेवात, मुलतान मरहठ मात ।
महि मगध मध्य मडाण, ठिक करिग पेषी ठाण ॥७०॥
ऐराक आरब अच्छ, कहि अंग बंगरु जच्छ ।
कर्णाट पुनि कंबोज, चषु दीठ चित करि चोज ॥७१॥
कासीरु दीठ कलिंग, बैराट बब्बर संग । कुरु
कासमीर कहाय, देखंत नांव हि दाय ॥ ७२ ॥
कौसलरु कौंकण किद्ध, दिल कांवरू दिशि दिद्ध ।
धायौ धंधेरा धाट, लिषि लये लाडरु लाट ॥ ७३ ॥
रहि दीठ हबसी रूम, भिलवारि भोट सु भूम ।
षंधार षग षुरसाण, गंधार नैं गुँडवाण ॥ ७४ ॥

पहि गौर गंगापार, धर भिन्न माल सुधार ।
देष्यौ सु गुर्ज्जर देश, लच्छिन न जहँ शुभ लेश ॥७५॥
विचरंति झालावारि, धावंत काठी धारि ।
छप्पनरु बागरि छेह, अटि देषि देश अछेह ॥ ७६ ॥
निज निरखि नागर चाल, नर अश्व मुख नेपाल ।
पंजाब पहु पंचाल, बसुधा बिदेह बँगाल ॥ ७७ ॥
पुनि फिरयौ देश फिरंग, रुचि न किय जहं मन रंग । सोधयौ सिंधु सुबीर, नर नारि सुष नहिं नीर ॥ ७८ ॥
सोरठ्ठ सिंघल साज, रमि रह्यौ धरतिय राज ।
दक्षिन विदरभिन देश, भल रूप भूसन भेश ॥७९॥
द्रुग द्रविड़ देश सुदिट्ठ, चबि चविड लोक सुचिट्ठ । रोहिल्ल गरवर राह, उत्तर दिशा अवगाह ॥८०॥
बसुमती देश विदेश, तरि रही नव नव तेश ।
कहिं देश अति गुरु कान, जहं सोइ अंशुक जान ८१॥
कहिं अश्वमुख नरकाय, कहिं एकजंघ कहाय ।
कहिं त्रिया राज करंत, कहुं श्वेत काक कहंत ॥ ८२ ॥
कहुं लंब कुच तिय किद्ध, पुहवी अनादि प्रसिद्ध ।
कहुं जनत कामिनि जात, तब पवन राखत तात ८३॥
षिति कहूं जल अति खार, कहिं देश जल दुख कार । कहुं कुहुर नीर कढंत, ढिग ढोल तहं ढमकंत ॥ ८४ ॥

कहिं धरा पुरुष कुरूप, सुन्दरी सकल सरूप ।
लव नही किहिं कण लू ंण, गोवहत किहिं घर गोंण ॥८५॥
इत्यादि देश अनेक, अति अधम नर अविवेक ।
समझैं न धर्म्म सुसार, गरयल अग्यान गमार ॥८६॥
सब देश में सिर दार, उत्तम जहां आचार ।
महिमेद पाट समान, पुहवी न कोइ प्रधान ॥ ८७ ॥
धर लोक जहं धनवंत, वाणी सु मिठ्ठ वदंत ।
धारंत निज२ धर्म्म, सुन्दराकार सु सर्म्म ॥ ८८ ॥
अति दत्त चित्त उदार, आदरैं पर उपकार ।
लेवा सुलच्छी लाह, सौभाग धारक साह ॥ ८९ ॥
जह हिंदुपति जयवंत, कवि मान राज करंत ।
श्रीराज सिंघ सुरांण, बिरुदैत बड़ बाषाण ॥ ९० ॥

दोहा ।

मेद पाट महि मंडणह, चित्रकोट गढ़ चारु ।
मानौ मुग्धा माननी, हिय मानिक कौ हार ॥९१॥
अति उतंग अंबर अचल, अकल अभेद अभीत ।
चित्रकोट पर चक्रतें, आदि अनादि अजीत ॥९२॥
तुंग विशाल त्रिकोट तहं, कोशीशावलि कंत ।
मैाढ़ पौरि दुर्घट सुपथ, वज्र कपाट वणंत ॥९३॥

कवित्त ।

गुरु चौरासी गढनि मही मेवार सुमंडन । अकल अभेद अभीत विषम पर चक्र विहंडन ॥ तुंग विशाल

त्रिकोट थिरिसु कोशीशा थाटह । पौरि बुरज गुरु प्रबल कठिन अग्गला कपाटह ॥ बहु कुण्ड बापि सर जल विमल विबुधालय बसुधा बदित । देषे सु दुर्ग सब देश के चित्रकोट मो बसिय चित ॥ ९४ ॥

दंडमाली ।

गढ चित्रकोट सु गाईयें, बसु सुजसु पटह बजाईयें । कुन्ती बहू गढ कोटयं, जग नहीं कोइ ने जोटयं ॥ ९५ ॥

उत्तंग गिर सम अंबरा, दिशि च्यारि दुर्गा डंबरा । सकुनी न जहं संचारयं, पहुँचैं न जहं पद धारयं ॥ ९६ ॥

प्राकार तीन प्रचंड है, मनु अमर आइसु मंड है। सु विशाल गज सँग बीस के, उत्तंग गज इकतीश के ॥९७॥

कोशीश पंकति कंतए, पटि मेरछा सम पंतए। जहँ नारि गुरु गंबूरयं, छुट्टंत रिपु दल चूरयं ॥ ९८ ॥

गुरु बुरज गिरि सम गातए, बर पौरि सत्त विष्यातए। भारी कपाट सुभग्गला, अति गाढ शृंषल अग्गला ॥ ९९ ॥

कहिं परधि द्वादस कोश की, अनभंग अंग अदोस की। दल देव निर्म्मित दुर्गए, अरि दलन गर्व्व अलग्गए ॥ १०० ॥

तरहटी तीर तरंगिनी, गंभीर गंग सु संगनी । गढ़ सज्जियै चतुरंगनी, आवै न कहि आसंगनी ॥ १ ॥

गढ़ मध्य बहु गंभीर है, सर कुण्ड बापि सनीर है । निरषे सु सर्व्व निवांन जू, यहु अधिय च्यारि प्रमान जू ॥ २ ॥

मुख भीमकुण्ड सुमानियै, जसु तीर गोमुख जानियै । पयधार पतत प्रबाहनी, अवलोकतें उ-च्छाहनी ॥ ३ ॥

उठि प्रात तच्छ अन्हाईये, गुरु रोग सोग गमा-इयै । अति एह तीरथ उत्तमं, सुप्रसंसितं पुरुसोत्तमं४॥

महि चित्रकोट सु मंडनी, दुग्गीयु आसुर दंडनी । प्राधानता प्रासादयं, बोलंत नभ सों बादयं ॥ ५ ॥

कल कीर थंभ सुकोरनी, नर नारि नेन निहोरनी । नभ लोक मिलि नव षंडयं, बल चक्रतिन चढ़ि षंडयं ६॥

मेवार धर सम मेदनी, नन अवर चित्त उमेदनी । महि चित्र कोट समानयं, गढ़ कोन आवहिं गानयं॥७॥

रिनथंभ मंडव रेवतं, सुर असुर किंनर सेवतं । आबू सुगढ आसेरयं, अवगाढ़ गढ़ अजमेरयं ॥ ८ ॥

ग्वालेर अलवर गज्जना, विक्रमरु बंधुर व-ज्जना । गूगैार नर वर गाहियै, शिव साहि गढ सराहियैं ॥ ९ ॥

मंडोवरा मैदानयं, गढ गागरोनि गुमानयं ।
दौलताबाद सुदेषयौ, पुहवी सु पूना पेषयौ ॥ १० ॥
हिंसारगढ़ हरणौरयं, सोवर्ण गिरि सझौरयं ।
गढ देव ईडर गौरवं, वैराट बंधू बौरवं ॥ ११ ॥
कहि कंगुरा कल्यानियं, ठिल्ला पहार सु ठानियं ।
सुनियै शिवाना सारका, महि मध्य मंडल मारका १२॥
तारागनं त्रिकुटा चलं, नाशक्य त्र्यंबक कुंडलं ।
यों कोट दुर्ग्ग अनेकयं, बाषानियें सु विवेकयं ॥ १३ ॥
इन चित्रकोट सु उप्पमं, इल दुर्ग्गकोन अनोपमं ।
इन और कोटहिं अंतरं, पति नृत्य जानि पटंतरं ॥१४॥
इन मंड आदि न आवही, पर्य्यन्त पार न पावही । इह देव अंसी अक्खियें, पढ़ि मांन बोल परक्खियें ॥ १५ ॥

दोहा ।

चित्रकोट चित्रांगदे, भोरी कुल महिपाल ।
गढ़ मंड्यौ अवलोकि गिरि, देवंसीदा ढाल ॥ १६ ॥
संगहि लिय सीसौदीयै, दुर्ग्ग एहे रिषि दान ।
बापा रावर बीरवर, बसुमति जास बखान ॥ १७ ॥
पाट अचल मेवाड़ पति, रघुबंसी राजान ।
बापा रावर बड़ बखत, थिरि चीतौर सुथान ॥१८॥
अहौ क्यौं रिषि राय तिहिं, तसु के जननी तात ।
गह्यौ तिनहिं किन भंति गढ़, बापा बड़ विख्यात॥१९॥

सो प्रबंध रचियै सरस, रंजन मन महरान ।
उत्तम नृप गुन ग्रंथते, कमला किनि कल्यान ॥२०॥

कवित्त ।

चित्रकोट गढ़ चारु, मंडि चित्रांगद मोरिय ।
रचू करत तहँ राज, ढाहि अरिजन ढंढोरिय ॥ तीन लष्य तोषार सहस त्रय मद भर सिंधुर । सहसु रत्थ भर शस्त्र प्रबल पायक अपरंपर ॥ घन सेन जानि पावस सु घन जय करि रण रिपु जग्गवै । अति तेज देश दश अट्ठ सों, भू मेवारहि भुग्गवै ॥२१॥

मेद पाट मालवौ सिंधु सोवीर सवा लख ।
सोरठ गुज्जर सकल कच्छ कांबोज गौड़ रुष ॥ बावन धर बैराट ढुंढि बागरि ढुंढारह । नरवर नागर चाल खग्ग छप्पन वैरारह ॥ देखिए देश ए अट्ठदश चित्रांगद मोरी सुचिर । मह चित्रकोट तिन मंडयौ थप्यौ नाम निज अवनि थिरि ॥ २२ ॥

दोहा ।

चित्रांगद तें सत्तमें, पाटें नृप चित्रंगि ।
राज करै चीतौरिधर, चल दल षग्ग निषंगि ॥२३॥

अथ बापा रावल उत्पत्ति । कवित ।

पच्छिम दिशा प्रसिद्ध देश सोरठ धर दीपत ।
नगर बल्लिका नाम्र जंग करि आसुर जीपत ॥ राजत श्रीरघुबंश पाट रघुनाथ परंपर । गृहादित्य नृप गहअ

धरा रक्षिपाल धम्म धुर ॥ हय गय सुयान पायक हसम अंते उर परिवार अति । नन नंदन तेहि नरिंद नैं गाढ़ी पूरब कर्म्म गति ॥ २४ ॥

सकल देव देवंत क्षितिय पूजंत दरस षट। द्वेत नवग्रह दान हथ्थि हय हेम हीर पट ॥ तीरथ ते वज तंत्र करत इक अंग जकद्रह। आरतिवंत अंतीव रचै नहि चित्त सुरद्रह ॥ सोवंत इक्क निशि सुष सयन पत्त सुपन पच्छिम पुहर। शशि भाल शीश गंगा सरित उद्धल वृष आसन सु हर ॥ २५ ॥

भनहि ईश सुनि भूप राज रघुवंशी राजन। सुत व्हैहैं तुम सकल सबल जसु बषत सु साजन ॥ परि तसु आनन पदम नयन निज तुम न निरक्खहु। लहियै जो कछु लेख रंच आरति जिन रक्खहु ॥ नारी सुनंद काके निलय राज रिद्धि तनु इत रहय। निज कृत बसत्थ चल्लैं नृपति काम दहन सम्मौ कहय ॥२६॥

दोहा।

निरखि सुपन जग्ग्यौ नृपति, ईश बचन उर धारि।
आन्यौ चित संतोष अति, आरति सब अपहारि २७॥
काहू सों ही सुपन कथ, नकही आप नरिंद।
दिन दिन धन घन दिद्धियें, आहर अति आनंद२८॥
मेद पाट महिमंडलें, नागद्रहापुर नाम।
सोलंषी संग्राम सी, धनवति सुता सुधाम ॥ २८ ॥

निरखि वल्हिका नाथ निज, दिय पुत्री वरदान ।
राजन बरि आये रमनि, सुन्दर सची समान ॥३०॥
सोलंषिनी सु लच्छिनी, राजन सरिस रमंत ।
अन्य वरस के अंतरे, गरभ र्यौ गुनवंत ॥ ३१ ॥
गरभ बालही पितृ गृह, आई अति उच्छाह ।
पेम मिली माता पिता, बन्धु कनिष्ट सु व्याह ३२॥
बंधव बरि आयौ सुबधु, रति सम सुन्दर रंग ।
धाम आपकै धनवती, चलन कियो चित चंग ॥३३॥
मात पिता बंधुनि मिली, यहै कीन अरदास ।
रहो सुबाई रंग रस, चतुरंगौ चौमास ॥ ३४ ॥
मात पिता बच मानिकैं, पावस बरजि पयान ।
रही तहां राजन रवनि, औसर आवनि जानि ॥३५॥

कवित्त ।

गृहादित्य नृप गरुअ भौम भारथ रिपु भंजन ।
काल राति किय काल गाढ़ गिरिवर गय गंजन ॥
हुअ हा हा रव हूक कहर नृप त्रिय सत किन्नौ ।
संसकार करि स्नानदान जल अंजलि दिन्नौ ॥ संथप्पि
सुता सुत रुद्र सिरि नव नरपति परधान नव । ऐसे
सुपुतृ विनु अच्छिद्दल बीयौ आई भुंजै विभव ३६॥
सुनिय बत्त संग्राम सोह परिवार समेतह ।
धसकि परी धनवती अवनि मुरझाइ अचेतह ॥ सखि-
यनि करी सचेत धवल उट्ठी धीरज धरि । सती संग

संगह्यौ पिता वरजंत बिविहि परि ॥ निज उअर फारि काढ्यौ गरत पावक पिंड पइट्ठयौ। धन धन्य कहै सुरं धनवती पति सम प्रान परट्ठयौ ॥ ३७ ॥

कामुकी बांताणं।

अट्ठ मासं सुयं नंषि आधानयं, परठियं सांइ सच्छें तिनें प्रानयं। अमर बानी बदे धन्य आवासयं, बरसए मेह ज्यौं पुष्प बरवासयं ॥ ३८ ॥

सगति जो कीजियै तेह केही सती। धन्य कहियैति के होइ ज्यों धनवती॥ आपणां उभय कुल जेण अजुवालयं। धाइ राषी घणु दूध धवरा वियं ॥ बांधए हच्छ हत्थेण सो बालयं। सुन्दराकार तनु गोरष कुमालयं ॥ ४० ॥

पंच धाएण सो आप पोसिद्यए। चित्त चाहंत ते दिंत तसु चिद्यए॥ मद्यरण म्हांण आभूषणौ मंडियं। सुभग सुचि अंशुकं अंग सोलंकियं ॥ ४१ ॥

चंद सिय पश्च बरजेम नित कल चढ। वियौ मासै जितौ एह दिवसें बढै ॥ सोम सम बयण जिम लच्छि संतानयं। बोलियै अधिक किं तास बाषाणयं ४२॥

नाम वायौ ठव्यौ वज्जि नीसानयं। दिष्षए हेम हय ईहकं दानयं ॥ निरषि नाना तणौ चित्त अति नेहयं। मोर मनि जिमि बसै सजल दल मोहयं ॥४३॥

एक दस बरस तिहिं अति क्रम्या अनुक्रमैं । साहसैं धीर वर बीर जोवन समैं ॥ बनहि क्रीड़ा तणौ विसन तिहिं नर वरू । पंच सय सच्छ बालेश संपर वरू ॥ ४४ ॥

एक दिन एक जोगिंद अवलोकियौ । सिद्ध हारीत गिरि कंदरा संठियौ ॥ थिर तिहां रुद्र इकलिंग नौ थानयं ॥ प्रणमिया उभय योगिंद प्राधानयं ॥४५॥

पुष्प फल करिय रिषिराय तब पूजियौ । मिठ्ठ बयणें कहै अघ धनी मोजियौ ॥ देव तुम दरसणौ दूरि नठ्ठौ दुषं । सकल संपत्ति मिलि अद्य सु हुवै सुखं ४६॥

सेव दो जांम लग तांम तिण साचवी । नयण वयणे मिल्यां प्रीति बांधी नवी ॥ चरण रिषि वर तणे अधिक रंज्यौ चितं । हट्ठ लग्गो सु योगिंद बापै हितं ॥ ४७ ॥

मंगि आदेश आयो तदा मंदिरै । सयन किद्धा निशा चित मुनि संभरै ॥ जो हुवे प्रात तो पास तस जाइये । षीर ने षंड घृत तास षवराइये ॥ ४८ ॥

प्रात हूवां पचावै परमान्नयं । मंडकं सरस घृत षंड मिष्टान्नयं ॥ ऊजलै अंवरै तेह आछादियं । करषि कोदंड कर शिलिमुषं संधियं ॥ ४९ ॥

क्रमि क्रमैं पत्त सो तच्छ गिरि कंदरा । बाघ बाराह निवसे तहां बंदरा ॥ पाय बंधन करी दिद्ध परसादयं । सिद्ध बर किद्ध आहार सुस्वादयं ॥ ५० ॥

छुधा परे सरस भोजन सदा आणए । युक्ति योगिंद्नी भक्ति भख जाणए ॥ मास षट बोलि या रीझियो सो मुनी । धन्य तूं बालका एम बोलै धुनी ॥ ५१ ॥

अब इमं गमन मन प्रात बड़ आवनां । सोंपि के रह्यतो पछ सिद्धावना ॥ पूरियो अंग तस अधिक उत्तक पणों । आव ए तहति कहि मंदिरै आपणों ५२॥

राति बोली हुई पुब्ब दिसि रत्तड़ी । बेगि आवै जितै भूप सू बट्टडी ॥ तितै हारीत रिषि गगन गति हल्लियो । बोल बापै तदा आइ इम बुल्लियौ ॥ ५३ ॥

अहो जोगिंद करि उद्धर्‌यो आपणौ । थिर थई नाथ जी रद्य सिरि थापणे ॥ रवनि सुनि देव मुनि अप्प ऊभौ रह्यो । किज्जिये भूप तुहि मंडि मुख यों कह्यो ॥ ५४ ॥

मंडियो मुख तिणै स्वमुख तंबोलयं । नंषियो हेत करि पीक निर्मोलयं ॥ देषि उच्छिष्ट निज वयण टाली दियं । लिहियं रिषि मुष तणो पाय झल्लै लियं ॥ ५५ ॥

कहय रिषि राम तें बाल कीद्धो किसौ । अमर हुइ देह नित एह हूं तो इसौ ॥ नेट तो पायथी राज जायै नहीं । किद्ध तू भूप में एह वाचा कही ॥ ५६ ॥

अप्पि बर एम योगिंद वर अतिक्रम्यो । राग धरि तिच्छ अडसठि फरसणं रम्यौ ॥ सदन संपत्त

बापो हुवां संभए । माल्ह तो हंस गति मोद मन मंभए ॥ ५७ ॥

सत्त दिन बोलियां नंतरे यह समैं । रंग रस वनह क्रीड़ा तणी वनि रमै ॥ चेत सुदि तीज नो दीह सौ चारुयं । सकल सुह बत्तिया करिय सिंगारुहं ॥५८॥

नगर नागद्रहा हूंत ते नीसरी । केलि करि वा चली बनहि हरषें करी ॥ गाव ए नवनवी भास करि गीतयं । रिष्भ ए मान कवि रसिक तिहि रीतयं॥५९॥

दोहा ।

जाति जाति निज भुंड जुत, बाला करत विनोद ।
रास देइ निज रंग मैं, पति वति सकल प्रमोद६०॥
अकस्मात तब सिंह इक, कोप कियें महकाय ।
उतरिसु हरि आकाश तैं, अबलनि मध्य सु आय ॥६१॥
बिफुर्‌यौ सो बहु वाउ ज्यौं, बबकि बिलूरैं बाल ।
कै भग्गी भय भीति कै, बनिता केक बिहाल ॥६२॥
सूर वीर देखे सकल, हल्लि कि नहि नह नाइ ।
सिंह मग्ग संगहिं रह्यौ, बाला अति बिललाय॥६३॥

कबित्त ।

सुनि बापा नृप सोर अबल गन मध्य सु आवहिं । चापर धनुष चढ़ाय सहज टंकार सुनावहिं ॥ उहि छिन सिंह अदिट्ठ होत सब बाला हरषिय । प्रवर पुरुष सु प्रधान नयन धरि नेहा निरषिय ॥ मनु

कामदेव अवतार मिनि कितनिक इक्क सुमंत करि ।
बरमाल घल्लि गर तव बर्‌यौ इक सत अत उत्तम
कुँवरि ॥ ६४ ॥

दोहा ।

पानि ग्रहन कीनौ नृपति, इक सो सुंदरि अत्त ।
तरु मंडप सहकार तन, मंजरि मोर सुमित्त ॥६५॥
सहज सिंगारत सुन्दरी, बिबिधि सहज बादित्त।
गीत सु सहजें गावही, ए ऐ अद्भुत चित्र ॥ ६६ ॥
पुत्री परनित सुन पिता, सकल तच्छ संपत्ति ।
कर छोड़ावनि हरष करि, बहु विधि आप्पिय बित्त
करी सुकरहा बहु कनक, हीरा मौक्तिक हार ।
पंच वर्ण जरवाफ पट, आए सधन अपार ॥ ६८ ॥
हय दस किन किन वीस हय, दीन दायजै दान ।
साकति स्वर्ण पालन सब, गिनत सहस त्रय गान ६९
दासी किन इक किन सु दुइ सब विधि जांन सुजान।
पुत्री प्रति दीनी पिता, सकल अधिक सनमान ७०॥

छन्द विराज ।

बरी सर्ब्ब बाला, रमा ज्यों रसाला ।
मनी सुत्ति माला, लही लाष लाला ॥ ७१ ॥
तुरंगा दुसाला, हयं हिंस वाला ।
सरूवं सिघाला, पुलैं ज्यों पँषाला ॥ ७२ ॥
सिंगारे सुपष्षाला, महामत्त वाला ।

हलंतेह ठाला, मनौ मेघमाला ॥ ७३ ॥
सची सी सहेली, पढें जे पहेली ।
करंती सुकेली, दिनेशं दुहेली ॥ ७४ ॥
सबैं लीन सथ्थें, अमानैं सु अथ्थें ।
महा द्विरद मथ्थे, चढ़े चाह पथ्थें ॥ ७५ ॥
घुरंती घमस्सें, निशानं निहस्सें ।
करी कुंभ कस्सें, जयं जै सु जस्सै ॥ ७६ ॥
भयो बिरुद भट्टा, घनें घाघरट्टा ।
थटे बाजि थट्टा, वहैं सेनु पट्टा ॥ ७७ ॥
पुरं सुप्रवेसं, निहारैं नरेशं ।
बहू बालबेशं, वनीता विशेषं ॥ ७८ ॥
सु संग्राम सीहं, अभंगं अबीहं ।
करें हर्ष कोडं, जगानंद जोडं ॥ ७९ ॥
नियं पुत्ति पुत्तं, सु लोकेस पुत्तं ।
दिए ग्राम दानं, सिसोदा सुथानं ॥ ८० ॥
वसे तच्छ वासं, उमंगे उल्हासं ।
रची राजधानी, शिवा सु प्रमानी ॥ ८१ ॥
प्रगट नाम पायौ, सिसौदा सुहायौ ।
सबर एक शाषा, भनें देव भाषा ॥ ८२ ॥
भलौ काम भोगी, स्ववामा सँयोगी ।
रमै रत्ति दीहा, जपै को सु जीहा ॥ ८३ ॥
किनें चित्र कोटें, सुजंपीव जोटें ।
वर व्याह वत्तं, चित्रंगी सु चित्तं ॥

उपन्नौ अयज्जं, कहे मंत्रि कज्जं ।
पठायौ सुपत्तं, दियं पुत्रि दत्तं ॥ ८४ ॥
क्रमें ब्याह किन्नौ, लछी लाह लीनौ ।
नियं पुत्रि नायं, समप्पै सु सायं ॥ ८५ ॥
हयं दो हजारं, सुवर्णो सिंगारं ।
दिए मत्त दंती, घरी आनि पंती ॥
दयौ अद्ध देश्रो, मिवारं महेश्रो ।
दई केई दासी, रची रूप रासी ॥ ८६ ॥
जरी पाट्ट जामा, समप्पैं सकामा ।
दयो कोटि हेमं, प्रगटि आनि पेमं ॥ ८७ ॥
सुथानें सँपत्ते, रमें रंग रत्ते ।
वनीता विनोदं, महा चित्त मोदं ॥ ८८ ॥
किनै काल वित्तै, वदी दूत वत्तें ।
चित्रंगी चढ़ाई, करैं कच्छ जाई ॥ ८९ ॥
चलौ चित्र कोटें, दला दुग्ग ओटें ।
रचौ अप्प राजा, सजौ बेगि साजा ॥ ९० ॥
सुने दूत सद्दं, निशानं सुनद्दं ।
भयौ मान भायौ, उमंगे यु आयौ ॥ ९१ ॥

दोहा ।

चित्रकोट आए सुचढ़ि, बापा नृप वर बीर ।
मोरी चित्रंगी मिले, साहस वंत सुधीर ॥ ९२ ॥
चित्रंगी तब ही चढ़े, बंब निशान बजाइ ।

बापा बीरहिं रावकें, चित्रकोट चित चाइ ॥ ९३ ॥
चिंतिय बापा बीर चित, नृप इनदे निज धीय ।
बंधन बंधे पेमकें, कीने अनुग स्वकीय ॥ ९४ ॥
हम हूं नृप निज थान हैं, इह नृप इनके थान ।
करें न हम पर किंकरी, यो न तजैं अभिमान ॥९५॥
रहय कवन उद्योत रवि, सिंह बहय नहिं बीर ।
इंद कवन आधीन हुइ, हम राजा रनधीर ॥ ९६ ॥
चित्रंगी मुक्किव चल्यौ, जेजे सुभट जुझार ।
अवनि गांव तिन दै अधिक, किए सु आज्ञाकार ॥९७॥
चित्रंगी कच्छहिं चलिय, पिट्ठि सु पुच्छिय पंच ।
बापा बीर महा बलिय, सज्यौ कोट लहि संच ॥९८॥
गोरा नारि सुखोरघन, शस्त्र भृत्य सु विचार ।
हय गय रथ पायक हसम, भरि अन धन भंडार ॥९९॥

कबित्त ।

बापा नृप बर बीर तीन निज दुर्ग्ग भलाइय । चित्रंगी चित चंड साथ दल सज्जि सबाइय ॥ चल्यौ कच्छ पर चूक धरनि धुरतारहिं दुज्जिय । चल कुल अति चरभरिय भग्ग अरि भूमि सु तज्जिय ॥ दीसंत मग्ग नन दिशि विदिश रवि मंडल छायौ सुरज । दिशि छंडिभग्गि, दिगपाल दस गद्यत गुहिर सु शद्दगज ॥ १०० ॥

दोहा ।

जुरयौ आइ चित्रंग नृप, काल कीट कंकाल ।
कच्छ विभच्छ उधंस किय, भरिय रोसभूपाल ॥१०१॥
परयौ पाइ कच्छाधिपति, दंड मानि रस ठानि ।
पुत्ति देइ हय गय प्रवर, जंग जोर वर जानि ॥१०२॥

कवित्त ।

कच्छ देश निज करिय जंग मोरी नृप जित्तिय । कूच कूच प्रति कूच पुहवि मेवारहि पत्तिय ॥ दुर्ग मुक्किनिय दूत कह्यौ पयसार सुकद्यह । कह्यौसो करि कैरव्व सवर सीसोदा सद्यह ॥ सुनि तप्पौ ताम मोरी ससुर बुल्लय एह असोचि वच । गढ छंडि आउ रन मंडि गुरु सब रंतन विधि एह सच ॥ १०३ ॥

निठुर ससुर बच सुनत तमकि मंगिय तोषारहि । सज्जि तुरिय पर वर सनाह शिर टोप सुधारहि ॥ बिहसि सकति कटि बंधि तोंन बहु सर तरवारिय । चंड चित्त कर चाप हय सु इक्कल खह कारिय ॥ इक सहस दंति मदझर अनड लाख पंच पायक्क लिय । चढि समुख चह्यो चित्रकोट तें बापा बीर महाबलिय ॥ १०४ ॥

दोहा ।

शस्त्रायन भरि इक सहस, घुरत निशानन घोष ।
कायर थर हरि कंपई, सूरन रन संतोष ॥ १०५ ॥

उत तैं मेरी दल अधिक, चित्रंगी चित्त चंड ।
आयो गढ़पति ऊपरे, मंडिय दुहु रन मंड ॥१०६॥

छंद दंडका ।

मिलिय बापा वीर मोरिय, कुरे दुहुं वर वीर झोरिय। सनन सद्द अवाज सोरिय, गगन गुंजत बहत गोरिय ॥ १०७ ॥

छुट्टि बाननि भांन छाइय, उमड़ि मनु घनघोर आइय। धींग धसमस करत धाइय, पेषि कायर नर पलाइय ॥ १०८ ॥

ठनकि गज घंटा सु ठननन, भनकि भेरि नफेरि भननन। षनकि षग्ग उनग्ग वननन, झनकि ज्यों झल्लरी झननन ॥ १०९ ॥

किलकि कर कट्टैं कटारिय, देषिये दीरघ दुधारिय। ढुंढि ढुंढि सुपिन्न ढारिय, वीर निज निज बल बकारिय ॥ ११० ॥

झाट झरमंडि वज्जि षग झट, घमतु घायल घाव घण घट। गिद्ध पीवत श्रोन घट घट, जिंद ढूंढत फिरत थिर जट ॥ १११ ॥

सूर झूझत सार सारह, झरत शीश सुरंग झारह। धुकत धर धर लगत धारह, मंडि मुख मुख मार मारह ॥ ११२ ॥

नृपत वीर कमंध नच्चिय, रोस रस रन रंग रच्चिय । सिंध सुर सहनाद सच्चिय, मांस रुधिर सु पंक मच्चिय ॥ ११३ ॥

विस्त आयुध होत लथ बथ, रबकि किन चकचूर किय रथ । भिरत भींच सुभार भारथ, प्रगटि मनु दुर्योध पारथ ॥ ११४ ॥

सँमुख सज्जिय सूर सूरह, प्रचलि श्रोन प्रवाह पूरह । भाक बज्जत होत भूरह, नयन रत्त सुवीर नूरह ॥ ११५ ॥

देत निज निज पति दुहाइय, समरि परमेसर सहाइय । घुरिय घाट त्रिघाट घाइय, भूत प्रेत पिशाच भाइय ॥ ११६ ॥

उड़िय रेनु सुढंकि अंबर । भमकि डोंरू नट्ट डंबर । नवत गायन देव तुंबर, सुरन मन रन जानि संबर ॥ ११७ ॥

समर हय गय फिरत सूनह, चरन पयदल होत चूनह । लहिय उयरें सांइ लोंनह, दपटि गजघट चित्त दूहन ॥ ११८ ॥

ढहिय सिंधुर परिय ढेरह, मानु अंजन वर्ण मेरह । घिरिय दुहु दल करिय घेरह, जोध इक बहु करत जेरह ॥ ११९ ॥

रुंड मुंड रुडंत रड़ बड़, लटकि कंधहि शीश लड़ बड़ । देत दल विचि बीर दड़ वड़, गगन गुंजत शद्द गड़ बड़ ॥ १२० ॥

झलकि सेन सुसार झल मल, हलकि कायर काय हल मल । कहर सोर सजोर कल कल, देषिए अनभंग दुहु दल ॥ १२१ ॥

झरत लोह सु छोह झड़ झड़, कटकि हड्ड सुजड्ड कड़ कड़ । दड़कि अरि सिर परत दड़ दड़, हसिय नारद वीर हड़ हड़ ॥ १२२ ॥

अंत पंतिय पय अलुझत, बियो अप्पन को न बूझत । झपटि लटि योधार झुझत, मार मचि तरफ-रिय सुझत ॥ १२३ ॥

वित्त लरत सु सत्त वासर, आहटे मनु अमर आसुर । भरिय रोस असोस भासुर, सद्द जय जय उच्चरिय सुर ॥ १२४ ॥

भगग मोरिय सेन भग्गिय, बीर बापा जयति बग्गिय । लोथि लोथि सु जेट लग्गिय, जंग इन समयो व जग्गिय ॥ १२५ ॥

योगिनी सुर जपत जय जय, गहियतें चित्रकोट हय गय । बीर बापा बलिय लहु वय, जंग प्रथमहि कीन निज जय ॥ १२६ ॥

देव देवि विमान दरसिय, व्योम हुंत सुकुसुम बरसिय । सजल सहज सुगंध सरसिय, चवत मांन सुजान चुरसिय ॥ १२७ ॥

दोहा ।

चित्रकोट गहि चित चुरस, बापा नृप बड़वार ।
मोरी कच्छहिं मुंचि वर, करि निज आज्ञाकार १२८
देश लिये निज अठु दस, मोरी आनहिं मेटि ।
बापा बीर अनंत बल, शत्रव सकल समेटि ॥१२९॥
आए नृप दुग्गहि अतुल, नोवति बज्जत नाद ।
मंडय को नृप महिय लहि, बापा नृप सम्बाद ॥१३०॥

कवित्त ।

जय पत्ते जुरि जंग, महामोरी दल मोरिय । बापा नृप बर बीर बषत बल रद्य बहोरिय ॥ करि सुराज चित्रकोट नाद नोबत्ति निसानह । हय गय पय-दल हसम गनक को गिनय सु ज्ञानह ॥ पेषंत सघन उल्लटि प्रजा, वनिता कलस बँधाइ बर । चित चूंप सिंगारिय सकल गृह तोरन मंडियं तुंग तर ॥ १३१ ॥

दोहा ।

तोरन मंडप तुंग तर, सोवन रतन सिंगार ।
मुकर पंति पट कूल मय, दीपत राज दुआर ॥१३२॥
राज महल संपत्त रसु, सोवन तुला सँचिट्ठ ।
जच्च सुमंडिय जयति को, बाघासनहिं बइट्ठ ॥१३३॥

इंद्र सभा की ऊपमा, थटि हय गय भट थट्ट।
बंदी जन बुल्लय बिरुद, भोर चारना भट्ट॥ १३४॥

कबित्त।

सत्तम दिन निशि समय प्रहर पच्छिलय प्रसिद्धह। सुपन पत्त श्री कार सोइ हारीत सु सिद्धह॥ अवनी पति प्रति अंखि वीर बापा सुनि बत्तह। तुमहि सु हम संतुट्ठ दीन चित्रकोट सु दत्तह॥ पय रद्य अचल मेवार पति बचन एह संदेह बिनु। अब रावर पद तुभ्क अप्पियहि सुत संतति सबहें सुदिन १३५

दोहा।

सिद्धि अप्पि रावर सुपद, अंगहि धरि निज अंस।
गय योगिंद सु गगन गति, पढ़ि भूपति सु प्रसंस१३६
जग्गौ बापा वीर जब, उदयो अरक अभंग।
राजन अति उत्साह रचि, रावर पद गहि रंग १३७

कवित्त।

रावर पद गहि रंग वीर बापा सु सुद्धि वर। बापोती सु बहोरि धरिय भानेज अन्य धर॥ पंच लक्ख हय पवर सहस दस मत्त सु सिंधर। पनर लक्ख पायक सु सत्त सय सुंदरि सुंदर॥ नव हत्थ देह सु प्रमांन निज भक्त सवा मन जास भाल। पल बावन टोडर इक्क पय बापा रावर अतुल बल॥ १३८॥

इति श्री मन्मान् कवि विरचिते राजविलास शास्त्रे राउल श्री बापाजी कस्योत्पत्तिः रावल पद स्थापना चित्रकोट राजस्थान करण नाम प्रथम विलास सम्पूर्णम्।

अथ श्री बापा राउल तो पट्टावली लिख्यते ।

छंद बिअक्षरी ।

बापा रावर पाट विराजय । रावल श्री षुम्मान सु राजय ॥ नगर तिनहि षमणोरनि पाइय । सिंध मालव पति समर हराइय ॥ १ ॥

रावर श्री कुबेर रयणायर । दान करन तप तेज दिवायर ॥ रावर त्रिपुर सीह बहु विक्रम । सत्यवंत हरिचंद भूप सम ॥ २ ॥

गोविँद रावर रनहिं थिर सुहर । गट्ट गुमान जानि सुर गिरवर ॥ श्री माहेंद्र नाम महरावर । विभव अनंत सत्य वसुधा वर ॥ ३ ॥

कीरति धवल धवल कीरति धर । सकुँत कुमार रावर जनु श्रीवर ॥ सारि वाहन रावर सक बंधिय । सिंह समान सकल धर सद्धिय ॥ ४ ॥

रावर श्री नर लीलर ढालह । पुहवी पति सु प्रजा प्रतिपालह ॥ अंब पसाउ सु जंग अभंगह । श्री नर ब्रह्म बषानि सु चंगह ॥ ५ ॥

अल्लू रावर राज नीति अति । इंद नरिंद एक जनु गति मति ॥ विरद अघाट साष उतपन्निय । महि मंडल नृप नृप करि मन्निय ॥ ६ ॥

शुद्ध जुडण रिपु मलन जसो भ्रम । धारम सिंघ राज स्त्री ध्रम ॥ जोग राज रावर जयवंतह । साहस सिंह समान सुमंतह ॥ ७ ॥

रावर गाव गिरु आजव गज्जय । तीखे अरि तनु तेह सु तज्जय ॥ रावर हंस मदन सम रूपह । भेटहि जसु पय बड बड भूपह ॥ ८ ॥

भट्टू रावर जास महा भट । कूलब उंच निज राखन कुल वट ॥ भटेबरा नृप तातें भनियहि । अति अवगाढ़ सुभट सिरि गिनियहि ॥ ९ ॥

बैर सिंघ रावल अतुली बल । देषिय सायर सरिस जास दल ॥ महण सीह रावर महिमागर । नूर जास नित २ नर नागर ॥ १० ॥

करमसीह उंच कृत कीनह । पदम सीह रावर सु प्रवीनह ॥ जैत सीह रावर जोधा रह । सुनियहि तेज सिंह सिरदारह ॥ ११ ॥

समर सीह रावर जस सारह । श्री पृथीराज रास सु बिचारह ॥ पृथा सोम चहुआन सु पुत्तिय । पानि ग्रहन संभरि पुर पत्तिय ॥ १२ ॥

दलिय युद्ध जयचंद पंग दल । समर सीह रावर दल संकुल ॥ संपत्ते दिल्लीस सहाइय । पृथीराज चहुआन सु पाइय ॥ १३ ॥

रावर चोंड हिंदु मग राखन । बसुधा नायक बीर बिचक्षन ॥ ग्ण दाता ग्याता षल घायक । सबल उथप्पन अबल सहायक ॥ १४ ॥

रतन सेन रावर बर रज्जिय । संवत दश पण तीसहिं सज्जिय। पदमनि सिंहल दीपहिं परनिय । हरि हर बंभ देव मन हरनिय ॥ १५ ॥

अलावदी आलम चढ़ि आइय । बरस एक रहि मुल बंधाइय ॥ बनिता देन असुर बहिकाइय । मर-दानै तब मारि मचाइय ॥ १६ ॥

भय मन्निय असपति तब भग्गिय । जय जय रतनसेन जस जग्गिय ॥ धनि जननी जिन उयरहिं धरियौ । इल अवतार रूप अवतरियौ ॥ १७ ॥

भूमि चूड रावर भट भारी । सज्जत सेन दहल धर सारी ॥ डुंगर सी रावर नन दुल्लय । हरषि समर संमुह ते हल्लय ॥ १८ ॥

रावर पुंजा रण रस रंगिय । निज कर करि अरि सेन निषंगिय ॥ श्री नरपुंज सुदान समप्पय । कवि वर दुख दारिद्रहिं कप्पय ॥ १९ ॥

प्रताप सीह रावर सु प्रतापह । छत्र धारि नृप शिर जसु छापह ॥ करन समान सुकरन कहावहिं । तिन समान नृप कोइ न आवहिं ॥ २० ॥

इत्यादिक रावर अवतारिय । जटा मुकट ईश्वर अनुहारिय ॥ राजथान चित्रकोट॰ सुरद्धय । गुरु गहिलौत शाष धुर गज्जय ॥ २१ ॥

सूर बीर दातार सु सीलप । लच्छी पति सम जसु जस लीलह ॥ मंगल कहत एह कवि मानह । बसुधा नायक सरस बषानह ॥ २२ ॥

कवित्त।

करन पुत्र दुम्र कहिय जिठु राहप त्रिभुवन जस।। माहव दुतिय महिंद बाघ रिपु करन अप्प बस ॥ राणा पद राहपहिं लीन करि उत्सव लक्खह । संवत तेरह शुद्ध पच दस बरस प्रतक्खह । थपि एकादश कुल देवि, थिर याग भाग बंधिय जगति ॥ दुहुं बेर बरस मंडे सु दुति, नौमी दिन पूजै नृपति ॥ २३ ॥

दोहा।

राना राहप रंग रस, इच्छित पूरन आस ।
रावर पद माहप रच्यौ, जूव राज करि जास ॥२४॥

छन्द निसानी।

राहप रान अजेय रन, जननी धनि जाया । कुतब उंच कीए जिनहिं, मह जज्ञ मंडाया ॥ अजा सिंह दुहुं घाट इकं, पानिय तिन प्याया । राणा पद लिय रंग सौं, कुल कलस चढ़ाया ॥ दिनकर रान दिनेश दुति, सक बंध सवाया । राना श्री नरपति रघू, विधि अप्प बनाया ॥ २५ ॥

जयवंता जस करन जग, करमेत कहाया । सज्जन जनहिं सुहावना, अपरहिं असुहाया ॥ २६ ॥

पुन्यपाल राना प्रगट, परमेश्वर पाया । मुख देखत रिधि सिधि मिली, मन सोच मिटाया ॥ पीथड राण अडोल पग पतिसाह बुलाया । अन मन बांए अतुल बल, भल दंड भराया ॥ २७ ॥

भूमिभोग पति भाणसी, राना सु रिझाया । दैहैं मुहँ मांग्या दरब, कुंदन सुकटाया ॥ भीमसरीसे भारथनि भल भीम भलाया । शत्रव कहूं न रहिं सकै सब जगत सुधाया ॥ २८ ॥

रान अजय सो बीर रस, षल जूह खिलाया । नारद तुंबर नच्चिया, गुण ग्रंधव गाया ॥ लषम सीह जस लोभिया, बसु घण बरसाया । राजस गुण जत रति रवन, अवतार उपाया ॥ २९ ॥

अरसी राण महा अनम, हल्लय न हलाया । सिंधूर तुरंग समप्पनां, दत नाम दिपाया ॥ शीश जास गंगा सलित सिव रूप सुहाया । रज्ज बहोरि हमीर रांण रघुबोल रहांया ॥ ३० ॥

खेलत राण सभाहि षग, अरि कट्ट उड़ाया । पर दुख कातर पुहवि पति, बड़ बिरुद बुलाया ॥ लाषण सो राणा सु लच्छि, तनु सोवन ताया । बंश बिभूषन दल बहुल, दिल दत्त दिढ़ाया ॥ ३१ ॥

मोकल राण उदार मन, निज सुजसनि पाया । बैरी पकरि बिभच्छना, जनु सिंह जगाया ॥ कुंभ राण

अषियात कलि, लष हेम लगाया । पनरा सै पचरो तरै, परगट परनाया ॥ ३२ ॥

कुंभल मेर अजीतगढ़, बहु लोक बसाया । महत रंभ आरंभ करि, महिदंद मिटाया ॥ चित्रकोट चित चूंप सौं, कमठान कराया । कुंभ सामि देवल कलस, धज दंड धराया ॥ ३३ ॥

राणा जाच्या रायमल, लष दान सु ल्याया । संपति जिहिं पाई सकल, भव दुःख भगाया ॥ राण संग्राम सुरोस रस, सजि कटक सवाया। नर वर दुर्ग निसान लिय, लछि नगर लुटाया ॥ ३४ ॥

उदय सिंघ राणा अनम, जग नाम जनाया । अलकापुर सम उदयपुर, बर नगर बसाया ॥ राण प्रताप सुरुद्र रस, मह जंग मचाया । अबदुल्ला सरिषा असुर, गज सहित गिराया ॥ ३५ ॥

सहस बहत्तरि दल सकल, षग मारि षिसाया । साहि अकब्बर संकयौ, ए बीर उपाया ॥ अमरा रांण सदा अमर, गुण गीतहि गाया । अरिजन भुज बल आहनिय, घन सुजस घुराया ॥ ३६ ॥

करण राण चढ़ती कला, संसार सुणाया । बसुधा नायक अति विभव गुरू बषत गिणाया ॥ जगतसिंघ राणा सुजय, जस करि जग छाया । आखत मान निधान ए, तननें मन भाया ॥ ३७ ॥

कवित्त ।

जगत सिंघ जोधार राण हिंदू मग राखन । अनम अगम अकलंक वेद व्याकरन विचक्षन ॥ एक लिंग अवतार आदि नर वर अतुलह बल । सुष देषत निधि मिलत जगत जंपत जस परिमल ॥ सुकृत सुमेर सीसोद्नृप साहसीक सुंदर सुमति । श्री करन रान पाटहि प्रवर पुन्यवंत मेवार पति ॥ ३८ ॥

छन्द हनूफाल ।

श्रीजगत सिंह सुरांन, विरुदैत बड़ बाषान ।
सु श्रिय सुरेस समांन, दाता सु हय गय जान ॥ ३९ ॥
ऐ हिंदु कुल आदीत, रन मह अभंग अजीत ।
रक्खन सु रवि कुल रीति, गावैं सु कवि जस गीत ४०॥
कालंकि जिन केदार, सब हिंदु सिर शृंगार ।
दुतिवंत जिन्ह दरबार, दिन दिनहिं दय दय कार ४१
पुहवी प्रजा प्रतिपाल, देष्यो सु दीन दयाल।
रिख रंग अंगर ढाल, भंट जानि भीत भुजाल ॥४२॥
वसुमती रक्खन वीर, नित नवल जिन्ह मुख नीर । संग्राम साहस धीर, सौवर्ण वर्ण सरीर ॥ ४३ ॥
नित सिंघ रूप निसंक, बलवंत कट्टन बंक ।
कट्टन सुरोर कलंक, मुख जानि पुर्ण मयंक ॥ ४४ ॥
छाजंत शीशहि छत्र, पटि कनक दंड पवित्र ।
चामर दुरंत सु चंग, तल करंन रिपु मद भंग ॥ ४५ ॥

चंचल तुरांन चढ़ंत, पर भूमि हलक पडंत ।
रिपु नारि बनहि रूरंत, गह तासु ग्रंथ गडंत ॥ ४६ ॥
कर झल्लि वर करवाल, परटंत पिशुन पयाल ।
रति रवन रूप रसाल, असुरेस चित नटसाल ॥ ४७ ॥
घनकंत जसु कर षग्ग, तुलि अनम नरपय लग्ग ।
चुवि छंडि के रिपु लग्ग, कर गहत धनु ज्यों कग्ग४८
सग सिंधु सरस समाव, अति सबल दल उमराव ।
दै तासु पर धर दाव, पहु करन लष पसाव ॥ ४९ ॥
षल झल्लि कीजत षून, हय गय सु हाटक हूंन ।
दल जानि पावस दून, चलतें सु गिरि हुइ चून ॥५०॥
अति दत्त चित्त उदार, इल करन पर उपगार ।
भरना सु पुन्य भँडार, कवि जपत जय जय कार५१॥
जिन मानधाता जाय, करि परम पावन काय ।
निजषंति तीरथ न्हाय, मन सत्त हेम मँगाय ॥ ५२ ॥
बरतुला अप्प बइट्ठ, जगतेश रान सु जिट्ठ ।
वसु कनक जल घर बुट्ठ, दातान जिन सभ दिट्ठ ५३॥
कुंदनहि कुंती कीन, दिल उचित दान सुदीन ।
नर नाथ नित्य नवीन, लहि लच्छि लाहा लीन ॥५४॥
श्री उदयपुर शृंगार, जगनाथ राय जुहार ।
प्रासाद वर प्राकार, जगतेश पुन्य अपार ॥ ५५ ॥
पर कनक विसवा बीस, ब्रहमंड रवि इकवीस ।
जगतेश रांणा जगीश, बहु बेर किय बगशीश ॥ ५६ ॥

अभिनवा वसुमति इंद, दुतिवंत जांनि दिनंद ।
कट्टन सु रिपु कुल कंद, श्री करण रांण सुनंद ॥५७॥
अवदात सुजस अपार, पभनंत नावहि पार ।
यह धर्म्म नृप अवतार, जगतेश जय जयकार ॥५८॥
भुवि दीप सायर भांन, सुर शैल चंद समान ।
महकंत जस कहि मांन, जगतेश रांन सुजान ॥५९॥

दोहा ।

तिय वसुमति भालहिं तिलक, जिगमग जोति जराउ ।
निपुन सुमति नर निर्म्मयो, बहु विधि वरन बनाउ ६०
राज थांन महारान को, सकल अवनि शृंगार ।
उदयापुर वर नगर इह, इंद्रलोक अनुहार ॥ ६१ ॥
प्रवर विकटपुर चहु परधि, पर्वत मय प्राकार ।
चहुघां तें पर चक्र को, सपनै नहि संचार ॥ ६२ ॥
को शीशा वलि सोह कर, प्रबल बुरज प्राकार ।
खंभ सु प्रबल कपाट युत, प्रौढ पौरि प्रतिहार ६३॥
बसति जहां बहु विधि बरन, द्वादश कोस विशाल ।
थान थान कमठान थिर, ऋतु षटही सुर साल ६४॥
चहु दिसि वाग सु वाटिका, जल सारनि कृषि जांन ।
सायर सम सरवर सजल, नदी सुकुंड निवान ६५॥
पल्ल पचित सम भूमि बहु, प्रबल ऊंच प्रासाद ।
गोख जारि सोवन कलस, वदत गगन संवाद ॥
राज लोक सुरलोक सम, पात्र सु पात्र नवीन ।

विविधि वृंद वारांगना, कंचुक पुरुष प्रवीन ॥
राज सभा सिंहासनहि, राजत श्री महरांन ।
आतपत्र चामर उभय, सोभ सुमेर समांन ॥६६॥
बैठे निज निज बैठिकहि, सुभट राय साधार ।
प्रोहित मंत्री सर प्रवर, हुकुमदार हुजदार ॥ ६७ ॥
दलपति गनपति दंडपति, गजपति हयपति सार ।
रथपति पयदलपति प्रगट, हैं जिन्ह अति
अधिकार ॥ ६८ ॥
कोशरु कोठागार पति, शाष शाष भर भूप ।
षट भाषा नव षंड के, नर जहँ नव नव रूप ॥६७॥
सश्रूषिक पार्श्वग गनक, लेषक लिषन अभूत ।
मर्द्दिक संधिक यष्टि धर, अनुग दुवारिग दूत॥७०॥
श्रीपति सेव सुसार्थपति, सौदागर संगर्व्व ।
मागध चारन भट्ट कवि, गायन गन गंधर्व्व ॥७१॥
वादित्रिक मौष्टिक बिबिध, पायक वैद्य प्रसिद्ध ।
नट बिट बटुक सुगस्ह नर, सभा संपूरि समृद्धि ॥७२॥
इति राज सभा वर्णनम् ।
सकल सबर कमठान युत, सहसक षंभ सरूप ।
गजसाला रथसाल गुरु, आयुधशाल अनूप ॥७३॥
हयसाला बहु बरन हय, कोश सुकोठा गार ।
बिबिधि बस्तु धन धांन के, भरे सु सुभर भंडार ७४॥

करभशाल उन्नत करभ, वृषभशाल वृष जानि ।
वेसरिशाल विशाल बहु, वेसरि वर्ग्ग बषानि ॥७५॥
हसी क्रौड़ चित्रक सरभ, सीह घोस कपि रिछ ।
संवर गेंडा रोझ मृग, स्वापद साल सु अच्छ ॥७६॥
पारावत बहु रंग के, मेंना मोर चकोर ।
सुक मराल सारस बतक, बिहगसाल बरजोर ॥७७॥
जल खंडो षलि जालि युत, भोजनसाल सुभंत ।
नोबतिशाल बिनोद नित, बहु बादित्र बजंत॥७८॥
मंगलीक दरबार सुष, देवालय दीपंत ।
धजा दंड सोवन कलस, व्योमहि बाद बदंत ॥७९॥
गृह गृह मंदिल धवल गृह, गृह २ प्रति जिन गेह ।
गृह गृह हरिहर गेह गुरू, गृह गृह अर्थ अछेह ८०॥
गृह गृह भोग विलास बहु, गृह गृह मंगल माल ।
गृह गृह हरष बधाउनें, गृह २ सर्व रसाल ॥ ८१ ॥
गृह २ नितपानिग्रहन गृह २ पुत्र प्रसूति ।
गृह २ न्याति सु न्योति यहि, गृह २ अगिनति भूति॥८२॥
जाति गोत बहु बंशयुत, बसत अठारह वर्ण ।
निय निय कर्म्म सबै निपुन, सधन सुभास सुवर्ण८३॥
असन बसन वसु शसु पशु, जान दान सनमांन ।
वाहन भोग सुरूप भल, भाषा भूषन गान ॥ ८४ ॥

मोती दांम ।

उदैपुर इन्द्रलोक अनुहार, वसै सुख वासहि

वर्ण अठार । गृह गृह मंदिर पौरि पगार, भरे धन कंचन रूप भँडार ॥८५॥

वसै तह राज कुलीस छतीस, हयद्दल गय दल पैदल हीस ॥ बहू बिधि न्याति सुविप्रनि वृंद । पढें चहुँ वेद पुरानरु छंद ॥ ८६ ॥

पुरोहित भट्टरू पाठक व्यास । तिवारिय चौबे दुबे सु प्रकास ॥ सुजोइसि पंडित केउ बभाइ । किते श्री पात सु ब्रह्म कहाइ ॥ ८७ ॥

कलाधर भूधर श्रीधर केइ । यशोधर जैधर लख लहेइ ॥ गजाधर गनधर गोप गुविंद । महीधर गिरधर बालमुकुंद ॥ ८८ ॥

बसे तह सेठ सुसारथ वाह । बड़े संघ नायक श्रावक साह ॥ धरै जिन शासन जेंन सुधर्म्म। श्रद्धालु कृपालु दयालु सु कर्म्म ॥ ८९ ॥

वसैं तह कायथ केउ हजार । लिषे बहु लेख अलेष लिखार ॥ सदा तिन एक सयान सुबुद्धि । रंगे रस रूपहि ऋद्धि समृद्धि ॥ ९० ॥

वसै विरुदाइय भट्ट निराव । लहै नृप द्वारहि लख पसाव ॥ सु चंडिय नंदन चारन चंग । रहै नृप संग महारस रंग ॥ ९१ ॥

कितेइ बसंत सुनार कसार । सुजी सुत्रधार भराए

रंगार। सीलावट जट्ट कुडंवि अहीर, कुलालरु मालिय भोइय भीर ॥ ८२ ॥

तमोलिय तेलिय वृन्द तल्यार, सिलीकर नापित तष्ष लषार। चितारे लुहारे सु कागदि केज, षरादि तरादि किते रंगरेज ॥८३॥

किते सब नीक मनीगर संघ, सुधोप कलीलि करानि प्रपंच। डमंकर भामर भुंजे कलार, बर्न कर भीलरु उड़किरार ॥८४॥

नटा विट मागध बटुक सनूर, सुमोचिय म्लेच्छ मतंग समूर। रैबारिय रठिय कठि चमार, पनीगर पायक षेट प्रचार ॥८५॥

सुगायन पण्यत्रि यानि प्रभृत्ति, विभौ युत पैांनि अनेक वसत्ति। नियंनिय वासन नार निनारि, प्रजा जनु अंबुधि नीर अपार ॥ ८६ ॥

गृहंगृह दंपति भोग संयोग, गृहंगृह निर्भय, नूर निरोग। गृहंगृह संपति लच्छि सुलच्छि, गृहंगृह दासिय दास सु अच्छि ॥८७॥

गृहंगृह मंगल गीत उछाह, गृहंगृह पुत्र सु पुत्रिन व्याह। गृहंगृह वादित्र पुत्र प्रसूति, गृहंगृह जानि अनंत प्रभूति ॥८८॥

बिराजहि केउ बजार प्रबन्ध, सचौंधित गंधित

गंध सुगंध । उपैं इक सूत अपार सुहट्ट, भरे बहु संपति थट्ट उपट्ट ॥९९॥

किते तहँ देवल देव सु थान, लगे गुरु थंभ महा कमठांन । धजादंड कुंदन कुंभ सुकंत, सिंहासन श्री जिन राज सुभंत ॥१००॥

किते तहँ आवतु है नर नारि, किते प्रभु पुंजहि अष्ट प्रकार । झनंकति झल्लरि घंट ठनंक, झलं मलि दीपक योति निभंक ॥१०१॥

कहू रघुबीर कहू करमेश, कहू हर सिद्धि कहूं करमेश । कहूं इक दंत गजानन आप, पुलैतिन पिखत पाप संताप ॥१०२॥

कितेइ उपाश्रय चोकिय बंध, चंद्रोपक मुत्तिय पाट प्रबंध । उपैतिन मध्य महा मुनिराय, सुसंकुल संघहि सेवित पाइ ॥ १०३ ॥

बदै बहु बेद सुधर्म्म बखान, सिखावहि सुवृत श्री गुरुग्यान । किती ध्रमसाल नेसाल पोसाल, पढें तहँ उत्तम बाल गोपाल ॥ १०४ ॥

कितें तह जोहरि जोंहर बाल, सुमानिक मुत्तिय लाल प्रबाल । पना पुषराजरु नीलक पच्च, मंडै नग हीर जिगंमग जच्च ॥ १०५ ॥

कहूं कहूं हट्ट परे टकसाल, सु गारहि सोवन

रूठ सु झाल । सबै बर संचय तोलि तुलानि, जितें तित चित्र अनोपम जांनि ॥ १०६ ॥

कितेइ सरापनि हट्ट सुभाषि, दिपंत दिनार रूपैयन राशि । सु थैलिय अग्ग धरै बदरांनि, सुछं-दत भेदत लेत पिछानि ॥ १०७ ॥

किते तहँ कुंदन रूप सुनार, सुगारत यंत्रनि-कट्टत तार । गढें बहु भूषन भंति बनाउ, जिगंमिग हीर जरंत जराउ ॥ १०८ ॥

किते बहु मौलिक्क वस्त्र बजाज, मंडे जर बाफ मुखंमल साज ॥ मसद्यर नारीय कुंजर मिश्रु, सुभैसी कला तदु मास सहश्रु ॥ १०९ ॥

तनो सुख सूफ पटोर दर्याइ, षीरोदक चैंनी पितांबर ल्हाइ । मनो सुख पांमरी साहिवी पाठ, हीरा गर सैंनिय हीर सगाढ़ ॥ ११० ॥

भरूच्छिय भैरव सारू सभार, सुसी मह मुंदी सु सिंद लिसार । झुनांदु करी श्री साय अटांन, सेला पंचतोरिय षासे सुजांन ॥ १११ ॥

मलंमल साहि चौतार दुतार, उपै इकतार सु धौत अपार । सु सारिय चौरि से रंग रंगील, दिषां-वहि आद्य दलाल असील ॥ ११२ ॥

कितेइ कंठारिय मंडि कठार, प्रधांन क्रयांण अनंत प्रकार । सु श्री फरू एलचि लोंग सुपारि, सचे घन हिंगरू सार सुधारि ॥ ११३ ॥

मृगमद केसरि और कपूर, कालागरु चंदन कुंकु सिंदूर । रसंचिस गंध कस हरतार, हरीत्रि गरु त्रिफलानि सभार ॥ ११४ ॥

सु षारिक दाष मषानै बदाम, घनै पिसता अष-रोट सु नांम । चिरोंजिय सक्कर पिंड षजूरि, सिता बहु भांति सु संचय भूरि ॥ ११५ ॥

सु मस्तकि लीलि मजीठ अफीम, यवांनी पंच जायफरु सीम । ठटे बहु ठट्ट सु गंठिन ठाइ, किते इक आनन नाउ कहाइ ॥ ११६ ॥

कितेकन हट्टिय हट्ट कनिंक, बहू बिधि तंदुल गोंहु चनंक । मसूररु मुंगरु मोठ सु माष, घनै जव झारिरु दारि सभाष ॥ ११७ ॥

घनै घृत तैलरु ईष अलेष, सबै रस हींग तिजारे विशेष । सुवेचहि सच्च तराजुनि तोल, सबैं मुख बोलत अमृत बोल ॥ ११८ ॥

किते इकदोइ निहट्ट इकट्ठ, मंडै बहु भांति मिठाइय मिट्ठ । जलेबिय घेउर सुत्तयचूर, चिरौंजिय कोहलापाक सँपूर ॥ ११९ ॥

सु अमृति मोदक लाषण साहि, गिंदौरनि पैरनि गंज सु चाहि । पतासे हे समि षंड पंगेरि, तिनं-गनि केसरिपाक सु हेरि ॥ १२० ॥

साबूनिय रेवरि माठिय सेठ, फबंतिय फैंननि लग्गत ओठ । तपै घृत सौरभ मध्य कटाह, करैं षंड षासनि वास सराह ॥ १२१ ॥

किते इत मोरनि हट्ट अमांन, प्रबेचहिं पाकै अडागर पान । गठे बहु बीरिय बीटक बुद्ध, सुपारिय क्वाथरु चूरन शुद्ध ॥ १२२ ॥

कितै तह गंध सुगंधिय तेल, जुही [करनी मुगरेल पंचेल । सुकेतकि केवरा कुंद रिझाइ, गुलाब सुमालति गंध सुहाइ ॥ १२३ ॥

घनै अतरादिक सेंधे जनादि, कुमंकुमा नीर किए कुसुमादि । सु केसरि चंदन चोवनि अग्ग, महं महि थान बजार सुमग्ग ॥ १२४ ॥

किती तहँ मालनि फूलनि माल, गुहैं कर चौसर झाक झमाल । सु कंचुकि गिंदुक कंकन भंति, विलोकहि वांक करैं मन षंति ॥ १२५ ॥

किते तहं गुंड गरीनि के गंज, सिंघारे अनार सियाफल संज । जंभीरिय सेव सदाफल जानि, पके बहु बेर हिमंत बषानि ॥ १२६ ॥

किते ऋतु ग्रीषम राइनि आम, केरा बहतूतरु दाष सकाम । पके षरबूजे सु अमृत षान, मढै घन मेवा कहैं कत मांन ॥ १२७ ॥

मंडै ऋतु पावस पावस जात, घनै सरदा सर-
दादि सुहात । ऋतू ऋतुवंत रसाल विवेक, मंडे तर-
कारिय भांति अनेक ।। १२८ ।।

किते पटवानि के हट्ट प्रधांन, गंठैं बहु भूषन
पाट विन्नान । किते करि दंत चढ़ाइ षरादि,
उतारहिं नूटक चंग प्रसाद ॥ १२९ ।।

किते तहं बौहरे आसुर वृंद, करैं बहु वस्त्र
व्यापार समुंद । कराहिय कंटक लोह कुठार, सचैं
गुजरातिय कग्गर तार ॥ १३० ।।

लसें कोटवालि सु चौतरे उंच, बैठे कोटवाल
करैं षल षंच । निवेरहिं सत्य असत्य सु न्याउ, बहू
चर वृंदनि सेवत पाउ ।। १३१ ।।

कहूं सु जगातिय लेत जगाति, रहैं रखवारि
किते दिन राति । गहैं कर षौंचिय इंच सु दांन
दियावहि श्री महारानु सु आंन ।। १३२ ।।

सुजी भरभुंजे कंसार ठंठार, धरें सिकली गर
सस्त्र सुधारि । किते रंगरेज रगैं बहु रंग, सु चूंनरि
पाग कसुंभिय रंग ।। १३३ ।।

किते इक मोचिय बाजि पलांन, रचैं मूरवार
सु पाहनि बान । जिती जग जाति तिते तिन कर्म्म,
सबैं सुष लोक बढ़ैं धन धर्म्म ॥ १३४ ॥

किते मन हट्टिय कंगहि काच, बहू विधि मुंदरी हार सु वाच । पंना नग मुत्तिय लाल प्रवाल, करी रद कुंपिय विंदुलि भाल ।। १३५ ।।

किते षट दर्शन् आश्रम श्रैंन, सा लाजल वेग समेत सचैंन । लहैं बहु दांनरू मांन भुगत्ति, सबै जग सेवत योग युगत्ति ।। १३६ ।।

कहूं कठियार क्रीणंत कबार, भरे केउ मोहन इंधन भार । अलेषहि लादे पशूनि सुचार, करैं क्रय घासिय घास अपार ।। १३७ ।।

कहूं नट नच्चत जूझत मल्ल, कहूं कहुं पिक्खन ष्याल नवल्ल । कहूं बर पंडित बोलत बाद, कहूं निपजंत नए सु प्रसाद ।। १३८ ।।

कहूं तिय सोहव गावति गीत, बजैं डफ ढोल मृदंग पुनीत । कहूं नृप दासि बडारनि झुंड, सजै तनु सार सिंगार सु मंड ।। १३९ ।।

कितेइ सौदागर अश्व सिंगारि, दिषांउन आंनहि राज दुआरि । बहू रंग चंचल वेग विग्यान, ततथेइ थेइ सु नच्चत तांन ।। १४० ।।

किते उमराव हयग्गय सेन, किते बहु सेठ साहस चैंन । किते पशु वृंद किते. नर नारि, मचैं बहु भीर बजार मझार ।। १४१ ।।

दोहा ।

धान-मढी लोनह-मढी, रुई-मढी सुभ संज ।
अनछादित सुस्थित अमित, गिरिवर सम बहु गंज१४२
बंधि गंठि बहु भंतिकन, ढोवत किते हमाल ।
के वारदि केई सकट, सब दिन रहत सु काल ॥१४३॥
सुंदर तिय केऊ सहस, शीश सुघट पनिहारि ।
कोकिल ज्यों कलरव करहिं, भरहि आनि वर वारि१४४
किते पषालिय महिष वृष, भरे मसक के नीर ।
हय गय नर तिय पन घटहिं, सब दिन रहत सभीर१४५
मेद पाट जन पद सु मधि, सहर उदय पुर साज ।
महारांन करनेश सुव, जगत सिंह युवराज ॥१४६॥
रानि जनादे रूप रति, सत सीता सु विचारि ।
राजसिंह राना रतन, जाए जिन जय कार ॥१४७॥

कवित्त ।

संबत सोरह सरस बरस छह असिय बखानह ।
असि अमृत ऋतु सरद, धरा निप्यनिय सुधानह ॥
मंगल कातिक मास पढ़म पष वीय पवित्तह । बल-
वंतो बुध वार निरषि भरनी सुनषत्तह ॥ निसि नाथ
उदित गय पहर निशि मेष लगन मन्यों सु मन ।
जगतेश रान घर सुत जनम राजसिंह राना रतन १४८
विकसत हरि हर ब्रह्म सूर ससि अधिक सुहाइय ।
इंद ताम उच्छाह सकल सुर हरष सवाइय ॥ गावहिं

अपछरि गीत व्योम दुंदुही सु बज्जय । खल मंदिर घर हरिय धमकि आसुरि धर धुज्जिय । गिरि परिय ताम तुरकनि गरभ यवन करत केऊ यतन । जगतेश रान घर सुत जनम राजसिंह राना रतन ॥१४८॥

जगतेश रांन घर सुत जनंम । धर हरिय असुर धर तवहि धम । गिरि परिय ढरिय यवनेश गेह । खल नगर शीश बरसंत षेह ॥ १५० ॥

अति इंद्रलोक मंड्यो उछाह, सुर कहत सद्द जय जय सराह । गावंत मधुर अच्छरि सु गांन वज्जंत देव दुदुंभि विमान ॥१५१ ॥

दीनी सु बधाई दासी दोरि । गय गमनि हसित मुषि जानि गोरि । यहु सुनत ताहि कीने पशाव । झिगमिगत अंग भूषन जराव ॥ १५२ ॥

बर विविधि घोष नौवति सु बज्जि, गगनहि गँभीर प्रति सद्द गज्जि । गावंत नारि सोहव सुगीत, पटकूल पहिर भूषन सुपीत ॥ १५३ ॥

वीती सु निसा प्रगट्यो विहान, झलहलत तेज उग्यो जु भान । रस रंग चित्त जगतेश रान, दीन्हें अनेक हय गय सु दान ॥ १५४ ॥

रुपि जन्म गेह रंभा रसल, बहु लंब झुंब पत्रहि विशाल । बंधनह मुक्कि तव बंदिवांन, हरखे सु लोक सब हिंदुथान ॥ १५५ ॥

बंदननिमाल घर घरहि वार, सब सहर हट्ट पट्टन सिंगार । तोरन सु बंधि प्रति द्वार तुंग, रवि मंडियान देषंत रंग ॥ १५६ ॥

वसुपाल वेगि जोइषि बुलाय, आसीस विप्र दीनी सु आय । रवि रूप चिरं जगतेश रांन, थिर करहु रद्य पहु हिंदुयान ॥ १५७ ॥

दीनो समान बैठक्क दीन, पढ़ि लिषत जन्म-पत्री प्रवीन । मंड्यो सुनाम धुर लगन मेष, वहु वीर्य चित्त कारक विशेष ॥ १५८ ॥

वपु भुवन लगन अज शशि बइट्ठ, बहु ऋद्धि वृद्धि कारक बलिट्ठ । दुतिवंत सहज सुंदर सुदेह, नर नारि निरषि दृग धरत नेह ॥ १५९ ॥

गिनि मिथुन लगन वर सहज गेह, अति उच्च राहु लच्छी अछेह । मन हरष नित्य मंगल महंत, बल चित्तकार पंडित वदंत ॥ १६० ॥

अरि भवन लगन कन्या उमंग, सविता बइट्ठ बर बुद्ध संग । भाषे सुजांन रिपु करन भंग, अति तेज वंत जंगहि अभंग ॥ १६१ ॥

कहियै सु लगन कुल गृह कलित्र, प्रगटे सु तहां भृगु शनि पवित्र । भामिनी भूरि संपजै भोग, संपदा शुक्र निज गृह संयोग ॥ १६२ ॥

कृत धर्म भवन धन लगन केत, दिल शुद्ध होइ इह दान देत । भल मकर लगन गुरु भवन भाग, भूपाल एह निश्चै सभाग ॥ १९३ ॥

बर एह जन्मपत्री विचार, कहियै सु नवग्रह सुख कार । रचि जन्म नाम तह मेष राशि, पुक्कारि योनि नर गन प्रकाशि ॥ १९४ ॥

नर नाथ चिरंजी उम सुनंद, दुतिवंत देह अभिनव दिनंद । इन आउ दीर्घ ए हम असीस, जगदीस सकल पूरहु जगीश ॥ १९५ ॥

सुन बिप्र बचन मन भयो सुख, दीनौ सुद्रव्य नट्ठौ यु दुख । गुरू मान देइ मुक्के सुगेह, उच्छाह अन्य कीने अछेह ॥ १९६ ॥

बर पत्त जाम तीजौ बिहांन, भनि मंत्र दिखाए सोमभांन । जन्म ते रयनि छट्ठी जगाय, श्री फल तमोर दीने सुभाइ ॥ १९७ ॥

बहु करत क्रोड दस दिवस.वित्त, वकसंत हेम हय गय सुवित्त । सूतक निवारि किय जननि स्नान, सुत निरषि २ हरषत सुजान ॥ १९८ ॥

अनुक्रमें दिवस द्वादशम आइ, महाराणा सकल परिजन मिलाइ । जेउन सु चितुबंछित जिमाँइ, पहिराय बसन भूषण बढ़ाइ ॥ १९९ ॥

बोले सुराण तिन अम्म वत्त, पत्ता सु एहं हम पटम पुत्त। श्री राज कुंअार सु नाम संच, पभनहु सुनु महिं मिलि मांन पंच ॥ १७० ॥

कवित्त।

राज राज रखन सु राज, रिपु राजद्रवन रिन। राज रूप रति रवन राज द्रसन सुरसाइन ॥ राज कनक तनु रंग राज सुर पति चित रंजन। राज नाउ युग रघूराज कहिये रिपु भंजन ॥ अवतार लयो मेटन असुर शीसोदा त्रिहु जग सुजस। जगतेश रान नद नज्जयो राजसिंह बर बीर रस ॥ १७१ ॥

छन्द मोती दाम।

कहे तब नाम सुराज कुंवार, प्रमोदित चित्त सबै परिवार। दिए वर विप्रनि कंचनदत्त, पहुं जगतेश महो सुखपत्त ॥ १७२ ॥

सिंगारिय सिंधुर अश्वसनूर, सु त्रंबल बद्यत नौवति तूर। हलाल संजोति सु गीति सहर्ष, पुजी जल देविय उज्जल पख ॥ १७३

दिनं दिन बाढत सुन्दर देह, निशापति सेत पुखे जनु नेह। बियो नर मास प्रमान बधंत, तिते दिन एकहि मष्भ तुलंत ॥ १७४ ॥

पलं पल प्यावत मा पय पान, बधै जिन कंति महा बलवान। धराधिप रखिय पंच सुधाइ, करावहिं मज्जन न्हाइ सुकाइ ॥ १७५ ॥

अलंकृत कुंदन अंग उपंग, उमंगहि रखत धाय उछंग। झलंमल तेज जरक्कस झूल, फबे तिन ऊपर बूंटिय फूल ॥ १७६ ॥

खिलावहि मुक्कि सु खेलन अग्ग, गहै युग हक्कि सु डोरिय लग्ग। लिलाटहि केसर आड अनूप, रमै रस रंगहि पिखन रूप ॥ १७७ ॥

हिंदोलत माइ सुवर्ण हिंदोल, लखैं जनु सारंग लोचनलोल। सु गावहि संहुल राउर गान, सदा सुख पेखत सुख बिहान ॥ १७८ ॥

किलक्कत माइ निहारि कुंआर, हियै बहि हर्ष दुहू घन प्यार। हसंत सु आनन अंबुज अप्प, सदा सु प्रसाद विषाद बिलेप ॥ १७९ ॥

करे महाराणा सु नंदन कोड, हलै किन ओर नरिंद हिडोड। तुला प्रति मासहि मुत्तिन तोल, उमेदहि देत सुदान अमोल ॥ १८० ॥

बिनोदहि वत्सर एक व्यतीत, पयंबर चाल चले सु पुनीत। चढ़ैं कबहूं हय चंचल चित्त, दुहूं दिशि हत्थ समाहत दुत्त ॥ १८१ ॥

सुकेलि चढ़ै कबहूं करिकुंभ, उदै युत पिखत रूप अचंभ। सुखासन बैठत अप्प सु साज, रघू जम रांण सु नंदन राज ॥ १८२ ॥

दिन दिन आवहि राज दिवान, सबै नृप वर्ग करै सनमान। अतिद्युति अंग सु पुन्य अंकूर, सभा मधि उग्गिय जांनि कि सूर ॥ १८३ ॥

अनुक्रम बर्ष द्वतीय सुआइ, सबै नर नारि सुनंत सहाइ। बोले तब राज कुंआर सु बोल, सुधा रस सक्कर के सम तोल ॥ १८४ ॥

तनू सुख पत्त सु वर्ष तृतीय, प्रमोदित भोजन भुंजत प्रीय। मया करि अप्प जिववति माइ, अपूरब चीरहि वाउ उडाइ ॥ १८५ ॥

रच्यो बर आसन आउनि रूप, संथप्पिय कुंदन थार सरूप। कमोदिय तंदुल जानि कपूर, परोसिय घीउ सु सक्कर पूर ॥ १८६ ॥

सुभाउत तीउन भूरि संधान, प्रसंसिय ऊपर तें पय पान। अघाइ चलू भरि वारि अमोल, तईवर तांमल बंग तमोल ॥ १८७ ॥

चतुर्थ सु पंचम षष्टम चार, अतीत संवत्सर यौं अविकार। संपत्तिय वर्ष सु सत्तम सार, करैं वर केलि सु राज कुमार॥ १८८ ॥

प्रधान सु बंधहि लीलक पाघ, अमोलिक अंशुक जामैं आघ॥ विराजत अरकस के कटिबंध, सुकंठहि चौसर फूल सुगंध ॥ १८९ ॥

प्रधान सुधोत पटोरे सुहाइ । जिगमिग मो जरि योति जराइ ॥ सु सोभित कंचन हीर सिंगार, कला-कर रूप कि देव कुमार ॥ १८० ॥

बषानिय या विधि अष्टम वर्ष, हूदै निज आठोहि जांम सु हर्ष । लरावहि मल्ल महारस सुद्ध, करी मद मत्त भरे बर क्रुद्ध ॥ १८१ ॥

नवं नव नाटिक गीत सुनित्त, दिजैं दशमैं बहु वंदिन दत्त। एकादश वर्षाहि अंग अनंग रमै कबि मांन सदा रस रंग ॥ १८२ ॥

इति श्रीमन्मान कवि विरचिते श्री राजबिलास शास्त्रे द्वितीयो विलासः ॥ २ ॥

दोहा ।

पानि ग्रहन बुंदी प्रथम, कीनो राज कुंआर ।
कवि वर चित्त प्रमोद करि, अरकैं सो अधिकार ॥१॥

कवित्त ।

हाडा नृप अति हठी हसम जित्तन रखन हठ । सबर राव छत्रसाल मारि सब शत्रु किए मठ ॥ राज थांन रमनीक बिकट बुंदी गढ़ बिलसत । विविधि वस्त्र बाजार सकल श्री युत जन सोभित ॥ बहु बाग वापि सर जल बहुल गुरू उतंग जिन विष्णु गृह। कबि अप्प कहै ऊपम किती अलकापुर सम सोभ इह ॥२॥

दोहा।

कन्या दो तिन भूप कै, सुंदर तनु सु कमाल।
वर प्रापति अवलोकि वर, मंत्रि बोलि महिपाल ३॥
कहै सुमंत्री मंत कहि, वर प्रापति भइ बाल।
खबर खगप्पन अटक रहु, वर घर रिद्धि विशाल॥४॥
खगपन कीनौ खबर सौं, वेगि होइ वरदाइ।
समर सीह रावर सजे, प्रथु दिल्लीश सहाइ॥ ५॥
तिन कारन हो मंत्री तुम, खगपन खबर संभारि।
कन्या दीजै हरषि करि, सुजस लहै संसारि॥ ६॥

छंद भुजंगी।

सुनौ साइ मंत्री कहै मंत सच्चं, इलानाह जोई जिनं वंस उच्चं। धुअं जास राजं धरै क्षत्रि धर्म्मं, सवै हिंदु अंगार सारं सु शर्म्मं॥ ७॥

उथप्पै दलं बद्दलं आसुरानं, पनं पावनं नीति थप्पै पुरानं। अभंगं अभीतं उतंगं अजेजं, असंकं सु कंकं अरीणाम हेजं॥ ८॥

अनेकं अभेदं अनोपं अठिल्लं, अरोगं सु भोगं अरीणाम पिल्लं। अनेकं बलं बुद्धि विग्यान अंगं, जयं जैत हत्थं महा जोध जंगं॥ ९॥

सरं सद्दबेधी वरं सूर वीरं, धकै धींग धुक्कै अरी ठहै अधीरं। करे के विकालं कृपानं करालं, पठावै पिशूनं जनं जेपयालं॥ प्रभा कोटि रूपं प्रचडं

प्रतापं, दमै दैत्य देहं सहै कौन दापं। हठालं हियालं गहैं आन हद्दं, सुवर्णाद्रि तुल्लं अतुल्लं सु सद्दं ॥१०॥

हलक्कै सुहेरे हरावै हमीरं, उडावै अरिं पुंभिका ज्यौं समीरं। बहू आयुधं युद्ध सन्नद्ध बद्धौ, बली कौन जा मुख मंडै विरुद्धौ ॥ ११ ॥

बसे गेह जाकै महालच्छि वासं, बलं चातुरंगं सु चंगं विलासं। धनी हिंदुआनं सदा नीति धारै, महामाइ महिषेशज्यौं मीर मारै ॥ १२ ॥

जसं राजसं तामसं जासि जोरै, रसा कौंन राजा रनं ताहि रोरे। षलं षग्ग मग्गैं करै षंड षंडं, अनत्यान नत्थै सु दंडै अदंडं ॥ १३ ॥

सदा सान कौभं हयं दंति दोत्तं, सदा जा सुरेशं सराहै सु सत्तं। बदं एक जीहा गुनं के बषाना, रजै आज जग मन्य जगतेश राना ॥ १४ ॥

प्रभू मोहि जो सच्चि कर मंत पूछै, इला ईश महराण जगतेश अच्छै। चही विश्व मैं और अवनीश ऐसै, तुभ्कै मन्न मन्नैं महीपाल तैसैं ॥ १५ ॥

यही हिंदुनाथं यही हिंदु ईशं, यही हिंदु पालं महंतं महेशं। यही हिंदु आधार हिंदूनि आनं, प्रजा पालकं पाल गो विप्र प्रानं ॥ १६ ॥

नियं वंस अवतंश तसु पाट नंदं, दुतिं दीपए देह मानों दिनंदं। तिनं अंग वर लछिनं दोइ तीसं, अषे कोटि वर्षं प्रजा दै असीसं ॥ १७ ॥

नरा रत्न श्री राज कूंआर नामं, धराधीश वस्त्री कला कोटि धामं। बहू धीर गंभीर दातार वित्तं, भन्यो जास अवतार अवतार भुत्तं ॥ १८ ॥

एवं गारुहं पिखि वेरी प्रकंपै, चमू जोर वर आसुरी सीम चंपै। मनो म्लेछ ईषं त्रिनं तूल मातं, गुरु नेयन हेमं समं गोर गातं ॥ १९ ॥

मही तें जिने षेदि कट्टे मेवासी, वसें वानरं ज्यों दरी मध्य वासी। हरै जास भै काननं म्लेछ रामा, ससी आननी नेंन सारंग श्यामा ॥ २० ॥

बियौ नाहि एसौ वरं वाल कज्जं, शिवं सुंदरं गंसरूवं स कद्यं। सुधर्म्मा सु कर्म्मा सु संतं सुहाई, जरें जुद्ध भारी जिनैं जैति पाई ॥ २१ ॥

वसुद्धाधिपं वीर आजान बाहू, किये कोटि जा होड चल्लै न काहू। धुवं विरुद एराज कूंआर धारै, अजेजा उथप्पै सु पखा उधारै ॥ २२ ॥

कवित्त।

कहिये राज कुंआर सार अरि उर संचारन। सबर स्वकुल सिंगार अवनि शिर भार उतारन॥ अति दत्त चित्त उदार मदन मूरति मन मोहन। गोरीसं गज गृहन रोर रिन घन रिपु रोहन॥ वर एह वाल कज्जै सु वर सकल अवनि नृप कुल शिरह। किज्जै सय है मंत्री कह्यौ इन सो नहिं को अवर वर ॥२३॥

दोहा ।

सत्य वचन अवनीश सुनि, मंत्रि सु मंत्री मंत ।
समझि रांन जगतेश सुअ, कन्या योगहि कंत ॥२४॥
निश्चै ईह अखै नृपति, कुलमनि राजकुंआर ।
हमहू मन याही सुमति, सगपन यह अीकार ॥२५॥
आगै हू इन अप्पनैं, सगपन सरस संबंध ।
ए आहुट्ठ अनन्त बल, बंधन मेळहि बंध ॥ २६ ॥
रूपवती दुति जानि रति, गुरु पुत्री हम गेह ।
राज कुंआरहिं रीझिकैं, सा हम दई सनेह ॥२७॥
यों कहि सद्दे अवनि पति, जे वर योतिस ज्ञान ।
लिखे सु पानि गृहन लगन, कारन कोरि कल्यान २८॥
लिखसु तबहि नृप लिक्खैं, योग्य रांन जगतेश ।
बधै प्रीति ता बांचतैं वायक बिने विशेश ॥ २९ ॥

छन्द पद्धरी ।

स्वस्ति श्री उदयापुर सुथांन, रवि हिन्दवान जगतेश रांन । कालंकि.राय कट्टन कलंक, बंकाधिराय कट्टन सुबंक ॥ ३० ॥

आजान बाहु अनमी अभंग, आचारि राय रवि कुल उतंग । मेवासिराय भंजन मेवास, तुरकेश बंधि दीजे सु त्रास ॥ ३१ ॥

आहुट्ठ राय दल बल असंक, झूझार राय रिपु करन झंख । आजेज राय नत्थे अनत्थ, सामंत राय सेना समत्थ ॥ ३२ ॥

छत्रपति राय सिर एक छत्र, श्री सबर राय साधंत शत्रु । ध्रुव देव धराधर सरिस धीर, बसुधाधिराय बल बिकट बीर ॥ ३३ ॥

प्रचलंत यवन पति जाप यान, भरि गेन रेनु धुन्धरिग भांन । दिगपाल दशौं भज्जै दहक्कि, किलक्कै युबीर उठै कुहुक्कि ॥ ३४ ॥

वैताल फाल मंडै विनोद, मिलि चलैं झुण्ड चौसट्ठि मोद । हरषै यु रुद्र करि अट्टहास, सुर कहत सद्द जय जय सभास ॥ ३५ ॥

सलसलत सेस कलमलत कच्छ, झलझलत उदधि रलरलत मच्छ । थरभरत चित्त थल दल अधीर, चलचलत चक्र चहुं डुलत नीर ॥ ३६ ॥

धसमसत धरनि गिरिवर धसक्कि, सर सरित कलित इह सलिल सुक्कि । मचि जोर सोर परि अमग मग्ग, जनु लंक लेन रघुबीर जग्ग ॥ ३७ ॥

संजनिज चित्र सुर राय संक, बीराधिबीर अरि हरन बंक । भय जास भीम पर धर भजंत, तिय पुत्र भ्रात परि जनत जंत ॥ ३८ ॥

अरि बांम बाल बन गिरि अटन्त, फल फूल खाइ अह निसि कटन्त । सुख सेज मुक्कि के शत्रु नारि. नठी सनिसा औासर निहारि ॥ ३९ ॥

आषंत षग्ग बल जसु अपार, जगतेश रांन जग जैतवार । सोभंत सोभ सुरपति समांन, नर नाह भव्य ऊपम निधांन ॥ ४० ॥

लिखितं सुबुन्दि गढ़तें यु लेष, बर छत्र साल रावह विशेष । पय कमल सत्त बेरहि प्रणाँम, संदेस एह बीनवै श्यांम ॥ ४१ ॥

सुख सकल अत्र प्रभु तुम सुदृष्टि, आरोग्य लाभ संयोग इष्ट । इच्छैं यु तुम्ह उत्तम उदंत, बंछंत चित्र ज्यें पिक बसंत ॥ ४२ ॥

निय धर्म्म धरन तुम गुरु नरिंद, दीपंत तेज हिन्दू दिनेंद । भूपाल तुम सु हैां परम भृत्य, निश्चै यु एह बर रीति नित्य ॥ ४३ ॥

गुरु पुत्ति अच्छि बर हम सुगेह, रति रंभ सरिस गति रूप देह । श्री राज कुंअर बर लहइ सोइ, हम हृदय हरष तव सिद्धि होइ ॥ ४४ ॥

किज्जेव एह हम चित्र कोड, जुगती सु जानि जग एह जोड । लच्छीस योग ज्यें तीय लच्छि, संयोग सची सुरराय स्वच्छि ॥ ४५ ॥

श्री रांम जोग ज्यें जानि सीय, पढि नल नरिंद दमयन्ति प्रीय । त्यौं युगत एह मंनैात हत्ति, सगपन संबंध किज्जेव सत्ति ॥ ४६ ॥

इहि भंति लिख्यौ कग्गद अनूप, भल दीन मिती सिर नाँउ भूप। हरषंत राव दिय अनुग हच्छ, सद्दे यु ताम प्रोहित समच्छ ॥ ४७ ॥

बोलैँ नरिन्द सुनु राज विप्र, हम काम उदयपुर नगर छिप्र । थिर रिद्धि मान तहँ हिन्दुथाँन, श्री जगत सिंह राना सुजांन ॥ ४८ ॥

तिन पाट पुत्र निय राज रूप, भल राज कुआ-रहिं नवत भूप । सो इच्छ सेन चतुरंग सज्जु, कन्या सुजिट्ठ हम बरन कज्जु ॥ ४९ ॥

ल्यावहु सुबेगि इन लगन लील, ढलकंति ढाल मम करहु ढील । आगम सुतास हम सुख अनंत, मनौं सु सज्ज सब एह मंत ॥ ५० ॥

दोहा ।

मन हरषंत सु पट्ठवै, नालिकेर नर नाव ।
तपनिय साकति बर तुरग, भूषन कनक सुभाव ॥५१॥
जरकस के बहु योग युत, प्रवर भंति सिर पाउ ।
मुक्ता फल माला समनि, जरित कटार जराउ ५२॥
मेवा षादिम बहु मधुर, अरु कहि बहु अरदास ।
पठयौ प्रोहित उदयपुर, अप्पि सुदल उल्हास ॥५३॥

कवित्त ।

सुमति राव छत्रसाल दुतिय लहु पुत्रि अप्प दिय ।
गजसिंह सु नृप गेह पुत्र जसवन्त सिंह प्रिय ॥ मारु

वारि महिपाल रनहिं रट्ठौर रढालह । निपुन बुद्धि बर न्याउ प्रवर स्वप्रजा प्रतिपालह ॥ इक दिनहिं दोइ पठए अनुग सदल सज्ज श्री फल सुकर । इक पत्र उदय पुर बर उमगि पत्ता इवव सुयोध पुर ॥ ५४ ॥

दोहा ।

प्रोहित भेटे हिन्दुपति, जगत सिंह बरजोर ।
राण तषत राजै रघू, उभय चैाँर दुहुं ओर ॥५५॥

बेठे निज निज बैठकहिं सुभट राय साधार ।
हय गज रथ पायक हसम, पिरवत नाँवहि पार ५६॥

अखिय बिप्र आसीस इह, जय नुराँण जगतेश ।
चिर जीवहु चीतौर पति, बंछित फलहु विशेष ५७॥

कवित्त ।

पुच्छैं यों महिपाल राँण जगपति जग रखन । कहो बिप्र तुम कहाँ बास बर नगर बिअखन ॥ किन भूपति संदेस कोंन कज्जैं इत आए । अखहु सकल उदन्त पास हम किन सु पठाए ॥ कहि बिप्र बास हम बुन्दि गढ़ हाडा रावहिं मुक्क लिय । तिन पुत्रि दई प्रभु कुंअर प्रति रंगरसाल सुमनरलिय ॥ ५८ ॥

दोहा ।

सुनि हरषे जगपति श्रवन, सगपन जानि सुमंत ।
भली मंडि प्रोहित भगति, आदर करिग अनंत५९

नालिकेर अप्प्यौ नृपति, सदल सजाई सच्छ ।
प्रोहित राज कुअार के तिलक कट्टि निय हच्छ ६०
जैवन्ता दम्पति युगल, हौ तुम पूरन हाम ।
होंस हमारे हृदय की, कीजै देव सकाम ॥ ६१ ॥
प्रोहित ए आशीश पढ़ि, उत्सव मंडि अमोल । .
घन ज्यौं घन त्र्यंबक घुरत, बोले निश्चल बोल६२॥

कवित्त ।

प्रोहित सच्छ प्रसन्न राँन जगपति जग रूपह ।
दीन अनग्गल दाँन अश्व शिर पाव अनूपह ॥ कनक
रजत पट कूल बसन भूसन बहु बित्रह । आदर भाव
अनंत प्रेम पोषंत प्रवित्रह ॥ आयो सु निकट तब
लगन अह प्रोहित अरिक नरिन्द प्रति । श्री करण
राँण पाटहिं सधर प्रत पौराना जगतपति ॥ ६३ ॥

दोहा ।

प्रत पौराना जगतपति, एह सुनौ अरदास ।
आयो निकट सु लगन अह, अब हम पूरहु आस॥६४
सच्छ सेन चतुरंग सजि, राजकुंअर बर रूप ।
प्रभु बुन्दीगढ पाठवहु, अबला बरन अनूप॥ ६५ ॥

छन्द वृद्धि नाराच ।

सुनन्त राज बिप्र सद्द नेह हिन्दु नायकं ।
सजी सु चातुरंग सेनं लच्छि ईश लायकं ॥

प्रधाँन सज्जि दंति पंति सेन अग्ग संचला ।
सिंदूर पूर जास सीस चारु चैार चंचला ॥ ६६ ॥
सुमुत्ति माल बिंटि कुंभ सोहए सु सिंधुरा ।
ठनं ठनंकि घंट घोष घं घमंकि घुंघरा ॥
मदोनमत्त धत्त धत्त पील वाँन पट्टयं ।
चरखि दार कुक्क ए गयन्द जोर गट्टयं ॥ ६७ ॥
सु बास दाँन गच्छ सूच्छ गुञ्जए मधूपयं ।
सुण्डाल माल के बिकाल उद्धतं अनूपयं ॥
मनैां महन्त मेघ माल हल्लई हरें हरें ।
बदंत के बिरुद्ध बंदि भूमि पाइ जै भरें ॥ ६८ ॥
झिलन्ति रंग रंग झूल पट्ट कूल पेसलं ।
ढलक्कई सुपुट्टि ढाल ढंकि बास उज्जलं ॥
पताक लील रत्त पीत सोहई स चिन्हयं ।
सु दट्ट दन्त कंति सेत काय सैल किन्हयं ॥ ६९ ॥
हयं सु बंस जाति हंस कासमीर कच्छि के । ।
कबिल्ल के कंबोज के बिकोकनी सु लच्छि के ॥
उतंग अंग आरबी अैराक के उवन्नयं ।
सु पौंन पानि पन्थ के यु पाइ ज्यों पवन्नयं ॥७०॥
बंगाल देश के सुबेश साजि बाजि सोचनं ।
कुरंग फाल उच्च षन्ध लोल लोल लोयनं ॥
नृतत्व येइ येइ नृत्य नट्ट ज्योँ सु नच्चई ।
दिनेद जास रूव देखि रथ काम रच्चई ॥ ७१ ॥

चलंत बेग चंचलं उतंग दुग्ग आरुहैं।
पुरी प्रहार बज्जि खोनि षेल षुन्द नास है॥
सुनन्त हीस सोर श्रोंन शत्रु चित्त संकई।
उच्चैश्रवा अनोप रूप बोलि कन्ध बंकई॥ ७२॥
प्रऊट गूढ़ पक्ष राज पुच्छ चोर पिखिए।
भले भले चढे यु भूप ते जि भोंर तिखए॥
प्रचण्ड रूप पयदलं जवान दीग्घ जंघ के।
उडंत लोह वार पार सार धार सिंघ के॥ ७३॥
भुजा प्रलंब रूप भीम साह सीक सूर जू।
युद्धन्त युद्ध योग जानि सायुधेस नूर जू॥
मरोर तेसु पानि पुच्छ गाढ़ के गयन्द से॥
अरोह कोह लल्ल अखि ज्यों समंद मल्ल से॥ ७४॥
बहंत ते बिरुद्ध बंक सद्ध बेधि सायकं।
कठोर जोर पानि कंक घेरि मिच्छ घायकं॥
धरन्त पाय धायतें धरातलं धमक्कई।
हठाल बीर जैत हच्छ रुद्दं सेन रुक्कई॥ ७५॥
भरे सु यान भंति भंति राशि हेम रूप सें।
पटंबरं बिशाल पाल यामरी रु सूप सें॥
सु षग्ग तोंन चाप सेल कत्ति के कटारयं।
सनाह टोप आदि सज्ज भूप योग भारयं॥ ७६॥
असंख यों चमू उमंडि भंति मेष भद्दयं।
दिशा दिशान पूरि भूरि ज्यों जलं समुद्दयं॥

घुरंत दंति पुट्ठि घोष नोवती निसान जू ।
सु गद्दि व्योम जास सद्द षोनि षोभ मान जू ॥७७॥
चढे तुरंग चंचलं कुंअार राज काम से ।
सु सेहरा बिराजि सीस ईस साभिराम से ॥
ढुरंत चैार दिग्घ चारु वारि धार वर्णयं ।
उतंग रूप आतपत्र दंड जा सुवर्णयं ॥ ७८ ॥
अनेक राय जूथ सत्थ पत्थ से समत्थ है ।
वहै बिरुद्द बंक वीर हेम दैंन हत्थ है ॥
दिनेश कंति दिग्घ देह दुट्ठ सेन दावटैं ।
अडोल बोल आखनै अनंत ते असी झटैं ॥ ७९ ॥

सलक्कि सेस सेन भार कुम्भ संक सक्कुई ।
प्रकंपि मेरु पव्वयं धरातलं धसक्कुई ॥
झलक्कि सिंधु नीर जग्गि ईस जोग आसनं ।
रविंद बिंब ढंकि रेतु संकि पाकसासनं ॥ ८० ॥
उमग्ग मग्ग सैल भग्ग भग्गि भूमि आसुरी ।
बजैं सु षोनि वाजि बेग विद्यु जो षिवे षुरी ॥
मिवास थांन मुक्कि मिच्छ भग्गि मंनि तं भयं ।
सरोवरं सलित्त सुक्कि सिंधु नीर सोसयं ॥ ८१ ॥
महंत सेन यों उमंडि जों पयोद पावसं ।
न छुब्भीयेस्व आंन मांन है दलं चहो दिसं ॥
क्रमं क्रमै करंत कूच मंडि कै मुकामयं ।
संपत्त राज विंद सूर बुंदियं सुठामयं ॥ ८२ ॥

कबित्त।

संपत्ते सजि सेन कुँमर श्रीराज कुमारह। बुंदी बढ़िय अवाज हरषि हाडा परवारह॥ छत्रसाल महाराव सेन चतुरंगनि सज्जिय। हय गय पयदल हसम राज बरसन सुख रज्जिय॥ संपत्त तबहिं फुनि राठवर जसा कुवर गजसिंह सुव। वर पानिगृहन कद्धो विहसि धीर वीर रिनधर सु धुव॥ ८३॥

दोहा।

उभय राज बर लगन इक, कन्या उभय सु कज्ज।
पत्ते नियनिय दल प्रचुर, कैलपुरा कमधज्ज॥८४॥

कवित्त।

उभय राज वर अनम उभय रिनधीर अनग्गल। उभय जोर अहंकार उभय अति रोस महद्दल॥ उभय व्याह इह प्रथम उभय हठवंत हठालह। उभय अगंज अभंग उभय वायक प्रतिपालह॥ इक मक्कि भये बुंदी उभय हाडा दरबारहि हरषि। श्रीराज कुंआार महासबर, नाहर ज्यों कमधज निरषि॥ ८५॥

दोहा।

नाहर ज्यों नाहर निरषि, कोपहि होत कराल।
त्यों दुहुं आपस में सु तकि, लोयन करिय सु लाल॥८६॥

कबित्त।

लोयन करिय सु लाल कही कमधज्ज कहानिय। हम नरनाह अनादि हद्द रक्खन हिंदवानय॥

हमसे कोइ न हठी होड हम किन पै हल्लय । संग्रामहि हम सूर दुट्ठ दानव पय डुल्लय ॥ बंदिहुं प्रथम तोरन बिहसि तरकि कलहंतन करो । अति तुंग सिषर धर वर अचल पूरब तैं पछिम धरौं ॥ ८७ ॥

दोहा ।

पूरब गिरि पच्छिम धरों, हों कमधज्ज हठाल ।
बंदहु तोरन अप्पवर, कहा किये विढ साल ॥८८॥
कथन एह कमधज्ज के, सुनि श्री राजकुँआर ।
हुंकरि यप्पि स्वकंध हय, बोले यों बबकार ॥८९॥

कवित्त ।

कब के तुम नर नाह कहैा कमधज्ज कहानिय । जीति कहा तुम जंग हद्द राखी हिंदवानिय ॥ तुम आसुर आधीन धीय दै धरनि सु रक्खहु । इन करनी हम अग्ग,उंच मुह करि करि अक्खहु ॥ पच्छे यु पाउ धरने नहीं, अग्ग आउ चौगान महि । पुरुषातन अद्य परेखियैं कुप्पि सुराज कुमार कहि ॥ ९० ॥

दोहा ।

कुप्पिय राज कुंआर रिन, अभिनव ग्रीषम अग्गि ।
कटुक रूप कमधज्ज कै, बचनहि बचन विलग्गि ९१

कवित्त ।

बचनहि बचन विलग्गि, सूरनिय निय संमाहिय । बज्जि सिंधु बहनाद्द, ईस युग्गनि उंमाहिय ॥ कुट्टि

करी मदछक्क हक्क बज्जी चावद्दिसि । झंपत कायर काय मिलिय दुहु सेन कट्टि असि ॥ तब बीच कीन हाडा नृपति छत्रसाल रावहि अजब । संगहिय बाहु कमधज्ज कों समझावै बिधि अखिल सब ॥ ८२ ॥

हो कमधज्ज कुंआर मार इन सों नन मंडहु । कैल पुरा राठूर भूलि मम अप्प न भंडहु॥ इनसों रर भर कहा कही युग युग हिंदूपति । अप्पन अनुग समान मिच्छ आधीन प्रजाभति ॥ आदित्य अपर ग्रह अंतरा अंतर त्यों इन अप्पनहि । इनसों यु टेक किज्जे नही ए असुरेश उथप्पनहि ॥ ८३ ॥

दोहा ।

सुनि समझ्यो कमधज्ज सुत, जग जसवंत सु आप ।
राज कुंअर घन रोस रत, पेषे प्रबल प्रताप ॥८४॥
तोरन तब बंदिय प्रथम, राज कुंआर रढाल ।
सिंह रूप सीसोद सौं अरि को मंडय आल ॥८५॥

कबित्त ।

अरि को मंडय आल देव दानव दिगपालह । मानव किती कमात प्रेत दीजै सायालह ॥ जिनके हरि किय जेर गिने नहि सो वर गडर । पीवहिं जेहि पयोधि कहा तिन अग्ग गाउ सर ॥ जगतेश-रांण सुअ जंग जह डुलय तहां असुरेश दल । श्रीराज कुंआर सु सनमुषहि वपु कमधज्ज कितोक बल ॥८६॥

रढनिय इहि परि रखि बंदि तोरन बर बीरहि। श्रीबर राजकुश्नार सरसि सोभा सु सरीरहि ॥ घन ज्यों ग्रंबक घुरत बिरुद वंदी बहु छुल्लत । हय गय रथ बर थट्ट परज पिखत बहु श्रद्भुत ॥ लखिए न बैर तिहि श्रप्प पर मनु नर सायर उल्लटिय । गावंत गीत गोरी गहकि तांन मांन नव नव थटिय ॥ ९७ ॥

दोहो ।

ता पाछैं कमधज्जनैं, बंदिय तोरन वार ।
उभयराज वर इंद ज्यौं, बरसै कंचन धार ॥ ९८ ॥

कबित्त ।

बरसै कंचन धार गज्जि घन ज्यौं बुंदी गढ़ ।
परनि प्रिया पद्मनी रघू राखी सु श्रप्प रट ॥
राजकुली छत्तीश मभ्भ नायक मुंछालह ।
शीशोदा बर सूर कुंश्रर राजेशर ढालह ॥
जसवंत परनि कमधज्ज कुल नायक नृप गजसिंह सुत।
हाडा नरिंद मंड्यौ हरष संतोषे षट वरन युत ॥९९

दोहा ।

वर संतोषे षट वरन, हृदय सु पूरिय हांम ।
छत्रसाल वर राव छिलि, देत दाइजै दांम ॥१००॥

कबित्त ।

देत दाइजै दांम हत्थि हय हेंम सज्ज सजि । सज्जि सार सुखपाल सेभ्क बाले सु वृषभ रजि ॥ दासी

सुन्दर देह सकल श्रीकला सुलच्छन। मुक्ता फल मनि मढ़ अंग कंचन आभूषन॥ दिन्ने सु गांव हय लेव दत कसब पटंबर विविधि भति। श्रीराज कुंआर सु सनमुखहि धरिय भेट हाडा नृपति॥ १०१॥

दोहा।

धरिय भेट हाडा धनी, हय गय दासी हेम।
अधिक रठुवर अग्गलै, पेषिय पूवर सु प्रेम॥१०२॥

कबित्त।

पेषिय पूवर सु पेम व्याह किन्नौ सु वेद विधि।
सुर नर करहि सराह राखि रस रीति महा रिधि॥
जलधर ज्यों याचकनि, देइ घन कंचन दत्तह। अनुक्रमि आए गेह, उभय वर राज उमत्तह॥ जगतेश रांण सुग्र करि सुजय पत्ते इहि बिधि उदयपुर। पूज मिलिय राज वर पिक्खनहि अति दलमलियत उरहि उर॥ १०३॥

दोहा।

अति दलमलियत उरहि उर, मिलिय सघन नर नारि
पिखहि राज कुंआर पुति, अनमिष नैन निहारि १०४

कवित्त।

अनमिष नैन निहार चित्त चिंतहिं मृगनैनिय।
गोरी गज गामिनी सकल कल विधु वर वैनिय॥
रासु इंद आकार, कुंअर श्रीराज कुंआरह।
इन जननी सु प्रमान कहिय करमेत अपारह॥

धनि धनि सु इनहि घर गेह निय हरषैं जिन
पूज्यौ सु हर ।
जो देइ देव तो दिज्जिए भव भव इनहि समान वर १०५

दोहा ।

वर वामा मिलि मिलि वदै, भव भव हम भरतार ।
देव दया करि दीजिए, इहिं वर कै अधिकार १०६॥

कवित्त ।

इहि वर के अधिकार, नही को अवर नरिंदह। इंद चंद अनुहार देह दुति जांनि दिनंदह । बहु नर वर विंटयो गिनति को करै हयग्गय ॥ पायक को नंहि पार जपत बंदी सु जयज्जय । श्रीराज राण जगतेश सुत्र बुंदी गढ़ सुंदरि बरिय ॥ निज महल आइ जननी सुनमि सकल मनोवांछित सरिय ॥१०७॥

इति श्री राजविलास शास्त्रे श्री राज कुंआर जी कस्य श्री बुंदी दुर्गे प्रथम पाणिगृहणावसरे कमधज्जेन शांकं जय प्राप्ति नाम तृतियो विलास संपूर्णम् ॥ ३ ॥

---:o:---

कबित्त ।

राजसिंह महारांण पुहविपति अप्प कुंवरपन। विपुल लगायो बाग वियो वसुधा नंदन–वन ॥ प्रवर कोटि तिन परधि झुंड सतपत्र कनक भर । वृद्धि तहां वापिका कही सनमुख दक्षन कर ॥ निज नगर उदयपुर निकट तें अगिनकोन घां अक्खियै । सब रितु विसाल तसु नांम सति नयन सु महल निरीखिये ॥१॥

छंद विद्युन्माला ।

विविधि सघन वृक्ष, लुंब झुंब केउ लक्ष ।
बाग सो बहु विशाल, रितुषट हूं रसाल ॥२॥
जु जुई सकल जाति, वेलि गुल्ल कैं विभाति ।
भरित अठारह भार, परधि बन्यौ प्रकार ॥ ३ ॥
सारनी बहत सार, वृक्ष वृक्ष मूलवार ।
गिनिये सदा गंभीर, सुरभि चले समीर ॥ ४ ॥
अंबर बिलगि अंब, करनी बहु कदंब ।
आंबिली तरू असोक, यट्ठे सु अज्ञान थोक ॥ ५ ॥
आंवरी अगछि अैंन, चंपकइ दोष चैन ।
अति अखरोट अखि, चारू चार जीह चखि ॥ ६ ॥
कटल बढल कुंद, मालती रु मचकुंद ।
करना कनेर केलि, राइनि सु राइवेलि ॥ ७ ॥
केतकी रु कचनार, केवरा प्रमोद कार ।
षारिक पिंड षजूर, भाषिये अँगूर भूरि ॥ ८ ॥
गिनती कहा गुलाब, जंभीरि जुही जबाब ।
जासूल जंबू सुजाइ, नारंगी निंबो निन्याइ ॥ ९ ॥
ज्योंजा तूत नालिकेर, गुलतररा गिरि मेर ।
चंदन महक्क चारु, दारिम सु देवदारु ॥ १० ॥
तजरु तारु तमाल, मोगरा मधुप माल ।
दमन पतंग द्राष, पिसता यूराक पाख ॥ ११ ॥
फबत तरू फरास, पारस पीपर पास ।

पाडल बहू प्रसंस, वेतस विदाम बंस ॥ १२ ॥
बटबोर सिरिबोर, जानियै सुवर्ण जोर।
सुपारी सरोस सेव, सिंदूरी सदा सुटेव ॥ १३ ॥
संगर सरस दल, सुरुझना सदाफल।
बाग में गिनै विवेक, इत्यादि तरु अनेक ॥ १४ ॥
करत विहंग केल, मिथुन मिथुन मेल।
मैन सारि सुआ मोर, चंचल बहू चकोर ॥ १५ ॥
सुनिये सबद्द सारु, हरष कुही हजारु।
कोकिल करैं कुहक्क, मंजरी भषैं नहक्क ॥ १६ ॥
काबरि कपोत कोरि, तूती फरु लेत तोरि।
लावारु तीतर लख, चंचु चारु मेवा चख ॥ १७ ॥
बटेर बाज बखान, सग गरुड़ सिंचान।
जोराबर जहां जन्त, अख ते न आवे अन्त ॥१८॥
महल तहां महन्त, कनक कलस कन्त।
रायांगन बहु रूप, भले भले बैठे भूप ॥ १९ ॥
चह बचा पिखे चारु, छुट्टत नल हजारु।
दतीनिके सुंडादंड, उदक धारा अखंड ॥ २० ॥
बंगले बने विवेक, आछी कोरनी अनेक।
सजल तहां सुसर, कमल कनक भर ॥ २१ ॥
रच्यौ राणा सीह, अनम सदा अभीह।
सरब रितु बिलास, बगीचा सदा सुबास ॥ २२ ॥
कुंअर पनै सुकेलि, बहू बिधि वृक्ष बेलि।

गिनत न आवै गान, कहत कविंद मान ॥ २३ ॥

इति श्री मन्मान कवि विरचिते श्रीराजविलास शास्त्रे मठवं ऋतु विलास भोग वर्णन चतुर्थ विलासः सम्पूर्णः ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

पालिय प्रवर कुंआर पद, बरस तेइस बखान ।
पाट बइट्ठे पुहवी पति, राजसिंह महारान ॥ १ ॥

छन्द लघु नाराच ।

श्री राज सिंह रान जू, प्रभूत पुन्य प्रान जू ।
बइट्ठियें यु पाटकों, थटे यु भूप थाट कों ॥ २ ॥
अनूप हेम आसनं, सचिट्ठिके सुखासनं ।
महक्कि चारु मज्जनं, सुमज्जए दुसज्जनं ॥ ३ ॥
कलं कनक्क कुम्भ सौं, अनाइ गंग अंभ सौं ।
शरीर कीन स्नानयं, बिराजि अंग बानयं ॥ ४ ॥
सकोमलं सुरंगयं, अंगुच्छि चीर अंगयं ।
सुधौतकं सु बासयं, षीरोदकं यु षासयं ॥ ५ ॥
ध्रुवं जनेउ धारये, कही सुबन्स कारये ।
प्रधान बन्धि पाघयं, सुबर्ण सूत साधयं ॥ ६ ॥
जरीस जोंति जामयं, दिपंत कण्ठ दामयं ।
प्रसंसि पाइ मोजरी, जराउ हेम संजुरी ॥ ७ ॥
करं गृहै कृपानयं, बियौ सु पंचबानयं ।
चढ़े तुरंग चंचलं, दहक्कि आसुरी दलं ॥ ८ ॥

जमाति भूप जुत्तयं, सभा तहां सँपत्तयं ।
बजे अनेक बज्जनं, गंभीर गेन गज्जनं ॥ ९ ॥
ढमक्कि जंगि ढोलयं, रचे सुरंग रोलयं ।
निहस्सियं निसानयं, मृदंग मेघ मानयं ॥ १० ॥
बजन्त शङ्ख बीनयं, नफेरियं नवीनयं ।
तुटंत तान तालयं, सुघंट घोष सालयं ॥ ११ ॥
सहनाइयं सुहावई, भनंकि भेरि भावई ।
झणं झणंकि झल्लरी, द्रमंकियं दुरव्वरी ॥ १२ ॥
हुडक्कि जंत्र हट्टयं, सारंगि चंग सट्टयं ।
गोरीश गीत गावई, प्रमोद चित्त पाँवई ॥ १३ ॥
बदन्त बिप्र बेदयं, अनेकसं उमेदयं ।
धषन्त ज्वाल धोमयं, हवी प्रभृति होमयं ॥ १४ ॥
भनैं बिरुद्द भट्टयं, सुबोलि बन्दि थट्टयं ।
तिलक्क कट्टि ताँमयं, सु प्रोहितं स काँमयं ॥ १५ ॥
उच्चारि सुत्ति अखए, यहै आसीस अखए ।
रघू नरिन्द राजयं, करौ स्वचित्त काजयं ॥१६॥
समप्पितं सु गामयं, दए सुलख दामयं ।
उतंग अश्व अंबरं, कनक्क चारु कुंजरं ॥ १७ ॥
दियौ सु अन्न दानयं, गिनै सु कोन गानयं ।
पयोद जानि पूरयं, दरिद्द कीन दूरयं ॥ १८ ॥
छर्जत शीश छत्रयं, समिट्टि सर्व छत्रयं ।
दुरन्त चौर उज्जलं, दिपैं हयं गयं दलं ॥ १९ ॥

अभङ्ग जास सासनं, मनौं सुरेश आसनं।
रजंत राज रान जू, कहैं कवीन्द मानजू ॥ २० ॥

॥ कवित्त ॥

पुष्कर गङ्ग प्रयाग तिच्छ अभिराम त्रिवेनिय।
जगन्नाथ जालिपा देवि सुख संपति देनिय ॥
काशी बर केदार द्वारिका नाथ सु देखिय।
गोदावरि गुमगेह बैजनाथह सु बिशेषिय ॥
इक लिंग ईश अवलोकियां दुष दोह गरुरहि टरैं।
राजेश राण निरखत नयन मान मनोबंछित फरैं ॥२१॥
रस कूपिका रसाल कलपतरु अज्ज चढ़ कर।
पारस रस पौरसा वेलि चित्रा सु देव वर ॥
हय गय हाटक पीर प्रवर सनमान पटम्बर।
संपत्ता सुर रयण अद्य दुभ्भयौ मनु अम्बर ॥
तुम दरश सोई तेजन तुरी सकल लच्छि सुख संवरैं।
राजेश राण निरखत नयन मान मनोबंछित फरैं॥२२॥

छन्द भुजङ्गी।

तुही राम रूपं रवी बंश राजा, बजैं जास तिहुं लोक मैं सुयश बाजा। तुही लच्छ ईशं लहैं लच्छ लाहं, निराबाध तू ही सदा हिन्दु नाहं ॥ २३ ॥

तुही शंकरं एक लिङ्ग सरूपं, भनौं आदि बंसे तुही हिन्दु भूपं। तुही ब्रह्म गोपाल ब्रह्माबिराजै, नवै निद्धि अप्पैं पहूतं निवाजै ॥ २४ ॥

इला इन्द तूहीं दलै आसुरानं, करें बज्र रूपं बिराजै कृपानं । तुही हिन्दुआं भान अरि तेज हारी मधूसूदनं तुंहि दरसै मुरारी ॥ २५ ॥

तुही चारु मुखं मनो पूर्ण चन्दं, अवै अमृतं बैन लहरी समुद्दं । तुही नाग नच्छे तुही देत नागं, तुही पुष्करं तित्थ तूही प्रयागं ॥ २६ ॥

रजैं रूप तुहीं जगन्नाथ राय, सदाचार रक्खैं सु भृत्यं सहायं । तुहीं गङ्ग गोदावरी तिच्छ गाजै, तुही कीन केदार कालंकि काजै ॥ २७ ॥

धरा मध्य तुही बियौ मानधाता, तुहीं छत्र धारी बहू भूमि त्राता । तुहीं काशिका बिबुध जन पाल कहहिये, सदा सैलराजां सिरैं तंस लहिये ॥ २८ ॥

तुही द्वारिकानाथ निज नैन दिट्ठौ, मनौ अमृतै बरसयौ मेघ मिट्ठौ । तुही कंस हर्त्ता कह्यौ सृष्टि कर्ता, भटौ कोटि सेवै पदं भूमि भर्ता ॥ २९ ॥

तुही जोग माया महा जङ्ग जित्तै, मधू शुंभ निशुंभ महिशेष हत्तै । तुही ज्यौति ज्वालामुखी रूप जागैं, मही छंडि तो अग्ग खल जूह भागैं ॥३०॥

जिते बिरुद धारंति आलंधरानी, कही देव तैसी तुम्हारी कहानी । तुही कंटकं मेटने कालकूटं, तुही अप्पई हेम माया अटूटं ॥ ३१ ॥

तुही बिश्वनेता तुही कल्पवृक्षं, तुही पारसं पौरसं ज्यौं प्रत्यक्षं । तुही बीर धीरं तुही चित्र बेली, करैं तं सुषल षंड रन्नरङ्ग केली ॥ ३२ ॥

महादान अप्पैं तुही मेघ माला, सुदे हच्छि हेमं दुरंमा दुशाला । तुहीं नाथ सुर रत्त तूही निधानं, तुंही सर्व्व रस कुंपिका के समानं ॥ ३३ ॥

सदातं रधूराण श्रीराज सोहं, अजेजं अ नंमी अभंगं अबीहं । लिये तंसु भुज अप्पने हिन्दु लाजं, रसा एक तूही सु राजाधिराजं ॥ ३४ ॥

तुंहीं धर्म राजा धरा धर्म धारैं, तुही आपदा खंडि कें के उधारे । निवेरे बहू भांति तं हट्ट न्यावो, यहू शंकरैं लख लखें पसावो ॥ ३५ ॥

तुही ईह को वृन्द पूरन्त आसा, तुंही अक्खई दान चिते उल्हासा । लसें साइ तो राज लीला हजारं, कहो कोन लोपै तुम्हारौ सुकारं ॥ ३६ ॥

भरैं दंड तुम अग्ग भारी भुवाला, बरं वारणं बाजि वृन्दं विसाला । तुंही कामिनी वल्लहं रूप कामं, नऊ सिद्धि पावै लियै तं सुनामं ॥ ३७ ।

निपावन्त देवालये तं नवीनैं, पड़ै वेद तो अग्ग अब्भा प्रवीनैं । तुंही एक दातार पुहवी अनूपो, रसा रखना राजतं राज रूपो ॥ ३८ ॥

त्रिहों लोक धाराधरासं त्रिवेनी, दिशा व्योम तो लों शिवा सौख्य देनी। गिरा मान तोलों नई किति गाजै, रिधू राज सी राण मेवार राजै ॥ ३९ ॥

॥ कवित्त ॥

राजसिंह महाराज बन्धु बर बीर महाबल।
महाराज अरि सिंह मोज अप्पै हय मैंगल ॥
सुरही बिप्र सहाय अनम अरि जूह उथप्पन।
मृग रिपु कुल मृगराज क्रूर दुख दोहग कप्पन ॥
सुलतान गहन मोषन सगति टेकवन्त रिन नन टरैं।
संसार सरन महाराज के आवे ते दर उग्गरैं ॥४०॥

छन्द वृद्धिनाराच।

श्री राजसिंह रान के रिधू सुबन्धु रद्यए।
गिरा नरिन्द किति गाज गंग जानि गज्जए ॥
लिए सु सत्थ लक्ष नील लच्छि इन्द लद्यए।
तपंत जास खग्ग तेज तिख मिच्छि तद्यए ॥ ४१ ॥
बहू बिबेक बुद्धि बीर बिश्व मैं बखानिए।
प्रताप पुञ्ज पुन्य पाज प्राक्रमी पिछानिए ॥
परोपगारवन्त पुज्य पावनं प्रमानियैं।
यु जातरूप रूप तैं अनूप रूप जानियैं ॥ ४२ ॥
अजेज गाढ़ आगरे इला धनी अभङ्गयं।
जुरे भजूह सत्थ जोध जीतई सु जंगयं ॥
प्रधान दान देत प्रेम पुष्करी पवंगयं।
पयोद ज्यों प्रसंसिए चवन्त भास चंगयं ॥ ४३ ॥

उदार चित्त अखिये अहो निशं उल्हासकं ।
सु जास सर्व ग्रंथकार सिख वैस हासकं ॥
विचित्र वित्त बाम बाजि बारनं विलासकं ।
विशाल कित्ति चन्दवान सा प्रथी प्रकाशकं ॥४४॥
करन्त केलि कोरि कन्त कन्ति जानि काम जू ।
विशिष्ट वान बाल वेस विंटयो सु बाम जू ॥
नचन्त पात्र नायका गृहंति राग ग्राम जू ।
सदैव सौख्य सागरं सु मान ईस धाम जू ॥ ४५ ॥
सहाय साधु श्याम सेव सत्यता सुहावई ।
पुरान वेद पाठ के पढे प्रमोद पावई ॥
सु देत लक्खु २ दान दुःख को दुरावई ।
महीन्द महाराज को गुनी सु बोल गावई ॥ ४६ ॥
कृपान पानि दुठ काल क्रूर युद्ध कारई ।
धसक्कि मिळि जास धाक धुज्जि भीति धारई ॥
सुकज्ज सज्ज साहसी कसंबरं सुधारई ।
बजन्त सिन्धु बद्यनं महन्त सित्रु मारई ॥ ४७ ॥
तनू उतङ्ग तत्त तेज तीर बेग से तुरी ।
षिवन्त जानि विद्यु पाय षेगसं करैं षुरी ।
मदोन्मत्त रूप मेहकाय से लसे करी ।
करैं सु दत्त कित्ति काज सार सार जासिरी ॥४८॥
धपक्क कन्ति मिच्छि धारि धरा जाल धक्क हैं ।
सुसद्द बेधि अंग शंभु हद्द सीह हक्क हैं ॥

चढन्त पुठि चंचलं चमक्क च्यारि चक्क हैं।
गिरिन्द गाढ़ मैन गात संगि राग हक्क हैं ॥ ४९ ॥
नऊ निधान लच्छि नाथ न्याउसं नरिन्द जू।
दिपन्ति कन्ति देह रूप देखते दिनिंद जू ॥
पवित्त शीश आतपत्र चारु चौर चंचलं।
सुरद्य जास देश सन्धि सित्तु का न संचलं ॥ ५० ॥
नराधि रूप नाहरं निरन्तरं निसंकयं।
करी चलो विभच्छि कुंभ क्रूर नख कंकयं।
बलिठ मुठि वीर सो वहै विरुद्द बंकयं।
अनाथ नाथ विश्व उंट आन भुल्लि अङ्कयं ॥ ५१ ॥
तिधार तिख तेग तिग्ग तेज ताप तोरई।
छतीश सत्थ धार छोह छीनि बन्धि छोरई ॥
मजेज जङ्ग मण्डलों मसन्द मीर मोरई।
जयं जयं जपैं कविन्द जास कित्ति जोरई ॥ ५२ ॥
निहस्सई निसान नाद नेज नूर न्नायकं।
लसे करी तुरंग लच्छि लक्ष लील लायकं ॥
सनातनं सधर्म साहु सज्जनं सहायकं।
दबट्ट ई दरिद्द दोस दन्ति मत्त दायकं ॥ ५३ ॥
मृजाद मेर महाराज मही सीस मंडलं।
बदै सुबोल जास विश्व वैहितं विहंडनं ॥
चलौं दलों सु सज्जि खेग खग्ग वेग खंडनं।
दयाल देव दूबरेनि दुट्ठ सट्ट दंडनं ॥ ५४ ॥

सुरेन्द चन्द सूर तें शरीर तास रूप हैं ।
अनेक जूथ सत्थ भूप भेटई सु भूप हैं ॥
समप्पई सुपत्त सिद्धि सोवनं सु सूप हैं ।
धराल शुद्ध जा दुधार धारि हत्थ धूप हैं ॥ ५५ ॥
डहक्कि मिल्लि जास डिम्भ डिम्भ बाम संभरे ।
जिहान आन कोन जोध जंग आइ सो जुरे ॥
भुजाल भीच भारयों भयङ्क भीम ज्यों भिरैं ।
अरस्सि महाराज को गुनी सुबोल उच्चरैं ॥ ५६ ॥
अतेव अन्त अखियें इला अभङ्ग आन जू ।
दिनं दिनं सुमान देत राज सिंह रान जू ।
तवंत त्रैपुरा त्रिलोक उक जान श्रान जू ।
सु सद्द ए सुधा समं कहे कविन्द मान जू ॥ ५७ ॥

॥ कवित्त ॥

राजसीह महाराण कुंअर करमेत कुलोद्धर ।
जयवन्ता जग जोध जंग जीतन जोरावर ॥
अरि उलूक आदित्य घाउ मोरे पर गज घट ।
देत सुकवि कर दत्त प्रवर करि अश्व कनक पट ॥
कुंजर समिछि कुंभहि कलन कहिय कँधाला केहरी ।
जयसीह कुंअर दिन २ जयो उमगि गहन धर आसुरी५८

छन्द उद्धोर ।

जय जय कुंअर श्री जय सीह । अति अवगाह अङ्ग अबीह ॥ उत्तम रूप सुक्रत अन्स । प्रवर सु पुहवि मांझ प्रसंस ॥ ५९ ॥

कट्टन दरिद दुख कलङ्क । मुख दुति आनि सकल मयङ्क ॥ अप्पय लछि चित्त उदार । सञ्चा सूर कुल श्रृँगार ॥ ६० ॥

कमनीय काय अप्प कुँअार । अभिनव मदन को अवतार ॥ उंपिति सहज पर उपगार । हरषत देत द्रव्य हजार ॥ ६१ ॥

अंकुश सरिस जो अरि इभ । गाहत आसुरी धर गर्भ ॥ धुज्जत असुर बर तस धाक । हक्कत सीह बन घन हाक ॥ ६२ ॥

ए अवतार रूप अनूप । भेटहि जास बड़ बड़ भूप ॥ राज कुंअार राजस रीति । उथपि जिनहि सकल अनीति ॥ ६३ ॥

झलकत मस्म नर वर झुण्ड । प्रकट कि तरनि तेज प्रचंड । महिमा मेरु सबर मृजाद । वसुमति को न मंडय बाद ॥ ६४ ॥

महि तल सकल मान महन्त । आनहि कुंअर अरि कुल अन्त ॥ सुरही विम्र करन सहाय । गोपति सरस जसु अस गाय ॥ ६५ ॥

गिनियहि मेरु गिरि वर गाढ़ । डक्कहि पिसुन नर असि डाढ़ ॥ घन तें अधिक दूढ़ घन घाउ । दिसि दिसि देत पर धर दाउ ॥ ६६ ॥

सिन्धुर तुरग श्री श्री कार । आखय अवल जन आधार ॥ सागर तोल चित्त समाव । परतक्ष करन लख पसाव ॥ ६७ ॥

बामा सत्थ वैरिन बन्धि । आनहि जेह अप्पन सन्धि ॥ निहिसित सत्थ नट्ठ निशान । उदधि सु नीर दल असमान । ६८ ॥

दुज्जन भरत हय गय दण्ड । अधिक प्रताप आन अखण्ड ॥ बिलसत बिबिधि बाम बिलास । मनु रति नाथ द्वादस मास ॥ ६९ ॥

रीझत देत रीझ रसाल । मेंगल मत्त मोतिन माल ॥ सूरति सहसकिरन समान । अरि तम हरण इन उनमान ॥ ७० ॥

शस्त्र छतीस धार सुजान । पीरन प्रबल दुज्जन प्रान ॥ नाहर ज्यों सदैव निसङ्क । कूर सु कविन जनु नष कङ्क ॥ ७१ ॥

पिल्लहि पिशुन ईष प्रबन्ध । सहज उस्वास मरुत सुगन्ध ॥ वसुमति विभव विलसन बीर । निरमल सुजस सुरसरि नीर ॥ ७२ ॥

प्रवर सुमग्ग धरन प्रवीन । षग बल करत बल दल षीन ॥ मन्थर गति सु राजमराल । परठत अहित जनहि पयाल ॥ ७३ ॥

सोवन सरिस कन्ति शरीर । सुन्दर सबल सा-

हस धीर ॥ लछिन चारु तसु तनु लछि । पर उपगार-वन्त प्रतछि ॥ ७४ ॥

ससि रवि सुर सुरेस्वर शंभु । उदधि सुमेरु सुर-सरि अम्भु ॥ अविचल ज्यौं हुए अवदात । बोलहि मान त्रिजग विख्यात ॥ ७५ ॥

॥ कवित्त ॥

बसुमति रखन बीर बिमल मति धरन छत्री वट ।
सीसोदा कुल सोभ झारि नंषैं अरि षग झट ॥
लीलापति बहु लछि सुगुनगाहक दृढ़ सायक ।
न्यायवन्त गुरु नयन दत्त हय गय धन दायक ॥
भारथ समत्थ भुवि सुजसभर भागवन्त सु अभंगभर
श्रीराजसिंह महाराण के भीमसिंह कूँवर सबर॥७६

छंद दण्डक ।

भीमसिंह कुंआर मह भट । झूरि नंषहि अरिन बग झट ॥ घाउ घल्लन सीह गज घट । विरुदवन्त सुमन्त कुलवट ॥ ७७ ॥

बिभव तेज सदैव बट्टइ । कुंति ते कंटकन कट्टइ । गिरि समान गुमान गट्टइ । चढ़त हय रिपु चाक चट्टइ ॥ ७८ ॥

दुज्जनें सिर करत दंडह । अछि हय गय बल अखंडह । खग्ग बल खल खेत खंडह । अकल अप्प सदा अदंडह ॥ ७९ ॥

अङ्गजीतन जोध जग जस । रपटि रिपु रल-तलहि रिन रस ॥ गोर गात सु गोध गुरु गस, बसु-मती जिन कीन निज बस ॥ ८० ॥

बन्धि आनत सिन्तु बामहि, गाहि धर गढ़ कोट गामहि । जानि ऋतु पति अट्ट जामहि, धूपटे धन राज धामहिं ॥ ८१ ॥

सरस सुर सङ्गीत सच्चइ । नृतत पातुर नारि नच्चइ ॥ राग रङ्ग सु तान रच्चइ । मधुर धुनि सुनि मोद मच्चइ ॥ ८२ ॥

सुरहि सज्जन जन सहायक, लच्छिपति सम लील लायक ॥ प्रचुर हय गय सेन पायक, नर प्रधान नराधिनायक ॥ ८३ ॥

भीम भय गढ़ कोटि तज्जइ, धसकि आसुरि धरनि धुज्जइ ॥ राजराण सु पुत्त रज्जइ, तिक्ख अरि तनु नेह तज्जइ ॥ ८४ ॥

सकल रद्य धुरा समत्थह । पिशुन पटकहि ज्यों सु पठ्ठह । सबल दल जिन चढ़त सत्थह । हेम हय गय देत हत्थह ॥ ८५ ॥

मत्त मीर मजेज मोरन । तुंग तर मेवास तोरन ॥ बीर बर गत धन बहोरन, जगत जय जस बाद जोरन ॥ ८६ ॥

क्रूर जसु कर कठिन कंकह, झाक बज्जत धुनि

झनंकह । नित्य नाहर ज्यों निसंकह, बिरुद मरद सु
वहय बंकह ॥ ८७ ॥

गहकि आसुरि सेन गाहत, ढुंढि ढुंढि सु शत्रु
ढाहत । बज्र सम करवाल बाहत, सज्जि दल सुल-
तान साहत ॥ ८८ ॥

नूर नर नागर निरोगिय, अभय मन अह निशि
असोगिय । भोगवे बहु भूमि भोगिय, स्वामि ज्यों
सुन्दर संयोगिय ॥ ८९ ॥

स्वर्ण रङ्ग शरीर सुन्दर । प्रगट मनु पुहवी
पुरन्दर । केवि जिन डर दुरत कन्दर, मानई षट
ऋतु सुमन्दिर ॥ ९० ॥

निसुनि चढ़त निसान भद्दह, रङ्क रिपु कुल होत
रद्दह । भीम दल जनु मेघ भद्दह, सुकवि बोलत
तसु सुसद्दह ॥ ९१ ॥

राज राण सु नन्द रङ्गह । भीम रिपु दल करन
भङ्गह । गाजई जस जानि गङ्गह । चन्द पूरन मास
चङ्गह ॥ ९२ ॥

चिरञ्जीवि प्रताप जसु थिर, थान हय गय हों
बहू थिर । शृष्टि तब लो अचर सुरगिर, गहकि
बोलत मान जसु गिर ॥ ९३ ॥

इति श्री मन्मान कवि विरचिते राज विलास शास्त्रे राणा
श्री राजसिंह जी कस्य पट्टाभिषेक विरुदावली
प्रभृति वर्णनं नाम पञ्चमो विलास ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ॥

चढ़े सेन चतुरङ्ग राण रवि सम राजे सर।
मनो महोदधि पूर बारि चहु ओर सु विस्तर॥
गय बर गुञ्जत गुहिर अंग अभिनव एरावत।
हय बर घन हीसन्त धरनि खुरतार धसक्कत॥
सल सलिय सेस दल भार सिर कमठ पीठि उठि
कल कलिय। हल हलिय असुर धर परि हलक
रवनि सहित रिपु रलतलिय॥ १॥

छन्द पद्धरिय।

सम्बत प्रसिद्ध दह सत्त भास। वत्सर सु पञ्च दस जिठ मास॥ सजि सेक राण श्री राज सीह। असुरेश धरा सज्जन अबीह॥ २॥

निर्घोष घुरिय नीसान नद्द। सहनाई भेरि जङ्गी सु सद्द॥ अति बदन बदन बट्टी अवाज। सब मिले भूप सजि अप्प साज॥ ३॥

किय सेन अग्ग करि सेल काय। पिखन्त रूप पर दल पुलाय॥ गुंजंत मधुप मद झरत गछ। चरषी चलन्त तिन अग्ग पछ॥ ४॥

सोभन्त चौर सिन्दूर शीश। रस रङ्ग चङ्ग अति भरिय रीस॥ सो झाल घटा मनु मेघ श्याम। ठनकन्त घंट तिन कण्ठ ठाम॥ ५॥

उनमत्त करत अग्गग् अग्राज। बहु वेग जान पावै न बाज॥ ढलकन्त पुठि उज्जल स ढाल। बर विविध वर्ण नेजा बिसाल॥ ६॥

बोलन्त चलत बन्दी बिरुद्द। दीपन्त धवल रुचि शुचि विरद्द॥ गुरु गाढ गेंद गिरिवर गुमान। पढ़ि धत्त धत्त मुख पीलवान॥ ७॥

एराक आरबी अश्व ऐन। सोभन्त श्रवन सुन्दर सुनैन॥ काश्मीर देश कांबोज कछि। पय पन्थ पौन पथ रूप लछि॥ ८॥

बंगाल जात के बाजि राज। काबिल सु केक हय भूप काज॥ खंधार उतन केहि खुरासान। वपु ऊंच तेज बर बिबिध बान॥ ९॥

हय हीस करत के जाति हंस। कविले सुकि हाड़े भोर बंस॥ किरडीए खुरहडे केसु रत्त। पीलडे केकली लेप वित्त॥ १०॥

चञ्चल सुवेग रहवाल चाल। थेइ थेइ तान् नच्चन्त थाल॥ गुंथिय सुजान कर केस बाल। बनि कन्ध वक्र सोभा विसाल॥ ११॥

साकति सुवर्ण साजे समुख। लीने सु सत्थ हय एक लख॥ रवि रथ तुरङ्ग सम ते सरूप। भनि विपुल पुठि तिन चढ़े भूप॥ १२॥

पयदल सु सज्जि पोरष प्रधान। जंघालु जङ्ग

जीतन जवाँन ॥ भट विकट भीम भारत भुजाल। साधर्म्मि सूर निज शत्रु साल ॥ १३ ॥

निलवट सनूर रत्ते सु नैंन। गज थाट घाट अप घट गिनैन ॥ धमकन्ति धरनि चल्लत धमक्क। धर हरत कोट जिन सबर धक्क ॥ १४ ॥

बंकी सु पाघ वर भृकुटि बंक। निर्भय निरोग नाहर निसंक ॥ शिरटोपसज्जि तनु त्रान संच। प्रगटे सु बन्धि हथियार पंच ॥ १५ ॥

कटि कसे कटारी अरु कृपान। बंदूक ढाल कोदण्ड बान ॥ कमनीय कुन्त कर तोन पुठि। मारन्त शत्रु सुनि सबल मुठ्ठि ॥ १६ ॥

गल्हार करत गज्जन्त गैन। बोलंत बंदि बहु विरुद बैन ॥ मुररन्त मुंछ गुरु भरिय मान। गिनि कोन कहै पायक सु गान ॥ १७ ॥

बहु भूप थट्ट दल मध्य वीर। सुरपति समान शोभा सरीर ॥ श्रीराज सिंह राणा सरूप। गजराज ढाल आसन अनूप ॥ १८ ॥

शोभे सु छत्र बाजन्त सार। चामर ढलंत उज्जल स चारु ॥ घन सजल सरिस दल घाघरट्ट। भाषन्त विरुद वर बन्दि भट्ट ॥ १९ ॥

कालंकि राय केदार कत्थ। अस कत्ति राय थप्पत समच्छ ॥ हिन्दू सु राय रखन सुहद्द। मुगलाँन राय मोरन मरद्द ॥ २० ॥

कविलान राय कट्टन सु कन्द। दुतिवंत राय हिन्दू दिनंद॥ अरि विकट राय जाड़ा उपाड। बलवन्त राय बैरी विभाड॥ २१॥

अन पुट्ठि राय पुट्ठिय पलाँन। भल हलत रूप अध्यान भान॥ रायाधिराय राजेश रान। जगतेश नन्द जय जय सुजान॥ २२॥

बाजीनि चरन खुरतार बग्ग। मह अनड कट्टि कीजन्त मग्ग॥ झलझलिय उदधि सलसलिय सेस। कलकलिय पिट्ठि कच्छप असेस॥ २३॥

रजथान सजल जलथान रेनु। धुन्धरिग भान रज चढ़ि गगेनु॥ अति देश देश सु वढ़ी अवाज। नट्टे सु यवन करते निवाज॥ २४॥

हलहलिय असुर धर परि हलक्क। चलभलिय नैर पर पुर चलक्क॥ थरहरें दुर्ग मेवास थान। रचि सेन सबल राजेश रान॥ २५॥

सुलतान मान मन्नी ससङ्क। बलवन्त हिन्दुपति बीर बङ्क॥ आयौ सुसेन अवनी अभङ्ग। आलम सु भयौ सुनि गात भङ्ग॥ २६॥

॥ कवित्त॥

ऊचलि गयो अग्गरो दन्द मच्यौ अति दिल्लिय।
हाजीपुर परि हक्क डहकि लाहौर सु डुल्लिय॥
थरस लयौ रिनथम्भ असकि अजमेर सु धुज्जिय।

सूनौ भयौ सिरोंज भगग भै लसा सु भज्जिय ॥
अहमदाबाद उज्जैनि जन थाल मूंग ज्यों थरहरिय ।
राजेस राण सु पयान सुनि पिशुन नगर खरभर परिय॥२७॥

छन्द मकुन्द डामर ।

चतुरङ्ग चमूं सजि सिन्धुर चञ्चल बङ्क बिरुद्दत दान बहैं । अवधूत अजेज तुरङ्ग उतंङ्गह रङ्गहि जे रिपु कट्टि रहैं ॥ अवगाढ़ सु आयुध युद्ध अजीत सु पायक सत्य लिये प्रचुरं । चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥ २८ ॥

अति बट्टि अवाज भगी दिसि उत्तर पंथ पुरंपुर रौरि परी । त्रह कन्त सु त्रम्बक नूर त्रहं त्रह धेंग महा षिति बज्जि थुरी॥ उडि अम्बर रेनु बहूदल उम्मडि सोषि नदी दह मग्ग सरं । चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥२९॥

करते बहु कूच मुकाम क्रमं क्रमि पत्त सु नागर चाल पहू । भहराय भगे धर लोक महा भय सून भये अरि नैरस हू ॥ असुरेश के गेह सुवट्टि उदंगल डुल्लिय दिल्लिय सल्लि डरं । चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण युमारि उजारिय माल पुरं ॥ ३० ॥

दल विंटिय माल पुरा सु चहैं दिसि उपम चन्दन जान अही । तहँ कींन मुकाम घुरंत सु त्रंबक सोच परयौ सुलतानं सही ॥ नर नाथ रहे तह बस अहे

निशि सोवन मारस धीर धरं। चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥ ३१ ॥

भर चौकिय देत चहैं दिशि भूपति सोरभ टक्क अराव सजैं। हुसियारि कहैं बर जोध हंकारहिं हींसत है गजराज गजैं॥ सुहलाल हजार जरै सब ही निशि घोष सु नौबति नन्द घुरं। चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३२॥

धक धूनिय धाम सु कोट धकाइय गौखरु पौरि गिराइ दिये। ढम ढेर करी हट श्रेणि ढुढारिय कंकर कंकर दूर किये॥ पति साह सु दज्झन नैर प्रजारिय अंबर पावक झार अरं। चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मार उजारिय माल पुरं ॥ ३३ ॥

तहां श्रीफरु पुंगिय लौंग तमारह हिंगुल केसरि जायफलं। घनसार मृगंमद लीलि अफीमि अँबार जरन्त सु झारझलं॥ उडि अग्गि दमग्ग सु दिल्लिय उप्पर जाय परे सु डरैं असुरं। चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय माल पुरं॥३४

धर पूरिय धाम धराधर धुंधरि धाम भरे धन धान धषैं। रवि बिम्बति हौं दिन गोप रह्यौ लुटि लच्छि अनन्त सु कोंन लषैं॥ सिकलात पटम्बर सूफ सु अम्बर इंधन ज्यों प्रजरैं अगरं। चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥३५॥

अति रोसहिं कीन इलातर उप्पर कंचन रूप निधान कढ़े । भरि ईभष जान सुखञ्जर सूभर वित्तहिं भृत्य अनेक बढ़े ॥ जस वाद भयौ गिरि मेरु जितौ हरषे सुर आसुर नूर हरं । चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण युमारि उजारिय माल पुरं ॥ ३६ ॥

जय हिन्दु धनी यवनेशहिं जीतन मारन तूं ही यु म्लेछ मही । अवतार तुहीं इल भार उतारन तोकर पग्ग प्रमान कहीं ॥ जगतेश सु नंद जयौ जगनायक बंस विभूषन बीर बरं । चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥ ३७ ॥

निज जीति करी रिपु गाढ़ नसाइय आए देत निसान खरे । पयसार सु कीन सिंगारि उदयपुर आइ अनेक उछाह करे॥ कबि मान दिए हय हत्थिय कंचन बुट्ठिय जानि कि बारि धरं । चित्र कोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥३८॥

॥ कवित्त ॥

माल पुरहिं मारयौं कनक कामिनि घर घर किय।
गारिय आसुर गाढ़ नीर चढ़यौ सु बन्स निय ॥
इन कुल नीति सु एह गट्ट आलम गहि मोषन ।
अनमी अनड अभङ्ग नित्य निम्मंल निरदूषन ॥
अज सिंह पियै जल घाट इक पग्ग तेज लीयै सुषिति

राजेश राण जगतेश सुत पुन्यवन्त मेवार पति॥३८

इति श्री मन्माम कवि विरचिते श्रीराजविलास शास्त्रे
राँणा श्रीराज सिंह जी कस्य दिग्जय वर्णन
नाम षष्टम विलासः संपूर्णः ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

मारु बारि महि मंडले, रूप नगर बहु रूप ।
राज करै तहं रट्ठ बर, मानसिंह मह भूप ॥ १ ॥
सो नृप औरंग साहि कौ, अकुली बल उमराव ।
सूर बीर सच्चौ सुभट, दैंन पर धरहि दाव ॥ २ ॥
भगिनी तस घर एक भल, सुभ लच्छिनी सयान ।
वेष बाल षोरस बरस, नख सिख रूप निधान ॥३॥
रमा रूप के रम्भ रति, गौरीसै गुन ग्राम ॥
रूपसिंह राठौर की, सुता सु लक्षन धाम ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

धरनि प्रगट मरू धरा बसैं तहं रूप नगर वर ।
मान सिंह तहं महिप रज्ज रज्जन्त रट्ठ बर ॥
बहनि तास गृह प्रवर रमा रूपें कि रम्भ रति ।
रूपसिंह पुत्ती स गात कञ्चन गयन्द गति ॥
बोलन्त मधुर धुनि पिक बयन निशिपति आनन
मृग नयन। चउसठ कलान कुंवरी चतुर मन मोहन
मन्दिर मयन ॥ ५ ॥

छन्द गुणावेलि ।

कहिये सुभ राज कुंआरी, अच्छी अपच्छरी अनु-हारी । वपु सोभा कञ्चन बरनी, हरि हर ब्रह्मा मन हरनी ॥ ६ ॥

सचि सुरभि स कोमल सारी, कव्वरि मनु नागिनि कारी । सिर मोती मांग सु साजैं, राषरी कनक मय राजैं ॥ ७ ॥

लखि शीश फूल रवि लोपैं, अष्ठमि शशि भाल सु ओपैं । बिन्दुली जराउ बखानी, अलि भृकुटि ओपमा आनी ॥ ८ ॥

छवि अञ्जन दूग मृग छोना, पतनिय श्रुति जरित तरोना । नकबेसरि सोहति नासा, पयनिधि सुत लाल प्रकाशा ॥ ६ ॥

पल उपचित गच्छ प्रधानं, अति अरुन अधर उपमानं । रद दारिम बीज रसाला, पढ़िये मनु बिम्ब प्रवाला ॥ १० ॥

कलकण्ठ सुरसना कुहकें, मुख स्वास कुसम वर महकें । चित चुभी चिबुक चतुराई, ससि पूरन वदन सुहाई ॥ ११ ॥

मनु काम लता इह मोरी, नीकी गर पोतिन बोरी । कँठसिरी तीलरी कहियै, चम्पकली हंस सुभ चहियै ॥ १२ ॥

मयगल मोतिन की माला, मनि मण्डित झाकझमाला । चोकी चामीकर चंगी, रतनाली छबि बहुरंगी ॥ १३ ॥

अष्टादश सर अभिरामं, नव सर षट सर किहि नामं । हारावलि मण्डित हेमं, पहिरी बर कण्ठहि पेमं ॥ १४ ॥

उर उरज उभय अधिकाई, श्री फल उपमा सम भाई । लीलक कंचुकी निहारी, भुजदण्ड प्रलम्ब सभारी ॥ १५ ॥

वर करन कनक मय बन्धं, बिलसत दुति बाजू बन्धं । चूरो कंकन सो चहिये, गजरा पोचिय गुन गहिये ॥ १६ ॥

मुद्रिय अंगुरि मन मानी, कंचन नग जरित कहानी । महदी मय वेलि सु मंडी, तिन पानि सोभ बहु तंडी ॥ १७ ॥

मच्छोदरि तिवलिय मभ्भे, वापी सम नाभि सु बुभ्भे । कटि मेषल मनि कुन्दन की, तरनिय सी सोभा तिनकी ॥ १८ ॥

चरना रञ्जित बहु चोलं, पहिरन बर पीत पटोलं । वर समर गेह सुचि बिम्बं, नीके गुरु युगल नितम्बं ॥ १९ ॥

करि कर जंघा जुग कन्तं, झंझरि पय धुनि झमकन्तं । पाइल क्षुद्राबलि रंगं, आभूषन अेार उपंगं ॥२०॥

रुचि सहज पाइ तल रत्तै, जावक वर सोभ सु जित्ते। गोरी सी सागय गवनी, रम्भा रति केहरि रवनी॥ २१ ॥

जसु रूप अधिक इक जीहा, लहियें क्यौं पार सुलीहा। कवि मान कहै सुखकारी, नन ता सम को वर नारी॥ २२ ॥

॥ कवित्त ॥

इक दिन आलम अखि बचन विपरीति रज्ज बल।
सुनि राठोर सु जानि मान मृगराज राज कुल।
हमहिं देहु चित हरषि बहिनि तुम सुनिय रूप बर
देहु तुमहि धर देश गाउ हय गय समान गुर॥
रठोर ताम आधीन रुख तुरक बचन किन्नो सहति।
कलि युग प्रमान कवि मान कहि कमधज कछ-
वाहा कुमति॥ २३ ॥

दोहा।

मान सिंह नृप सोचि मन, तुरक बिचारिस तप्प।
कन्या तब ब्याहन कही, ओरंजेबहि अप्प। २४ ॥

छन्द त्रोटक।

सुनि बत्त सु रूप सुता श्रवनं, बिलखाइ बदन्न भई विमनं। तिहि सोचहि अन्न रु पान तजे, भह-राइ परी नन धीर भजे॥ २५ ॥

करुना करते इह रीति करी, अब आसुर गेह तिया अमरी। गुरु संकट तें मुहि कोन गहें, कुन-नन्ति सखी जन मंझ कहे॥ २६ ॥

गिरि शृङ्ग उतंगनि तें यु गिरों, कुल कज्ज हलाहल पान करो। जरतें झर पावक कुण्ड जरों, बरिहो सुर आसुर हो न बरों ॥ २७ ॥

जिन आनन रूप लंगूर जिसो, पल सर्व भये सुर सों युग सौं। जिन नाम मलेछ पिशाच जनो, सुर ही रिपु होन न स्याम मनों ॥ २८ ॥

मन सोचति ही उपज्यो सु मते, छिति छत्रपती बर हिन्दु छतो। श्रीराजसि राण खुमान सदा, अब ओट गहो तिन की सु मुदा ॥ २९ ॥

· पुहवी नन तासम छत्रपती, रविबन्स वि-भूषन भाल रती। धर आसुरि मारन हिन्दु धनी, सरनै मो रक्खन सोइ धनी ॥ ३० ॥

लहि ओसरि सुन्दर पत्र लिखें, चित्रकोट धनी अबरूय रखे। हरि ज्यों सु रुकुंमनि लाज रखी, अब ला यों रखहु आस मुखी ॥ ३१ ॥

गजराज तजे खर कौन गहें। सुर वृक्ष छतें कुन आक चहें। पय पान तजे विष कौन पिये, लहि पाचरु काचहि कोन लिये ॥ ३२ ॥

बग हंसनि क्यों घर बास बसें, न रहे फुनि कोकिल कग्गर से। सस सिंहनि ज्यों नन देखि सके, बिन बुद्धिय आसुर बादि बके ॥ ३३ ॥

नर नायक तो सम और नही, सरणागय बत्सल

तू जसही। प्रभु के सु सुली सुलि पाय परों, कर जोरि इती अरदास करों ॥ ३४ ॥

सजि सेन सु आवहु नाह इतें, अबला सु छुड़ावहु आसुरतें। सु लई ज्यों राघव सीत सती, हठ कार करावन राय हती ॥ ३५ ॥

करि भीर प्रभू निज कामिनि की, बलि जाउ सदा तुम जामिनि की। इन कज्जहि लाइक तू जइला कुल नीर चढ़ाउन देव कला ॥ ३६ ॥

लिखि लेख समै द्विज सद्वि लियौ, कहि भेद सु कग्गद हत्थ दियो। मुष बैन दिढ़ाइरु शीष करी, धर पत्त वहू सुउमङ्ग धरी ॥ ३७ ॥

पहुंच्यो सु उदय पुर माझ पही, महाराणहि भेटि असीस कही। जय हिन्द धनी जगतेश सुतं, श्री राजसि राण जगत्त जितं ॥ ३८ ॥

गुदराइय लेख कुमारि गिरं, अति हर्ष भयो नर नाह उरं। करुनाकरि विप्र समान कियो, दिल उत्सक उंचित दान दयो। ३९ ॥

महि मानिनि जानि दसारु मिलैं, घर आवत लच्छिय कौन ठिलै। इह चित्तहि ठानि के बीरु बली, रति पाइ महा रस रङ्ग रली ॥ ४० ॥

घन नोवति नद्द निसान घुरे, अवनीस अनेक उछाह करे। चढ़ि चंचल वाम मिलाप चहें, कवि नायक यों कवि मोन कहें ॥ ४१ ॥

॥ कवित्त ॥

अवलाकृत अरदास विप्र मुष वसु निरु विष खन ।
चित्रकोट पति चढ़े रूप कुंअरी पति रखन ॥
घुरत निसाननि घमस गुहिर घन ज्यों गय गज्जन।
सुभ बन्दी जन सद्द बाजि खुरतार सु बज्जन ॥
हय हंस चढ़े चामर ढलत धवल छत्र शीशहिं धरिय ।
सोवन जराउ युत सेहरे सुन्दरि ब्याहन संचरिय॥४२॥

॥ दोहा ॥

दैन बधाई सोइ द्विज, रूप सुता प्रति रंग ।
आयो सेना अग्ग तें, उद्यमवन्त अभङ्ग ॥ ४३ ॥
अखिय आइ बधाइ इह, बारी तो बड़ भाग ।
राण राजसी राज बर, आए धरि अनुराग ॥४४॥
सुनि सु बधाई नृप सुता, उपज्यो उर उल्हास ।
कनक रजत पटकूल करि, पूरन किय द्विज आस ४५
रूप नगर महाराण की अधिक बढ़ी सु अवाज ।
मानसिंह नृप हरषि मन, सजै ब्याह वर साज॥४६॥
बंधे तोरन रतन मय, थप्पि रजत युग थम्भ ।
कनक कलस मंडित मुकुर देषत होत अचम्भ ॥४७॥
चोरिय मण्डिय चित चुरस, कनक भण्ड बहु आनि ।
मंडप खम्भ सु कनक मय, गूडर जरकस तानि ४८।

छन्द रसावल ।

राण राजेसरं, बीर हिन्दू बरं ।
ऊंच तनु अम्बरं, सुरति सा डंबरं ॥ ४९ ॥

हंस हय सुन्दरं, स्वर्ण साकति धरं ।
प्रगट गति पातुरं, आरुहे आतुरं ॥ ५० ॥
सीस बर सेहरं, जरित हेमं जरं ।
षग्ग करि षंडरं, सेत छत्रं सिरं ॥ ५१ ॥
चारु दो चामरं, कनक दंडं करं ।
बिभ्रए दो नरं, रूप एतं बरं ॥ ५२ ॥
भीर मत्ती पुरं, नेन नारी नरं ।
निरष ए नर बरं, उल्हसं ते उरं ॥ ५३ ॥
बाजि घन घुम्मरं, भूरि चढ़े भरं ।
सेन बहु सिंधुरं, प्रचुर पायक चरं ॥ ५४ ॥
घोष नौवति घुरं, सोर वन्दी सुरं ।
धरनि रज धुन्धरं, ढंकियं दिनकरं ॥ ५५ ॥
सोषि सलिता सरं, थान रिपु थर हरं ।
अमग मग्गं परं, पत्त पहु पुर धरं ॥ ५६ ॥
राग रमनी रसं, नाह अद्धी निसं ।
पत्त पुर गोयरं, तूर त्रम्बक घुरं ॥ ५७ ॥
पील मों तें जरे, पार को उच्चरें ।
हिंस ई हेम्बरं, गज्ज घन गैम्बरं ॥ ५८ ॥
सरल सरनाइयं, गायनं गाइयं ।
राग षंभा इती, श्रवन सम्भा इती ॥ ५९ ॥
सोर सग गट्टयं, भोंचपा छुट्टयं ।
बिरुद बन्दी ददै, सरस जै जै सदै ॥ ६० ॥

रूप नैरं रली, गोरि घन ऊछली ।
सैन सिंगारयं, सज्जि पैं सारयं ॥ ६१ ॥
बज्जनं बज्जई, गेन घन गज्जई ।
गावही गीतयं, वास रस रीतयं ॥ ६२ ॥
कीन निवछावरी, सू हवं सुन्दरी ।
स्वर्ण सालङ्करी, मुत्ति थारम्भरी ॥ ६३ ॥
उछरैं दामयं, रूप अभिराभयं ।
इन्द्र ज्यों वर्षयं, बन्दि बहु हर्षयं ॥ ६४ ॥
मांन रठोर के, द्वार कुल मोर के ।
तोरनं बन्दियं, अधिक आनन्दियं ॥ ६५ ॥
राजसी रान जू, प्रबल षग प्रान जू ।
रठवरि ब्याहई, सद्धि पत्ति साहई ॥ ६६ ॥

॥ कवित्त ॥

ब्याह वेर वपु प्रवर रूप पुत्ती सिंगार रचि ।
नषसिष रूप निधान सोभ पाई सरूप सचि ॥
शिर सेहरो सतेज स्वर्ण मणि जरित कांति कल
सखि चहु ओर समूह गीत गावन्त सु मङ्गल ॥
रठ लीन भली ते रठवरि परमेश्वर रखी सु पत्ति।
श्रीराज राण जगतेशको पति पायो सब हिन्दु पति६७
राजसिंह महाराण सरस कर ग्रहन समय लहि ।
सजि अमोल शृङ्गार कान्ति सुरपति समान कहि ।
सोहत सिर सेहरो कनक नग लाल जरित शुभ ।

कटि सुन्दर करवाल हंस हय चढ़ै थट्ट इभ ॥
बहु भूप सेन बिचि बीर बर हय गय मय गय
ताम हुअ । घन त्रम्बक बर नौवति घुरहि जोतिह
लाल अपार हुअ ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

बहु सेना बिचि बीर बर, अश्व हंस आरोह ।
शीश छत्र वर सेहरो, चामर ढलत सु सोह ॥ ६९ ॥

॥ चन्द्रायन ॥

चामर ढलत सु सोह उवारत द्रव्य अति ।
बन्दी बोलत बिरुद चिरं चीतोरपति ॥
पिखत प्रजा असंखन बुझहिं अप्प पर ।
रङ्ग मण्डप रस रङ्ग प्रपत्ते ईश वर ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

रँग मण्डप बहु रङ्ग रस, प्रवर दुलीच बिछाय ।
रूप सुता रस रङ्ग मैं, सकल सखी समुदाय ॥ ७१ ॥

॥ चन्द्रायन ॥

सकल सखी समुदाय सुहाइय सुन्दरिय ।
मण्डप मध्य सु आइय अभिनव अच्छरिय ॥
बिप्र पढ़त बहु बेद हवन करि करि हवी ।
सूर चन्द सुर साखिय सज्जन संठवी ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

सूर चन्द सुर साखि सब, वर गँठ जोरा बन्धि ।
बन्धी मनु हित गंठि दृढ़, दम्पति उभय सम्बन्धि॥७३॥

॥ कवित्त ॥

दम्पति उभय संबंध कन्त कर ग्रहन किय, सुर पति सची समान सकल गुन रूप श्रिय । कै रति युत रति कन्त एह उनमानिये । निश्चल हुन जन नेह युगं युग जानिये ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

युग युग नेह सु उभय जन, सुरपति सची समान ।
रूप पुत्ति वर रट्ठवरि, राजसिंह महाराण ॥ ७५ ॥

॥ चन्द्रायन ॥

राजसिंह महारान संपते चौरि सजि ।
बज्जे बज्जन वृन्द गगन प्रति सद्दि गजि ॥
गावति सूहव गीत कित्ति कल कंठ करि ।
सज्जन मिले समूह कोटि उत्साह करि ॥ ७६ ॥

॥ दोहा ॥

सज्जन आइ मिले सकल, मान कमध्धज गेह ।
चोरी मण्डप चूप चित, नरनायक बहु नेह ॥ ७७ ॥
बरताए मंगल सकल, लिए सु फेरा लच्छि ।
होंस मनाई हीय की, अच्छि सम्पतिय अच्छि॥७८॥
सन्तोषे नेगी सकल, दये घने धन दान ।
चोकी कमधज्जी चढे, राजसिंह महाराण ॥ ७६ ॥

॥ कवित्त ॥

राजसिंह महाराण प्रिया रठौर सुपरनिय ।

रूप पुति जनु रंभ उभय कुल लज्ज सुधरनिय ॥
धनि हिन्दू पति धीर प्रवर स्त्री पन पालन ।
गो ब्राह्मन तिय गनहि टेक गृहि संकट टालन ॥
हिन्दवान हट्ट रखन हठी बल असुरेस बिडार कह ।
जगतेश रांण सुत जग जयो कलह केलि जय कार कह ॥ ८० ॥

॥ दोहा ॥

कलह केलि जह तह करत, ए असुरेस अनिट्ठ ।
जनम्यो एह कलंकि जनु, दिल्ली पति अति दिट्ठ ॥८१॥

॥ कबित्त ॥

दिल्ली पति अति ढिठ साहि औरङ्ग प्रेत सम ।
अतिदल बल असुरेस, अवनि सद्धत करि उद्धम ॥
देश देश पति दमत गृहत पर भूमि नगर गढ़ ।
बृद्धि करत निज बंश दुट्ठ दीदार मंत दृढ़ ॥
आधीन किए जिन अवनि पति कमधज कछवाहा प्रभृति । श्री राज रांण जगतेश के, गिन्यो साहि अकतूल गति ॥ ८२ ॥

॥ दोहा ॥

राज रांण जगतेश के मंडिय आलम मान ।
रूपसिंह रठौर धिय, परनी प्रिया प्रधान ॥ ८३ ॥

॥ कवित्त ॥

परनि रट्ठवरि प्रिया घोष नोवत्ति घुरंतह ।

कर मुकलावनि करत होत उच्छाह अनन्तह ॥
गावत सूहव गीत नारि बहु मिलि मृग नैंनिय ।
हरषित चित्त हसन्ति परस्पर करत सु सैंनिय ॥
उछरन्त मुत्ति कंचन अधिक घन जाचक जन घर
भरिय । श्री राज सिंह राना सबल, बिश्व सकल
जस बिस्तरिय ॥ ८४ ॥

छन्द पद्धरिय ।

बिछुरिय सयल संसार बत्त, ए राज सिंह राना
उमत्त । मिंझयौ सु जिनहि पतिसाह मांनि, परनी
सु रूप पुत्ती प्रधान ॥ ८५ ॥

दाइजा तास रठोर देत, सचि मानसिंह राजा
सहेत । बारुन सु छहों ऋतु मद बहन्त, पिखन्त रूप
पर दल पुलन्त ॥ ८६ ॥

मंडैं न ओरि करि आइ मुख, भूलियहि पेखि
जिन प्यास भूख । सुण्डाल किधों अंजन सुमेर,
ढाहन सु बङ्क गढ़ करन ढेर ॥ ८७ ॥

सुभ दरस जास सेना सिंगार, हरषन्त युद्ध मन्नै
न हार । ठनकन्त कनक घंटा ठनक्क, घमकन्त चरन
घुघरू घनंक ॥ ८८ ॥

शृंखला लोह लंगर सभार, आने न चित्त
अंकुस प्रहार । सिन्दूर चँवर बर सीस सोह, पट कूल
झूल पुठहिं प्ररोह ॥ ८९ ॥

ऐराक अश्व आरब उतंग, चंचल सचाल जिन रूप चंग । कांबोज कछि हय काश्मीर, तत्ते तुषार जनु छुट्टि तीर ॥ ८० ॥

पढ़ि पानि पन्थ अर पवन पन्थ, गिनि कनक तोल मोलह सु ग्रंथ । बङ्गाल बाजि वर बिविध वान, षंधारि षेंग षिति खुरासान ॥ ८१ ॥

साकति सुवर्ण वर सकल साजि, बनि रवि तुरङ्ग उपम सु बाजि । धमकन्त धरनि जिन पय धमङ्क, भिलती सु झूल मुख मल झलङ्क ॥ ८२ ॥

खजमति सुदार दीनी खवासि, रम्भा समान तनु रूप राशि । दासी सु जान नव रूप देह, जानन्त मन्त पर चित्त जेह ॥ ८३ ॥

भूषन सु हेम नग जरित भव्य, दीने अपार कञ्चन सु द्रव्य । मुक्ताफल गुरु बहु मोल माल, भल भेट करे कमधज भुवाल ॥ ८४ ॥

मृदु फास कनक तोलह महन्त, जरबाफ वसन दुति जिगमिगन्त । पटकूल और कहतैं न पार, सुखपाल सेज चारे सु सार ॥ ८५ ॥

दाइजा एह नृप मान दीन, महिराय सकल भूपति प्रवीन । मृगमद कपूर केसरि महक्क, दिसि पूरि सुरभि डंबरु डहक्क ॥ ८६ ॥

अर्चै यषि कर्द्दम सकल अंग, रस रीति रखि

रट्ठौर रङ्क । भल भाव भक्ति भोजन सु भष्य, पूरी यु षन्ति नव नव प्रत्यक्ष ॥ ८७ ॥

महाराण दान जनु मेघमंड, उंनयौं कनक धारा अखण्ड । याचकनि चित्त पूरी जगीस, अभिनवा इंद मेवार ईश ॥ ८८ ॥

चतुरंग चंग सेना सँजुत्त, राजेश राण जगतेश पुत्त । रट्ठौरि रानि व्याही सुरंग, आये यु उदय पुर बर उमंग ॥ ८९ ॥

सिंगारि नगर किन्नौ सुरूप, प्रति द्वार तुंग तोरन अनूप । दरसन्त कन्तिमणि द्यौसकार । हीरा प्रवाल मणि मुत्ति हार ॥ १०० ॥

जरबाफ बसन बहु मुकर जोति, किरनाल किरन तिन इक्क होति । महमहति सुरभि वर पुष्प माल, बहु भौंर भवत सोभा विशाल ॥ १०१ ॥

बाजार चित्र कीने विचित्र, पट कूल जरी मुख-मल पवित्र । सिंगारि हट्ट पट्टन सु चंग, अति सोह साज तोरन उतंग ॥ १०२ ॥

नागरिय नारि बहु बरनि नेह, शृंगार सकल सजि सजि सुगेह । गावंत धवल मंगल सुगीत, रम-नीक कंठ कलकंठ रीति ॥ १०३ ॥

उतमांग पूर्ण कुंभह अनूप, भल सोंन वँदावहिं सँमुष भूप । प्रभु धरत मध्य सोवन पुनीत, ए राज

सिंह राना अजीत ॥ १०४ ॥

अति मिलिय प्रजा मनु दधि उलट्ट, पिखंत चित्र नर नारि थट्ट । गोरी अनेक चढ़ि गौष गौष, पेखैं नरींद पावंत पोष ॥ १०५ ॥

यों हिंदुनाह निय महल आइ, घुरतें अनेक बाजित्र घाइ । कुल देवि मान पूजा सु कीन, निति नित्य सुख विलसैं नवीन ॥ १०६ ॥

निति निति सुख नवीन रांण विलसै राजेसर ।

॥ कवित्त ॥

लच्छि लाह यौं लेत लेत ज्यों लाह लच्छि वर ॥ देत अश्व बहु दान सूर ऊगम सोवन सज । पाटंबर शिर पाव गिरुय गज्ज'त देत गज ॥ मोतीनि माल सोवन महुर मौज देत महाराण महि । इन होड करैं का नृप अवर कथन एह कवि मान कहि ॥ १०७ ॥

इति श्री मन्मांन कवि विरचते श्री राजविलास शास्त्रे महाराणा श्रीराजसिंहजी कस्यरूप नगरे पाणिग्रहण वर्णन नाम सप्तम विलासः ॥ ७ ॥

---:o:---

मेद पाट फुनि मुरुधरा, अंतर अचल अपारु ।
तहँ तीरथ सलिता सुतट, रूप चतुर्भुज चारु ॥१॥
देवासुर मानवरु मुनि, आवत जात अनेक ।
बंच्छित दायक लच्छि वर, बंदत नवत बिवेक ॥२॥

बसत एक थल बैर बिन, मृग मृगपति अहि मोर ।
मिलत देव दानव सुमन, यदुपति महिमा जोर ॥३॥
ता तीरथ भेटन सुहरि, उपज्यौ हर्ष अपार ।
राजसिंह महराणा तब, सजि दल बल श्रीकार ॥४॥
बढ़ी अवाज सु सकल बसु, बजत निसाननि बंब ।
सजे सूर सामंत नृपु, आनंदित अबिलंब ॥ ५॥

छन्द पद्धरी ।

अविलंब सज्जि दल वल अभंग, चढ़ि चित्र-कोट पति चातुरंग । पटकूल बिबिधि उन्नत पताक, नौबति निसांन बज्जत एराक ॥ ६ ॥

सिंधुर कपोल पट मद स्रवंत, निर्झरन जानि गिरवर झरंत । गुमगुमत भौंर गन परि सुभीर, गरजंत सजल जनु घन गुहीर ॥ ७ ॥

सत्तंग चंग घर संलगंत, सिंदूर तेल शीशहिँ सुभंत । संढुरत चौंर सिर अव सुसेत, मह सुंडदंड सोभा समेत ॥ ८ ॥

दुति विमल युगल दृढ़ दिग्घ दंत, धरहरत कोट जिन जोर दिंत । ठननंकि नद्द बहु बीर घंट, उनमूरि विटपि नंषत उझंट ॥ ९ ॥

नूपर सु पाइ घुँघरूनि नाद, रुन झुनत चलत जनु वदत वाद । जंजरित भार संकर जंजीर. संचलत चाल चंचल समीर ॥ १० ॥

लहलहत मरुत युत लंब केतु, बैरष सुढाल ढ़लकंत सेतु। पभनंत धत्त धत पीलवान, तपनीय करांकुस तरित जांन ॥ ११ ॥

चर षीरु अगर चहुंघां चलंत, पय इक्षु भरत विरुदनि वदंत। वनि पिट्ठ डोल नौबति निसान, सुंडाल सकल सुरपति समान ॥ १२ ॥

अब्बी एराक आरब उपन्न, काश्मीर कच्छि कोकनि सुकन्न। कांबोज जात काबिल कलिंग, सेंधवि सुवीर सिंहलि सुअंग ॥ १३ ॥

पय पंथ पौन पथके प्रधान, बंगाल चाल बर विविधि बान। मंजन सुरंग लाषी सुमोर, गंगा तरंग गुलरंग गोर ॥ १४ ॥

हरियाल हरित हीर हरि हंस, किरडै कुमैन चंपक सुवंस। सुक पक्ष चास चंचल सलील, अलि रोझ रंग अँबरस असील ॥ १५ ॥

किलकिले कातिले हय कंधाल, तुरकी रु ताजि गरु रंग साल। संजाब बोर मुसकी सतेज, हेषनि सहेष हेषत सहेज ॥ १६ ॥

सिंगार सार साकति सुवर्ण, जिगमगति जोति नग अधिक अर्ण। गुंथिय सुबेनि खंधहि सुमंत, ततथेइ तांन नट ज्यों नचंत ॥ १७ ॥

परवरिय सजर परवर सभार, पहुचैं न पंखि

पाइनि प्रचार । आरुहे तिनहि भट नृप अनेक, सामंत मत्त साधर्म टेक ।। १८ ।।

विरुदेत बीर आजान बाहु, मज सिलह कवच सुन्दर सनाहु । संग्राम काम जिन अचल सीम, भारत समत्थ जनु अङ्ग भीम ॥ १९ ॥

चोघण्ट चक्र चोरथ सुचंग, जिन जुत्त धुरा चंचल तुरंग । चकडोल चारु कंचन सु कुम्भ, संभरिय हेम धन रूप रंभ ॥ २० ॥

उत्तङ्ग चक्र गंत्री अनूप, सोरठिय सेन जो ए सरूप । घ्रनमंकि ग्रीव घुंघरिन माल, झणनंकि चरण झंझर सु साल ॥ २१ ॥

बिन हङ्क सङ्क गति गन्धबाह, सुर अंग जरित सोवन सराह । बैठे सु वन्ध वर बहिल वान । पंचांग वास सुन्दर सयान ॥ २२ ॥

पयदल पयोद दल ज्यों अपार, उन्नत सु अंग जंगहि जुधार । करवाल कुन्त कोदण्ड चण्ड, सिप्पर सु तौंनधर रन बितण्ड ॥ २३ ॥

धसमसत धपत धर तोब धार, बेधंत पत्र गोरी प्रहार । पति भक्त सक्ति सायुध सु जोध, कल हान थान केहरि सक्रोध ॥ २४ ॥

दल प्रबल मध्य दीपै दिवान, रबि विम्ब रूप राजेश रान । एराकि अश्व आरोह जोह, नग हेम

जरित शाकति समोह ॥ २५ ॥

सिरिछत्र सहस दिनकर समान, चामर ढलंत गोषीर वान । बिरुदेत विरुद बोलत सु बोल, जय हिन्दु नाह सासन अडोल ॥ २६ ॥

केदार राय कट्टन कलङ्क, पापिन प्रयाग हर पाप पंक । महुवान राय गङ्गा समान, असुरान राय उत्थपन थान ॥ २७ ॥

उनमत्त राय अंकुश प्रहार, सामन्त राय बर सिर सिंगार । असमत्थ राय उद्धरन धीर, बंकाधिराय बन्धन सु बीर ॥ २८ ॥

दातार राय जलधर सु दान, तप तेज राय भल हलत भान । उत्तंगराय सिरि छत्र एक, इहि भन्ति बदत बन्दी अनेक ॥ २९ ॥

षुरतार मार धरहरिय सोनि, झलझलिय जलधि जग्गीय योनि । षल गृहनि परिय खलभल संपूर, उडि रेनु गेनु अरबरिय सूर ॥ ३० ॥

कीजन्त राह मह सैल कट्टि । क्षितिरुह सु क्षीन बन सघन षुट्टि । यल बहत नीर थल नीर ठाह, उरझै कुरंग केहरि बराह ॥ ३१ ॥

आवन्त पेसकस प्रति दिसान, बहु नालबन्ध नृप भरत आन । पर नृपति किते बन्धन परन्त, धनराशि जास कोसहि धरन्त ॥ ३२ ॥

हय हेष हेष गजराज गाज, करभनि कराह नर वर समाज । कह कह विसाल कल रव सु सोर, बबरिय बहरि दिसि बिदिसि ओर ॥ ३३ ॥

डगमगति दुर्ग थरहर्रति खंड । बन गहन दुरत दुज्जन बितंड । राजेस रान सु पयान साल, थर-हरति दिल्लि जनु मुङ्ग थाल ॥ ३४ ॥

॥ कवित्त ॥

थरहरि आसुरथान षान सुलतान ससंकिय ।
भू प्रियानि भामिनी हीय हहरति हर लंकिय ॥
टुरति सु फिरति दरीनि बाल निज रुदत विमुक्कति
हार डोर सु हमेल तुटत भूषन बन नक्कति ॥
पर भूमि नगर पुर उजरि प्रज दिसि दिसि बढिय सुदंद अति । बिन बुद्धि बिकल अरि कुल सकल चढ़त निसनि चित्रकोट पति ॥ ३५ ॥
सिन्धुर अश्व सिंगारि लछि नग हेम लेइ लख ।
कन्या बर करबाल माल मुगताफल सनमुख ॥
आवत भेट अनेक अनमि लुलि लुलि पय लग्गत ।
गति मति तजत गइन्द्र जब सु कण्ठीर बज्ज गत।
भय छाह गीर बंके सुभर चलत चंड चित चोर गहि । राजेस राण सु पयान सुनि मिलत अमिल रखन सु महि ॥ ३६ ॥
गहिल गात गुजरात शीत चढ़ि सोरठ संकत ।

मालव जन मुख सुरभि षान धर होत सु षण्डित ।
पूरब जनपद प्रचलि वढ़िग बङ्गाल उदङ्गल ।
काश्मीर सु कलिंग कूह फुट्टी कुरुजंगल ।
पंजाब पञ्च पथ विचलि प्रज गोर सिंधु धर गिरत
गढ़ । राजेस राण सु पयान सुनि दिग्गजहू न
रहन्त दृढ़ ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

कहि पयान महारान को, को बरनैं कवि इन्द ।
कुम्भ पिट्ठि तह कसमसत, फन संकुरति फुनिन्द ॥३८॥
गज्जनु घोष गजादि रव, तुरगति तरल तरंग ।
दिसि पूरित महाराण दल, सागर ज्यों महि संग॥३९॥
इहि परि घन आडम्बरहि, कूच मुकाम करन्त ।
पत्ते तीरथ पास पहु, हृदय सु हरष धरन्त ॥ ४० ॥
कनक कुंम्भ धज दण्ड युत, सोभति सिषर उतंग ।
मण्डप बहु मत वारनैं, सहसक षन्त सुचंग ॥४१॥
देवालय देखन्त दृग, ठरे सुधा जन साज ।
मुक्ताफल अक्षत समुष, सु बधाए वृजराज ॥४२॥

॥ कवित्त ॥

सु बधाए वृजराज दृग सु देवालय देखत ।
कनक रजत कर कुसुम अमल मुक्ताफल अक्षत ॥
करि अंजलि क्कर कमल विनमि किन्नौ सिर साबृत
भगति भाव भर हृदय जयतु यदुपतिमुख जंपत ॥

डेरा उतंग दिय दिशि विदिशि राजद्वार हय गय हसम। बाजार चोक त्रिक वस्तु बहु सोह सकल श्री नगर सम ॥ ४३ ॥
प्रभु पद पूजन प्रथम स्नान किन्नै सु अंग शुचि।
विमल बसन पहिरिय विचित्र रवि सरिस रूप रचि
कस्तूरी केसर कपूर हिंगलु मलया गिरि।
घनयक्ष कर्दम घोल भार कुंदन कचोल भृत।
एक सो आठ वर रूप के भरे कुंभ गंगादि जल।
कुमकुमा कुसुम केसरि मलय मधि कपूर मृगमद सकल ॥ ४४ ॥
दधि मधु घृत गोखीर षंड तंडुल पंचामृत।
बर मंडक पकवान विविध तीवन छतीस कृत ॥
अमृत फल सरदा अनार सहकार सदाफल।
केला कमरख कलित सेव राइनि सीताफल ॥
श्रीफल बिदाम न्योजा सरस पिण्ड खजूरि चिरोंजि युत। अखरोट दाख पिसिता प्रमुख को मेवा कहि बरनवत ॥ ४५ ॥
अगररु तगरु अनाइ प्रचुर पुञ्जीनि गंज किय।
तज पत्रज रु तमाल जायफल लोंग एलचिय ॥
नागबेलि दल सदल चारु चोवा अबीर अति।
अतर जवादि गुलाल कुसुम चोसर अनेक भति।
वादित्र गीत नाटिक विविध आरति मंगल दीप

दुति । धज छत्र चोर आहूत विधि सकल सज्ज
किय हिन्दु पति ॥ ४६ ॥
श्रीपति ग्रह सिंगार षंभ जरवाफ पटम्बर ।
बन्धे चन्द्रोपम बिचित्र मुक्ता मनि सुन्दर ॥
बन्धि द्वार तोरन सुथार पटकूल मुकुर मय ।
बिबिध कुसुम मण्डप बनाय रचि तह रंभालय ॥
तिन मध्य सिंहासन कनक को कमलापति बैठन
सु किय । स्वस्तिक सवारि पंचधान के दीप धूप
फल फूल श्रिय ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

दीप धूप फल फूल श्रिय, पसरति सुरति समीर ।
गीत नृत्य बादित्र धुनि, गरजत गगन गंभीर ॥४८
इत्यादिक अविलंब तें, मंगल सकल मिलाय ।
हरषे हिन्दूपति सु हिय, पूजन श्रीपति पाइ ॥४९॥
सकल सेन सामन्त युत, अश्व हंस आरोह ।
घन निसान नौबति घुरत, चामर ढलत सु सोह ॥५०॥
बोलत ब्रहु कवि बर विरुद, हिन्दूपति हरषंत ।
प्रतिदिशि दुब्बल दीन प्रति बरषा धन बरषन्त ॥५१॥
अनुक्रमि हरि गृह आइके, देषि प्रभू दीदार ।
रोमांचित चित अङ्ग रुचि, जंपत जय जयकार ॥५२॥

॥ कवित्त ॥

जय यदुपति जगंनाथ जगतरक्षक जगजीवन ।

जगहितकर जगजनक निखिल जग दैत्य निकंदन
केशव श्रीपति कृष्ण मदनमोहन मधुसूदन ।
माधव महित मुरारि मान हरिवंश सु मंडन ॥
गिरिधर मुकुन्द गोविन्द गनि गोवर्द्धनधर गरुर-
ध्वज । गोपाल गदाधर शंखधर चक्रपानि चौबाहु
बृज ॥ ५३ ॥

वासुदेप बिधु विष्णु वेष बावन बलि बन्धन
बीठल कुंजबिहारि सु ब्रज बृन्दावन भूषन ॥
बन्सीधर विख्यात बिश्व रूपक बिश्वम्भर ।
बनमाली बैकुंठनाथ वसुपाल बेद पर ।
बाराह बृषा कपि बिस्व बल विहित त्रिबिक्रम
बिमल मति । बसुदेव नन्द वारिद बरन बारन बर
बारुन विपति ॥ ५४ ॥

पुरुषोत्तत सु पुरान पुरुष पारग परमेशर ।
पद्मनाभ पूरन प्रताप पावन पीतांबर ॥
पुण्डरीक लोचन प्रमान पावक मुख पीवन ।
श्रीवछ लंछन शौरि श्याम सुन्दर रु श्याम घन ।
अहिसेन अधोक्षज अच्युत अज अघ बक बच्छ अरिष्ट
अरि । मह उदधि मथनरु अनन्त मति हत कैटभ
रखिकेश हरि ॥ ५५ ॥

कमल नयन कन्सारि केशिभंजन कमलापति ।
कुंजन सानिधिकार दुष्ट दलमलनं दलनदिति ॥

सारंगपानि सभाग नाग नत्थन नारायन।
सिंधु सयन कर सुखद पुन्य तीरथ पारायन॥
दामोदर द्वारावति धनी यज्ञ मर्त्य संकलित यश।
जय जय सु जनार्दन जगत गुरु राधा बल्लभ रास रस५६
जयतु यशोमति नंद नंदनन्दन नरकांतक।
गोपी प्रिय दधि गृहन कालयवनहिं उपशांतक॥
मधु मुर मर्द्दन दुग्रन हमसि लघु पन माषन हर।
चकचूरन चाणूर सबल शिशुपाल क्षयङ्कर॥
देवकी नन्द रवि कोटि दुति जरा सिन्धु सम जंग जय। दुर्योधन करन दुसासनह क्षिति अनेक खल कीन षय॥ ५७॥

करिके ब्रज पर कोप मुसुलधारनि घन मंडिय।
बद्दल वसुमति व्योम एक करि अधिक उमंडिय॥
उदक चढ़त आकाश गोप गोपी सब गइयनि।
गोवर्द्धन गिरि गह्यो भीर पत्तो निज भइयनि॥
बैराट रूप रचि विष्णु तब कर अंगुरि पर धरि अचल। बरसन्त सत्त अहनिशि अवधि सो संकट टारयौ सकल॥ ५८॥

ध्रुव को ध्रुव करि धरयौ पैज प्रहलाद संपूरिय।
द्रूपद सुता दुकूल बृद्धि करि कीचक चूरिय॥
अम्बरीष उद्धरयौ सधन किन्नौ सु सुदामा।
दृष्टि त्रिलोचन दीन रखि पन रुष मनिरामा॥

भय भारत पारथ सारथिय रखि लये टिट्टिभिय सुत । उद्धरिय अहल्या आप हरि गज रख्यो गाहनि गृहत ॥ ५८ ॥
अज्ज सफल अवतार अज्ज अमृत घन बुट्ठो ।
अज्ज भयो आनन्द अज्ज परमेसर तुट्ठो ॥
अज्ज अमर तरु फल्यो अज्ज सुरमनि संपत्तौ ।
परी मनोरथ माल अज्ज अँग अँग रँग रत्तौ ॥
सुर धेनु अद्य मिलि सुर सुघट राज रिद्धि पत्ते सुरस । प्रगटे निधान मन सुक्ख के देखतही यदुपति दरस ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

इहि परि करि हरि जस अधिक, प्रनमि प्रभू के पाइ ।
अब अनन्त अर्चन सुमति, ललित सहित लय लाइ ६१
सिंहासन हरि सनमुखहिं राजत हिन्दू राय ।
बैठे बड़ बड़ भूप तहँ, इन्द सभा मनु आइ ॥६२॥
दीपति अति दुति दीपकनि, घृत घनसार समेत ।
घसि मृगमद केसरि मलय, द्वारनि करतल देत ॥६३
गावत बहु गन्धर्व गन, बहु वादित्र बजन्त ।
सजि सिंगार बहु सुन्दरी, नव नव नृत्य नचन्त ६४
विप्र वेद धुनि उच्चरत, हवि मेवा मधु होम ।
जव तिल वृहि पटकूल युत, बिलसि ज्वाल बिन धोम६५
कलस रजत के उदक भृत, अष्ठोत्तर सत आनि ।

पूजक पावन द्विज करत, स्नान सु सारँग पानि ६६

छन्द पद्धरिय ।

करते सु स्नान श्रीकन्त काय । बहु गीत नृत्य वादित्र वाइ । ढमके सु ताम गुरु जङ्गि ढोल, निहसे निसान करिके निमोल ॥ ६७ ॥

मधु मेघनाद बज्जे मृदंग, वीणा सु बंस डफ चङ्ग सङ्ग । भरहरिय भेरि भरि भूरि नाद, सुनियै न श्रवन तिन सुनत साद ॥ ६८ ॥

सुनि फेरि संष ऊकार सार, सहनाइ सरल सुर सौख्य कार । घंटाल ताल कन्सार तूर, झल्लरि झनकि सुर सोभ सूर ॥ ६९ ॥

सारंगि पुन्नि सुनिये रसाल, द्रम द्रमकि द्रहकि दुर बरि दुझाल । रुणझुणकि जन्त्र तिन मधुर तन्ति, बज्जत पिनाक रीझत सुमन्ति ॥ ७० ॥

घन भंति भन्ति बादित्र घोष, प्रति सादगेन गज्जत सरोख । खग मृगरु धेनु सुनि नाद सोइ, हत सुद्धि रेह जनु चित्र सोइ ॥ ७१ ॥

बनिता विचित्र बहु बाल वृद्धि, तजि लाजकाज पिखन बिलुधि । रस सरस रीति रचि रंग रौलि, यदुनाथ सीस जल कलस ढोलि ॥ ७२ ॥

सुकुमार सुरभि तनु श्वित सुचंग, सुचि बास संग अंगोछि अंग । कलधौत धौत पट बिमल कंति,

सिर पाग स्वर्ण मनि गन सुभन्ति ॥ ७३ ॥

जामा जरीनि कटि पट सजोति, किरनाल किरनि तिन इक्क होति । अद्‌भुत उतरा संग पीतवान, पंचांग वास पहिरे प्रधान ॥ ७४ ॥

नग लाल स्वर्ण अवतंस सीस, कुण्डल जराउ युग श्रव जगीस । कमनीय कनक नग कण्ठ माल, बर मुत्ति माल मौक्तिक विसाल ॥ ७५ ॥

उर बसी हेम मानिक अनूप, पन्ना प्रवाल पुषराज जूप । बहिरषाबाहु युग बाजु बन्ध, सुश्री करत्त सोवन सबन्ध ॥ ७६ ॥

बरबीर बलय बेढिम सुवर्ण, जिगमिगति ज्योति नग अधिक अर्ण । मुद्रिका पानि पल्लव प्रधान, नव रंग रत्न नव ग्रह समान ॥ ७७ ॥

मुरली प्रवाल कर अधर मध्य, सु प्रत्यक्ष जानि हरि राग मध्य । मेखला स्वर्ण कटि रत्नसार, पद्‌करी पाइ बहु धन प्रकार ॥ ७८ ॥

इहि भंति अलंकरि सकल अंग, सजि पक्ष छत्र शिर वर सुचंग । कस्तूरि मलय केसरि कपूर, कुंदन कचोल भरि भरि सँपूर ॥७९॥

भल चरन जानु कर अन्स भाल, उर उदर कंठ भुज श्रवन साल । हरि अरचि अतर चोवा जवादि, अरगजा गन्धि सु अबीर आदि ॥ ८० ॥

चम्पक गुलाब जूही चमेलि, सेवन्ति सुरभि रुचि रायबेलि । केवरा करणि केतकी कुन्द, मालती माल मचकुन्द वृन्द ॥ ८१ ॥

सतपत्र दवन मुग्गर सुवास, गुमगुमत भौंर गन गन्ध आस । डहडहति अवति रस पुष्प दाम, ठहराय ठवत हरि कंठ ठाम ॥ ८२ ॥

लोवान अगर चन्दन अबीर, महमहिय धूप धोमहि समीर । सुरलोक सुरभि संपत्त सोइ, सुरनाय सकल सुर हरष होइ ॥ ८३ ॥

बर कनक नाल सु बिसाल माहिं, संजोइ दीप सह सक समाहि । जिगमिगति योति तम छोति हारि, यों साँइ सँमुख आरति उतारि ॥ ८४ ॥

॥ कवित्त ॥

आरति दीप उतारि जपत जयकार नृपति जन ।
अव सुभोग हरि जोग विम्र ढोवन्त वियक्खन ॥
कञ्चन थाल कचोल कनक भृंगार गंग जल ।
मेवा बहु मिष्ठान तप्त सुरही घृत तंदुल ॥
पूपिका सघृत तीवन प्रचुर सक्कर अमृत दधि सहित । सु अघाइ कीन मुख हच्छ शुचि तदनुसार तम्बोल धृत ॥ ८५ ॥
सकल सूर सामन्त अंग चरचे यषि कर्दम ।
घसि केसरि घनसार मलय मृगमद सोंधे सम ॥

अतर जवादि अबीर चारु चोवा फुलेल बर।
कुसुम माल तिन कंठ सुरभि पसरत साडंबर॥
अम्बर तुरंग तरुवर सधर उड़त सु लाल गुलाल
अति। बढ़ि रङ्ग बिलास महास मनु संध्या राग
समान थिति॥ ८६॥

॥ दोहा॥

बंटिय मोहन भोग बर' मेवा घन मिष्ठान।
चरनोदक तुलसी सु दल, सकल लेत सनमान॥८७॥
स्वर्ण कुम्भ भरि स्वर्ण धन, रजत कुम्भ भरि रूप॥
करि कृष्णार्पण हरि सुकजि, भरि भंडार सु भूप ८८
मौतिक स्वस्तिक लाल मधि, लीलक पट अभिराम
घंट कनक धज दंड सों, धज बन्धी हरिधाम॥८९॥
बैठे सायुध सुत सहित, रूप तुला महारान।
जलधर ज्यों जग याचकनि, देत सु बंछित दान ९०
इहिं पर सेव अनन्त की, प्रभु करि बिबिध प्रकार
होंस मनाई हीय की, सफल कर्यो अवतार॥९१॥
निज डेरा आए नृपति सकल सेन घन संग।
दिशि दिशि प्रति महाराण दल मनौं महोदधिगंग९२
भल भल भोजन भगति भल पंचामृत रस पोष।
पोषे निज प्रति भट प्रभृति, सुनत होत संतोष॥९३॥

॥ कवित्त॥

घेवर मुत्तिरचूर षंड चनका रु पताशा।

गिन्दोरा दहिबरा दोवठा षाजा षासा ॥
पैरा खुरमा प्रगट खेलना गुंझा षसषस ।
कलाकन्द कन्सार सरस सीरै सुनिये रस ॥
गुलगुला सकरपारा सबल देखि दमी दादर भसत
इन्द्रसा पान ओला प्रमुख पुरुष नाउं पंडित पढ़त८४
सु जलेबी हेसमी अकबरी औार अमृती ।
पुरी तिनँगिनी सोंठि मठी साबुनी निषूती ॥
फेनी फुनि रेवरी स्वाद घन खण्ड संठेली ।
मुरकी बरफी पीलसार, घनसार संमेली ॥
कलियान साहि कवि मान कहि सक्कर चौकी क्षीर
युत । मिष्ठान विविध पोषे सुभट जैंवत जो जिहि
चित्त रुचत ॥ ८५ ॥

॥ दोहा ॥

सत्त अहो निसि एक सज, प्रतिदिन चढ़त प्रमोद ।
सेवा चढ़ती माइंकी, बरते सघन विनोद ॥ ८६ ॥
करि सुजात हरि भगति करि, करि निज बंछतिकाज
उदयापुर को ऊमहे, राजराण ध्रुव राज ॥ ८७ ॥
घुरि निसानि सु विहांन घन, बनि पताक गन तुंग ।
सजि सिंधुर मदझर सबर, ताते तरल तुरंग ॥ ८८ ॥
सजे सकल सामन्त नृप, दिनकर दुति दीपन्त ।
तिन अग्गें तन तुरक दल, प्रति दिसि दूरि पुलंत८९
सझबाल सुखपाल रथ, बेसरि करभ अपार ।

सुधन सलीता तंबु कसि, भरे विबिधि बहु भार १००
कनक तोल ऐराकि हय, चढ़े राण चतुरंग ।
रज रंजित धरि गगन रवि, उरझत दलहि कुरंग१०१॥
प्रान पौंन प्रेरित प्रबल गाज गुहिर गति लोल ।
प्रति दिसि पूरित पेषियहिं, दल ज्येों जलधि कलोल ॥ १०२ ॥

ससकि शेष कूरमि कसकि, मसकि महीधर मेर ।
झलझलि जलनिधि जल झलकि कंपिय बरुन कुबेर१०३
सुखही सुख सों संचरत, लहु लहु करत मुक़ाम ।
पिरकत पुहवि पहार पथ, रजि सजिसहल सकाम॥१०४
अद्भुत थानिक पिक्खि इक, सलिता सलिल समेत ।
निकरी ग्रावा फारि नग, दिसि दिसि शोभा देत१०५
थपि मुक़ाम तिन थान कहि, सहल चढ़े सु सनेह ।
केहरि क्रोड़ कुरंग कपि, गिरिवर पशु अनिगेह १०६
नग बिचि जहँ निकरी नदी, देखत तहां दिवान ।
नीम मात्र तिम नीर मधि, सरवर कौं सहिनान१०७
प्रोहित अरु प्रति भट प्रमुख, पूछे पुरुष पुरान ।
अपरि पूर्ण इन उदक मैं, बन्ध्यो किन बन्धान १०८
कहि प्रोहित तब जोरि कर, कैल पुरा प्रभु काज ।
गुरु सलिता ए गोमती, सलितनि में सिरताज १०९
अमर राण ईंहि आइके, किन्नौ हौ कमठान ।
परि सरिता पय पूर तें, बन्ध्यो नहीं बंधान ११०

बिधि कित्तहि जौ ए बंधै, तौ सर सायर तोल ।
होइ सही कै हिन्दुपति अवनि सुनाम अडोल १११॥
सुनि ऐसी मह प्रभु श्रवन, करी हाम सर काज ।
अनुक्रमि आए उदय पुर, सब दल बद्दल साज ॥११२
संबत सतरासै सु परि, संवच्छर दस सात ।
उतरयौ मास असाढ़ कौ, बिन घन बज्जत बात ११३
श्रावन किंपिन हूं अयौ, भाद्रव परि दुर्भष्य ।
मेघ बिना नवखंड महि, प्रज चल चलिय प्रत्यष्य११४
बिकल भये नर अन्न बिन, भूगहिं अभख भखन्त ।
कन्त तजत निज कामिनी, कामिनि तजत सुकन्त ११५
मात पिता हू निठुर मन, बेंचत बालक बाल ।
रर बरि रंक करंक परि, दिशि दिशि रोर दुकाल॥११६॥
पशु पङ्खी पाए प्रलय, प्रजा प्रलय पावन्त ।
कोपिय काल कराल कलि, धीर न कोइ धरन्त११७

॥ कवित्त ॥

पश्चिम पवन प्रचंड बजत अहनिसि सु बंध बिनु ।
अथिर उतारू आभ प्रात प्रहरेक बहत पुनि ॥
क्रूर अधिक करि किरन तपत मध्यानहिं तापन ।
प्रथलत पश्चिम पहुर अनिल शीतल असुहावन ॥
निशि तार नक्षत्र निम्मल निखरि बद्दल बिद्युत
गाज बिन । भय भीत चिन्ह दुरभक्ष के देखि
सकल जग भौ दुमन ॥ ११८ ॥

छन्द हनुफाल ।

भय भीत परि दुरभक्ष, मज बिचलि चलिय प्रत्यक्ष । प्रगटयौ सु प्रलय प्रचंड । षरहरिय क्षिति नव खण्ड ॥ ११९ ॥

नद नदिय सर सुषि नीर । धनवन्त हूं तजि धीर ॥ तुलि अन्न कंचन तोल ॥ महआघ मिलत न मोल ॥ १२० ॥

उत्तमहु तजि आचार । आदरिय एकाकार । शुचि साच सत सन्तोष । टुरि गए अन्नहि दोष १२१॥

बल बुद्धि बिनय विवेक । कुल जाति पांति सु टेक । परहरिय निय परिवार । लागन्त अन्नहि लार ॥ १२२ ॥

सगपन सयान सु गेह । नर नारि हूं तजि नेह ॥ बिन अन्न जग बिललन्त। भूषेति अभष भषन्त॥१२३॥

उलटे बराक अनन्त । चहुं बरन दीन चवन्त ॥ गृह गृहनि ग्रास उच्छिष्ट । अति अरस बिरस अनिष्ट ॥ १२४ ॥

मागंत कहि मा बाप । कुननन्त करत कलाप। दारिद्र तनु दुरवेश । कश्चित रु बढ़ि नष केश ॥१२५॥

हिल्हरित पट लटकन्त । जन जन सु जिन्ह हटकन्त । कर मध्य खप्पर षण्ड ।, वपु हीन क्षीन वितण्ड ॥ १२६ ॥

भिननन्त मक्खी भूरि। चित चलित चिन्ता पूरि ॥ जहँ जुरत कछु तहँ खात। तजि वर्ग मात रु तात ॥ १२७ ॥

फल फूल मूल रु पात। तरु छालि हू न रहात, ररवरत लोक बराक। खोजन्त भाजी साक ॥१२८॥

मन निठुर करि पिय मात। लहु बाल तजि तजि जात ॥ केईस विक्रय करन्त। निज बाल तजत रुदन्त ॥ १२९ ॥

परि पुहवि रङ्क करङ्क। को गिनति कहि करि अङ्क। दिशि विदिशि बढ़ि दुर्व्वास। पलचरनि पूरिय आस ॥ १३० ॥

पशु पंखि प्रलय प्रजन्त, चुग चार हू न लहंत। मानसहि मानस लग्गि। जहँ तहँ सुरोरति जग्गि॥१३१

इल नगर पुर उज्झंस। नर जात बहु निर्वन्स। मुरझन्त जल विनु मीन। त्यों विश्व अन्न विहीन१३२

॥ कवित्त ॥

बसुमति अन्न बिहीन दीन दुखित तनु दुब्बल।
ससत निसत सरफरत, कितकु तरफरत ग्रहित गल।
कितकु करुन कुननंत मक्खि भिननन्त दसन मुख।
कितकु धीर न धरन्त हीय हहरन्त दुसह दुख ॥
टलटलिय बिटल घन टलबलत गिरत परत अन्तक हरत।। हट श्रेणि चोक त्रिक उमग मग रङ्क करङ्कति ररबरत॥ १३३ ॥

॥ दोहा ॥

अनाधार असरन असत, आसा भङ्ग अतीव ।
प्रलय होत प्रज पङ्खि पशु, जलचर थलचर जीव१३४
जानि महा दुर्भक्ष जब, दयावन्त दीवान ।
प्रतिपालन जग की प्रजा, मन्त मतैं मति मान१३५
सिखरी बिचि गोमति सलित बंधि महा बंधान ।
करै कोटि धन खरच करि सरबर उदधि समान१३६
प्रजा सकल उहिबिधि पले, भगे भूष दुर्भक्ष ।
अचल सु जस प्रगटै अवनि, सुक्रत मेरु सदृक्ष १३७
ठीक एह ठहराइ कै सज्जि सेन चतुरंग ।
आए गोमति सलित तहं अद्रि अनेक उतंग ॥१३८॥
लेइ सु महुरत सुभ लगन, परठि नीम पायाल ।
लगे नारि नर केइ लष, दूर भगो सु दुकाल १३९॥

॥ कवित्त ॥

संवत्सर दह सत्त सत्त दह संवत सोहग ।
मण्डि महा कमठान जानि दुरभष्य सकल जग ॥
पोस अष्टमिय प्रथम बार मंगल वर दाइय ।
नायक हस्त नक्षत्र सिद्धि वर योग सुहाइय ॥
तिहि दिवस सकल मङ्गल सहित परठि नीम पा-
याल मधि । राजेस राण रचि राज सर नितु नितु
वहु बिलसन्त निधि ॥ १४० ॥
सहस एक गजधर सुमन्त कर कनक रूव गज ।

एक एक गज धर सु अग्ग सत सलपकार सज ॥
बिबुध विश्व कर्म्मा समान सु सयान सलप श्रुत।
बेलि वृक्ष बहु बिध बिचित्र सुर असुर अलंकृत।
लगि बेलदार नर उभय लष क्षिग क्षिति धर
भारन्त खनि। कन्धे कुदाल दन्ताल कषि ते नर
उंभंति लरक्कु गनि॥ १४१ ॥
चउलष प्रबल मजूर लगे कमठान नारि नर।
सकट अद्ध लख सकल वृषभ लख लक्ख महिष वर॥
लक्खक करभ सुलेखि और प्रवहन अपरम्पर।
दिन प्रति सहसदि नार खरच लग्गत साडम्बर॥
प्रति दिशहिं कोस पँच दश परधि हार डोर लगि
गिरि गहन। राजेश राण रवि राज सर धर पद्धर
किय सघन बन॥ १४२॥
सलित पाट सु बिसाल अधिक डोरी अष्टादश।
मध्य पुलिन मरु थल समान चलि सकत न मानस॥
बहतु बाह षट ऋतु प्रवाह बल सीर सजल जल।
सकति थान सोभा निधान तिन तट सोहरि तल॥
थिर थप्पि नीम तिन यह प्रथम पट्टकट्टि पत्थर
प्रबल। घनरहट बरस ढिंकुरी करि सोषि रसातल
जल सकल॥ १४३॥
उग्गम दिसि तिन अग्ग अचल इक कोस सहज तट
तिन अग्गे फुनि नीम दीन दुअ कोश दिग्घ थट॥

गजपग तीस गुहीर साल सु बिसाल साढ़ सत ।
गज समान ग्रापा गरिष्ट मनु मंझि महीभृत ॥
शीशक सु पङ्क चूना सघन चेजागर लक्खक चुनत ।
ढोवन्त सहस नर मिलि सलप सो सुवत्त कहत न बनत ॥ १४४ ॥
घनत केइ नर खानि पल्ल कट्टन्त पहारनि ।
करत ग्रन्स चोरन्स सुघन जंबू रस भारति ॥
गढत केइ गुरु ग्राव सद्ध नीये न टंकि सुर ।
सकटनि केइ धारन्त सबर मिलि मिलि सहसक नर।
ग्रानन्त उमग्गनि मग्ग परि ज्यों पटगर ताना तनत । राजेश राण रवि राज सर सो सुवत्त कहत न बनत ॥ १४५ ॥
सत्त बरस सम्बन्ध नीम सोभन्त लगे नित ।
लगी दिनार सुलक्ख ग्रधिक जल राशि उलिंचत ।
बन्ध्यों तदनु बँधान हिन्दुपति कीन महाहठ ॥
महधन भये मजूर भग्यो दुरभष्य भैर भट ॥
मंगल गावंत मजूर तिय लुम्ब झुम्ब भूषन लसति ।
ग्रासीस बदन्ति ग्रनेक तिय चिरजीवहु चीतोर पति ॥ १४६ ॥
इंद्र सभा ग्रनुहारि सभा सरवर उपकंठहि ।
मंडि ग्राप महाराण ग्रङ्ग उलसत उतकंठहि ॥
सब नर तियनि सुनाइ हुकुम श्रीमुखहिं हंकारत ।

करहु सुधारि सु काम नवल कमठान निहारत ।
चहुँ ओर दरोगा चौकसिय केइ सावधानी करत ।
आलंबि पौनि छत्रीश प्रजहार भोर जग मन हरत१४७
सेढी बुरज सवार चुनत केई चेजागर ।
सिङ्गी काम सपल्लु पल्लु ढोवन्त केइ नर ॥
किते महिष भरि गारि पालि पूरत पर्व्वत सम ।
गाहत केइ गजराज काज दृढ़ बन्ध क्रमं क्रम ॥
केई सु खोर चूना बहत खनत केइ सर मध्य
षिति । राजेश राण रचि राजसर इहि परि किय
आरम्भ अति ॥ १४८ ॥
बरस सत्त बरसन्त प्रबल जलधर रितु पावस ।
मिलि बहु सलित मिलाप जलधि ज्यों जानि महा
जस ॥ सलित भरयौ सु बिसाल पंच दस कोस प्रमा-
नह । गंगाजल गोषीर सुधा सेलरी समानह ॥
जंगम जिहाज सु गढ़ाइ जब जल क्रीड़ा क्रीड़न्त
नृप । शीतल तरङ्ग मारुत सहित हरत ग्रीष्म ऋतु
दाघ तप ॥ १४९ ॥

छन्द हन्सधार ।

पढ़ मन्तह नीम पयाल पइट्ठिय सु विसालह
गज सढ सयं । गजधर द्रग सहस सल्प विधि ग्यायक
बेलदार नर लख वियं ॥ उडह सु अलेख लगे आर-
म्भहि हरषित चित्तरु मुख हसे। राजेस राण महोदधि

रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसे ॥ १५० ॥

गज्जंते जल गभीर गोमती नीर निरन्तर सबल नदी । बंधी गुरु हठ करि उभय अद्रि बिचि वृद्धि पाल अति तुंग बदी ॥ बहु कोश प्रमित दीरघ बलवन्ति दुर्गारूप चहुं दिशि दरसें । राजेश राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १५१ ॥

संख्या के कहे बहू तह सेढी सबल बुरज जानि कसी षरी । तिन उपर महल विपुल अति तुङ्गह कन मोल कोल नीकरी ॥ नव लख लगो धन तिहुन बचो क्रिय लछिवती गुरु पालि लसें । राजेश राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १५२ ॥

जल भर्यो अथग गंग जल जैसो शुचि सुगन्ध शीतल सरसं । षोडस बर कोस सहज गोखीरह सुनिये सब देशहि सुजसं ॥ पीयूष सरिस पय युग मुख पीवत अधिक अमर नर तनु उल्हसें । राजेस राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥१५३॥

मंड्यो मह यज्ञ मिले बहु महिपति द्विज चारन घन भट्ट दलं । गज बाजी यूथ सय सेवक गन जान कि उलटे उदधि दलं ॥ सु प्रतिष्ठा कीन सत्त दह संवत बतीसे उत्तम बरसें । राजेस राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १५४ ॥

मासोतम माह रच्यो सु महोत्सव पेखन आये देव पती । सुर बर तेतीस कोटि सिद्ध साधक जत्थ

जुरे नव नाथ जती ॥ बनि व्योम विभान विष्णु शिव ब्रह्मह विविध कुसुम सुरभित बरसें । राजेश राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १५५ ॥

गन्धर्व नचन्त सु गायन गावत गज्जत नभ घन राग गहे । वादित्र बहूबिध घोष सु बज्जत रवि शशि रथ थिर होइ रहें ॥ वेदंतीय विप्र सु वेद बदन्तह हवन करंत सु सन्त रसें । राजेश राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १५६ ॥

दसमी रु विचार बिचारि विजय दिन सुर प्रतिष्ठो हुअ सुखं । रचि कनक तुला राजन मन रंगहि दूरि करन दारिद्र दुखं ॥ जाचक जन केइ सु कीन अजाचक दान कि पावस घन बरसें । राजेश राण महोदधि रूपहि राज समुद्र रच्यो सुरसें ॥ १५७ ॥

हय दीने दत्त सु केइ हजार करि केई बगसीस किये । दीने बहु ग्राम अनग्गल दोलति युग युग यों जाचक जिये ॥ करिहे को यज्ञ सु इन कलिकालहि यज्ञ सु इन सम जगत जसें । राजेश राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १५८ ॥

धनि धनि तुम बंश पिता तुम धनि धनि धनि जननी जिन उयर धरे । धनि धनि तुम चित्त उदार धराधिप काम सु चिन्तित सफल करे ॥ पुहवीं तुम धन्य सकल हिन्दू पति धनि धनि तुम जीवत

धुरसे । राजेश राण महोदधि रूपहिं राज समुद्र रच्यो सुरसे ॥१५९॥

निरखन्त सरोवर जानि पयोनिधि पालि कि पब्वय रूप पहू । सलिता सम मिलन अधिक जल संचय विलसत जलचर जीव बहू । सारस कल हन्स बतक बग सारस चक्रवाक युग सुक्ख बसें । राजेशर राण महोदधि रूपहिं राज समुद्र रच्यो सुरसें ॥१६०॥

प्रगटे जे तित्थ प्रयाग रु पुष्कर एकलिंग अर्बुद शिखरं । द्वारामति सेतुबन्ध रामेश्वर रेवत गिर मथुरेश वरं ॥ सुकृत तिन दरस स्नान जिन सलिलहिं कलिमल संकट दुष्ट नसें । राजेशर राण महोदधि रूपहि राज समुद्र रच्यो सुरसें ॥ १६१ ॥

गुरु तर कल्लोल मरुत युत गज्जहि जग जन सेवित जास जलं । केई नर नारि चतुष्पद क्रीड़त दिशि दिशि पूरित नीर दलं ॥ आयो इह थान कि क्षीर उदधि इहि भेद पाट महि दरस मिसे । राजेसर राण महोदधि रूपहि राज समुद्र रच्यो सुरसें ॥ १६२ ॥

नैन निरषन्त करहिं द्रुग निरमल स्नान सकल संताप हरे । पय पान करंत सु पीड़ प्रणासहि कवि मुख कित्तिक कित्ति करें ॥ अवतार सफल जिन द्रुग अवलोकित राज सरोवर चित्त रसें । राजेशर राण

महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १६३ ॥

कोटिन धन जिन लग्गौ जिन कमठानहि कोटिक धन युत जग्य कियो । निय नाउ सुजस प्रगट्यो नव खण्डहि जय हिन्दूपति सफल जियो ॥ सुर भवन सुजस बोले इह सुरगुरु बिबुधाधिप सुनि सुनि बिहसे । राजेश्वर राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १६४ ॥

चम्पक सहकार सदाफल चन्दन श्रीफल पुंगी सीयफलं । महतूत अशोक विदाम सरौसिय रम्भा राइनि ताल कुलं ॥ दारिम जम्भीरि दाष बोलसिरी तर वर सरवर सकल दिसें । राजेश्वर राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १६५ ॥

अषियात अचल युग युग अवनीपति निश्चल किय भल निज नामं । ससि रबि सुर शैल अवनिसुर सलितह कन्स मलन शिब बिधि कामं ॥ श्री देवि शिवा सावित्री सुरवर तोलों किति कलानि हसें । राजेश्वर राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १६६ ॥

अम्बर बर पत्र मिषी पयअम्बुधि लेखिनि वज्र सुरेश लिखे । अवदात तऊ परि पारन आवहि राण सु हिन्दू धर्म रखे ॥ सुरही जन सन्त सु विप्र सहायक बसुधा-गयहय धन बगसे । राजेश्वर राण महो-

दधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १६७ ॥

रबिबंश बिभूषन जय हिन्दू रबि तिलक तुही सब हिन्दु जनं। असुरेस उथप्पन बीर अभङ्गह घन दायक तुम सुजस घनं॥ राजे राजेन्द रिधू तुम राजस दौलत काइम प्रति दिवसें। राजेशर राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें॥ १६८ ॥

सविता ज्यों ससी सलिलनिधि ज्यों सर रटिये ज्यों बासर रजनी। केहरि मृग कनक लोह अन्तर मौक्तिक जल कन मुकर मनी॥ इह भांति सु राण असुरपति अन्तर यों उत्तम कवि उपदेसें। राजेशर राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें॥१६९॥

षल खण्डन देव तुम्हारो षग्गह को समरगन होड़ करे। अवनीपति को तुव मौढ़ सुआवहि तोयधि को निज बाहु तिरें॥ जगराण सु नन्द सदा चिरजीवहु बोलत मान सु ज्ञान बसें। राजेशर राण महोदधि रूपहि राज संमुद्द रच्यो सुरसें॥ १७० ॥

॥ कवित्त ॥

सु रच्यो राज समुद्द रूप अट्ठम रयणायर।
राजसिंह महाराण हरष करि हिन्दू बायर॥
उत्तम तीरथ अवनि सफल भव होत संपिखत।
राज नगर रमणीक राज गढ़ सुख छहू ऋतु।
धनि धनि सु बंश पित माय धनि अवनि नाउ

नितु नितु अचल। जगतेश राण पाटे सु जय बद्त मान बानी विमल ॥ १७१ ॥
महियल जितै मंडान दखिये' जिते दिगन्तह ।
सूर जिते संचरैं पवन जेते पसरत्तह ।
जिते दीप अरु जलधि जानि ससि तारक जहँ लग।
जिते वृष्टि जलधार जिते नर नारि रूप जग ॥
इल जितीक अष्ट कुली अचल बसुमति देखिय सम विषम । कवि मान कहे, दिट्टो न कहुं सरवर राज समुद्द सम ॥ १७२ ॥

इति श्रीमन्मान कवि विरचिते श्रीराजविलास शास्त्रे श्री राज समुद्र वर्णन नाम अष्टम विलास: ॥ ८ ॥

:o:

दोहा ।

श्री राजेशर राण जय, जित्तन औरंगजेब ।
षल षंडनि षूमान ए, टलें न ध्रुव ज्यों टेव ॥१॥
देव कहा दानव कहा, असपति कहा यु आइ ।
राजसिंह महाराण सों, जीति न कोई जाइ ॥२॥
अचल रज्ज इक लिंगवर, महियल ज्यों गिरि मेर।
रिधू राण राजेशवर, जिन किय आलम जेर ॥३॥
किहि विधि बित्यो एक लह, उपज्यो क्यो सु उपाइ।
सो संबंध गुथिय सरस, सब प्रति कहो सुनाइ ॥४॥
आदि वैर हिन्दू असुर, धरनि धर्म दुहु काम ।
कोटिक इन बित्ते कलष, सबल करत संग्राम ॥५॥

बसुमति हिंदू नृप बड़े, इला हिंदु आधार ।
धरनि शीश हिंदू धनी, भामिनि ज्यों भरतार ॥६॥
जोर भये महि म्लेच्छ जब, तब हरि जानि तुरंत ।
आप धरे अवतार दस, आनन असुरनि अन्त ॥७॥
इल त्यों हरि अवतार इह, राजसिंह महरांण ।
ओरंग से असुरेस सों जीते जंग जु आंन ॥ ८ ॥
असपति परि ओरंग अति, कूर कपट को कोट ।
जिन मारे बंधन जनक, अल्लह दै बिचि ओट ॥९॥

छन्द पद्धरी ।

दिल्लीस साहि ओरंग दिट्ठ, रुक्के व पिता रख्यहि बइट्ठ । विश्वास देइ तिन हने बंधु, ऐसे ऐसु दुष्ट उर रद्य अन्धु ॥ १० ॥

निय गोत सकल करिकें निकंद, सुलतान भयो छल बल सु छंद । मन्नैन चित पर बुद्धिमंत, दस मुख समान अहमेव वंत ॥ ११ ॥

जिन जीति प्रथम उज्जेनि जंग, सेना असंख कमधज्ज संग । दस सहस बुत्थि पर बुत्थि दिन्न, हय गय अनेक भय छिन्न भिन्न ॥ १२ ॥

संग्राम धोलपुर फुनि सु सज्जि, भय मन्नि साहि सूजा सु भज्जि । पत्तो सु भूमि दरियाव पार, इन साहि भीति तोऊ अपार ॥ १३ ॥

अल्लह सु देइ निज अंतराल, सु मुरादि साहि

उर जानि साल । करकरिय छुरिय लहु बंधु कंठि, गुरु भार बंधि जिन पाप गंठि ॥ १४ ॥

जय पत्त तृतिय अजमेर जुद्ध, बंधू सु साहि दारा बिरुद्ध । सोई कहंत लीनो संहारि, यों सकल सहोदर जर उखारि ॥ १५ ॥

एकल्ल भयो पतिसाह आप, पहु प्रगट कलंकी ज्यों प्रताप । न सुहाइ जास षट दरस नाँउ, धीधिट्ठ दुट्ठ बहु पाप धाउ ॥ १६ ॥

नव लख तुरीय पर वर सनाह, गय सहस पंच मनु वारि वाह । सज होत शीघ्र जिन चढ़त सेंन, रवि चंद बिंब ढके सुरेनु ॥ १७ ॥

जिन साहिजाद पन अप्प जोर, घंघल मचाइ गढ़ कज्ज चोर । दोलतावाद लिन्नो यु दुर्ग्ग, सुलतान तास पहुचाइ स्वर्ग ॥ १८ ॥

गुरु गाढ़देव गढ़ देश गुंड, नृप छत्रसाहि अमु देत दंड । हरिवर्ष हून इक लख हेत, लग्गो जु प्रेत मनु भरव लेत ॥ १९ ॥

फुनि लयो दुर्ग्ग पूना प्रधान, थिर धरिय तत्थ अप्पन सु थान । भारत्थ दक्खनिय राइ भंजि, रघ्यो सु बोल असपत्ति रंजि ॥ २० ॥

बस किंनह बीजापुर विसाल, भरि दंड भूमि रखै भुवाल । इहि भंति दिशा दक्षिनहि आंन, जिन

साहि कौन जानत जिहान ॥ २१ ॥

दिशि पुब्ब सिद्धि आसाम देश, पयपंथ जास तिहु मास पेश । मंडलह सोइ दरियाव मष्ष, जगती सुलई जिन करिग भुष्ष ॥ २२ ॥

कुरु कासमीर कासी कलिंग, वैराट धाट बब्ब-रह बंग । बंगाल गोड़ गुज्जर विदेह, सोरट्ठ सिंधु सोबीर छेह ॥ २३ ॥

मुलतान खांन मरहट्ठ सार, पंजाब पंच पथ सिंधु पार । मेवात मालपद आदि देश, जिन साहि आन विब्बर विशेश ॥ २४ ॥

दरबार जास घन दोइ दीन, अनमिष्ष नैंन ठढ्ढे अधीन । सेवंत जोर युग कर सु ठीक, महाराज राज बर मंडलीक ॥ २५ ॥

उमराव षान इहि बिधि अनेक, प्रनमंत जास पय छंडि टेक । द्वादश हजारि जनु हुकमि दूत, परवार छंडि परदेश पूत ॥ २६ ॥

इक भरत दंड इक मिलत आइ, पारी यहि इक पतिसाह पाइ । इक परत बंदि जसु नृप उधुत्त, परिकर समेत तिय भ्रात पुत्त ॥ २७ ॥

चौरासि अवल्लिय रूप चारु, चौबीस पीरि क्रामाति धार । यप्पै स अप्प तुरकान थान, काजी कतेव कलमा कुरान ॥ २८ ॥

रसना रटंत महमद रसूल, ईदह निवाज रोजा अभूल । बाराह छंडि गो सत्थ बैर, सुदि पष्ष वीय बटै सुषेर ॥ २८ ॥

गरवर वदंत पारसि गुमान, प्रासाद तित्थ षंडे पुरान । महकाल थान मह जीव मंड, ओरंग साहि आलम अदंड ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

करे सोइ असपति कुरस, सब दिन हिंदू सत्थि ।
जिन उज्जैनीं जंग जुरि, लुंठिय असुरनि लुत्थि३१॥
फुनि हुरंम धवला पुरहि, कर लुट्टी कमधज्ज ।
महाराय जसवंत नैं, कोटिक कनकह कज्ज ॥३२॥
संमुख न मिले साहि सों, कूर राय कमधज्ज ।
सिंह रुप जसवतसिंह, जोधपुरा युग रज्ज ॥३३॥
सो दुख सल्लैं साहि उर, गस धरि बढ़ै गैर ।
मुर धरपति महाराय सों, वहै अहो निसि वैर ३४॥
मुंह मिट्ठो रुट्ठो सुमन, पारधि ज्यों सुर पुंगि ।
असपति ओरंग साहियों, कमधज हनन कुरंगि ३५॥

॥ कवित्त ॥

अरवे ओरंगसाहि सुनहु जसवंत सिंह नृप ।
महियल तुम महाराय तरणि ज्यों प्रगट रव्यतप ॥
अब हम मो असपती भये तप पुब्ब भाग बल ।
तुम आवहु हम सेव अधिक तो देहु अप्प इल ॥
है विधि रसूल अब तुम रु हम बहुरि कबहु कर नह बिरस । नन लषे कोइ इह निपुन हू गहिय साहि इहि भंति गस ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

कपट सुलषि कमधज्ज कहि, साहि कहो सो संच।
परि तुम वा यक पलट ते, चिन न करो चल चंच॥३७॥
तिन कारन तुम दुसह तप, जिय हम सह्यो न जाइ।
दीजै हुकुम सु दूरि तें, धर त्यों लीजै धाइ ॥ ३८ ॥

॥ कवित्त ॥

संमुख न मिलो साहि निकट तुम सीस न नाऊं।
बन्दौ तुम बिश्वास और चढती रन आऊं॥ देव
सन्धि दिगपाल रहो रिपु थानहि रक्खन। मैं इह
मीनति होइ और कछु बहुत न अक्खन॥ सुविहान
आन शिर धारिहौं तपै सोइ दिल्ली तषत। कम-
धज्ज राइ जसवंत कहि राखें पतिसाही रषत ॥३९॥

॥ दोहा ॥

नावै ढिग कमधज्ज नृप, सुनियो औरँग साहि।
निफल पुब्बमति जानि निज, मते मंत मन मांहि॥

छन्द पद्धरी।

फुनि रच्यो एक पतिसाह फन्द। निय कैद
करन कमधज नरिन्द॥ फिरि लिख्यो दुतिय फुर-
मान मान। बहु नरम भास राजस विनाम ॥ ४१ ॥
अवनी सुव धारे अधिक आन। परगना एक-
तीसह प्रधान ॥ सजि उभय तुरङ्गम कनक साज।
शिरपाव ऊंच जरकस समाज॥ ४२ ॥
मुख वैन और यों अक्खि मिट्ठ। आलम पगाइ

तुम बिरद इट्ठ ॥ ध्रुव टेक एक तुम याइ धर्म्म । कमधज्ज राय बर ऊँच कर्म्म ॥ ४३ ॥

पतिसाहि थंभ तुम भूमिपाल । दिल्ली सु नगर तुम ही सु ढाल । अहमदाबाद थानह सु ऐन थिर रहो हुकम हम मन्ति चैन ॥ ४४ ॥

सुप्रसंस इती अनुगहि सिखाइ । पतिसाहि वेग दीनो पठाइ ॥ पहुंचो सु दूत महाराज पास। सुव धार अप्पि गुदरे नृहास ॥ ४५ ॥

अहमदाबाद थानह सु अक्खि । सिरपांव आदि गुदरे स सक्खि ॥ राखे सुथान फुरमान राज । बसु-मती बधारह बाजिराज ॥ ४६ ॥

शिरपांव साहि पठयो यु सोइ । तिन सौं अमेल ज्यों तेल तोइ। तिहि कद्य तेहि पहिरयो न ताम । कछु जानि तत्य कलिकूट काम ॥ ४७ ॥

पहुचयो सोइ षावास पानि । महाराय मन्त जनु देव मानि ॥ संतोषि दूत पाठयो साहि ॥ तप-नीय साज हय दीन ताहि ॥ ४८ ॥

शिरपाव मुत्ति माला सतेज । शुभ थान पान आवन सहेज ॥ मनुहारि करी इक राखि मास । पठयो सु दिल्ली पतिसाह पास ॥ ४९ ॥

ओरङ्ग साहि भेजो सु अत्य । परख्यो नरिन्द सख्याव पत्य ॥ पहिराइ अन्य पुरुषहिं सु प्रीति ।

वर हंस तास तनु ते व्यतीत ॥ ५० ॥

ए ए सुबुद्धि कमधज्ज अंग । सब कहत सूर सामन्त संग ॥ घग्ग घल्लि साहि विश्वासघात । महाराय करी मातूल मात ॥ ५१ ॥

पतिसाह जोर किनो प्रपंच । राठोरराय चूक्यो न रंच ॥ जग मज्झ जास तप भाग जोर । किं करे तासु रिपु छल कठोर ॥ ५२ ॥

अवलोकि असुर पति कृत अनीति । भग्गो विसास नृप मन अभीति ॥ अमरष गुमान बाढ्यो अछेह । राखे अमेल जनु अद्रि रेह ॥ ५३ ॥

इक कहे पुब्ब पच्छिम सु एक । पग पगहिं पन्थ भाषा प्रत्येक ॥ धर धरैं इक्क वर सत्थि धर्म्म । कलि करैं इक्क घन म्लेच्छ कर्म्म ॥ ५४ ॥

वाराह इक्क इक सुरहि बैर । इक हनत हक्कि इक करत गैर ॥ इहि भंति उभय नृप भो अमेल । सल्ले सु साहि उर जानि सेल ॥ ५५ ॥

नन छल्यो जाइ कमधज्ज नाह । अभिनव सु बुद्धि अंबुधि अथाह । चढ़ि समुष युद्ध जो करो चूक । इनसो न तऊ जित्तौ अचूक ॥ ५६ ॥

सब एक होइ एहि हिन्दु साज । राजेश राज सगपन सकाज ॥ हाडा नरिन्द गढ़ पति हठाल । भल भाव सिंघ बुन्दी भुवाल ॥ ५७ ॥

तो लेहि दिल्ली चढ़े तुरङ्ग । जुरि और घोर हय बत्थ अंग ॥ वर बीर धीर बल बिकट बंक । सुलतान चित्त यों पत्त संक ॥ ५८ ॥

॥ कवित्त ॥

संकै चित्त सुलतान घोस निसि मन न मिटै डर । जोधपुरा जसवन्तसिंघ महाराइ जोर वर ॥ न मिलै चित्त निराट सैल पाषान रेह सम । असुराइन उत्थपै धरै धर एक्क छत्रि ध्रम ॥ सिरपाव साहि औरंग को पहिरे नहिं कबहूं सु यहु । अति टेक लिये असुरेस सों बैर भाव राखे सु बहु ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

जहां बैर तहां बैर बहु, मेल तहां बहु मेल ।
मन चित भग्गो ना मिलै तैसे तोय रु तेल ॥ ६० ॥

॥ कवित्त ॥

बढ़य बैर तें बैर मिलन तें मिलन बढ़य मन । चित्त वित्त तें बढ़य रिनह तें बढ़य अधिक रिन ॥ बुद्धि बुद्धि तें बढ़य रज्ज तें बढ़य रज्ज सिधि । लोभ लोभ तें बढ़य सिद्धि तें बढय सकल सिधि ॥ बढ़यं सु बीज बर बीज तें मान मान तें बढय महि । अवगाढ़ साहि औरंग तें गाढ़ अधिक राठोर गहि ॥ ६१ ॥

मन भग्गो नन मिलय मिलय नन भग्गो मुत्तिय । खार भग्ग नन बंधे पल्लरै हासु प्रवत्तिय । कोटिक

किये कलाप दूध फट्टो न होय दहि। बाक हीन फिरि बाक किंपि नन होइ लोक कहि॥ तुट्टो सु तार जोरे तऊ परैं गंठि दुहु मज्झ पुन। ओरंग करे सनमान अति मिलै नहीं महाराय मन॥ ६२॥

इक कहि छत्री ऊंच एक तुरकान सु अक्खहिं। बिधि रक्खहि इक बेद राह कुन वाहि करक्खहिं॥ बधै इक्क बाराह इक्क उर हुट्ट सुरहि उरि। रटैं इक्क मुख राम इक्क रसना रसूल ररि॥ मन्नै सु इक्क दिशि पुब्ब मन इक पच्छिम दिशि अभिनमय। जसवन्त राय दिल्लीस युग राति द्यौस बादहि रमय६३

॥ दोहा ॥

जसपति राजा जीव तें ससकत भग्गी साहि।
सल्लै आड़ो सेल ज्यों ओरँग के उर मांहि ६४॥

॥ कवित्त ॥

जीवन्ता जसवन्तराय मुरधरहि रहुवर। मिलो न कबहूं मान साहि ओरंग हि सर भर॥ सेंमुख न किय सलाम आन असपती न अक्खिय। कज्ज सु जाम्यो कियो हद्द हिँदवानी रक्खिय॥ महराज सोइ पत्तो मरन ब्रह्म विष्णु शिव जासु बस। ए ए असार संसार इह सार एक युग युग सुजस॥ ६५॥

॥ दोहा ॥

युगल पुत्त जसराज के, युग लहि लहु पन जान।

बरस इक्क पत्ते सु वय, सहसकिरन हस मान ॥६६॥
ते नृप सुत लहु जानि तब, अरि ओरँग सुलतान ।
पिता बैर घन पुत्त सों, पोषन लगा सु प्रान ॥६७॥

॥ कवित्त ॥

बैरी न तजै बैर जानि निज समय जोर बर ।
मूसहि ज्यों मंजार मच्छ ज्यों बगल मज्झ सर ॥ राजा जसपति रह्यो अहोनिशि हम सो अज्झौ । अंगज तिनके एह जोर इनको कुल जज्झौ ॥ पारोध पिशुन ए पत्तले संपति हय गय लेहु सब । चित्त सु साहि ओरंग चित इह ओसर आयो अजब ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

इह ओसर आयो अजब महाराज गय मोष ।
भू असपति हू अब भयौ दूरि गयौ सब दोष ॥६९॥
बैरी थान बिडारिये कहे लोक यों कत्थ ।
यवन सु थप्पो जोधपुर, ए बालक असमत्थ ॥७०॥
राजा बिन को रट्ठबर जुरिहैं हम सों जंग ।
धरो तुरक नृप सुरधरा इह चिन्तय ओरंग ॥७१॥
पठयो दूत सु जोधपुर, करि पतिसाहि किताब।
सकल रट्ठवर सत्थ सों, सो कहि जाइ सिताब॥ ७२ ॥

॥ कवित्त ॥

सकल रट्ठबर सत्थ सुनहु सामन्त सूर बर ।
जे राजा जसवन्त अधिक संचे धन आगर ॥ सो मंगे

सुलतान साहि ओरंग समत्थह । तो सु योधपुर तुम हि सकल मुरधर धर सत्थह ॥ बगसें सु फेरि सुबिहान बर महिरवान फिर होइ मन । षपि जाय षान उमराव तसु धरै सु साहि षजान धन ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

तागीरी न तरकि तुमहिं, मुरधर देश महन्त ।
प्रभु सेवा ते पाइहो, ओरहि अवनि यु अन्त ॥७४॥
इहि पतिसाही रीति अति, कूर न मिट्टय कोइ ।
अचल चलय सलसलय अहि, जल जो उत्थल होइ ॥
सुनियो कमधज्जह सकल, मते मन्त मतिमान ।
पातिसाहि जान्यो पिशुन, अक्खै करि अभिमान ७६

॥ कवित्त ॥

हम जोधपूरा हिंदु धनी हम आदि मुरध्धर । हम कुल इनीन होइ दण्ड दै रहें साहि दर ॥ जो कोपै यवनेश तऊ इह धर शिर सट्टैं । राखै हम रजपूत कूर दानव दल कट्टैं ॥ आसुरी रीति नाहीं इहां धन गृह दै रक्खै धरनि । यों कहो साहि ओरंग सों फुरमावै ऐसी न फुनि ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

जान्यो नृप जसवन्त को पत्तो ही पर लोक ।
ऐसी फुनि औरंग जू फुरमाओ जिनें फोक ॥७८॥
जानो कबहू एह जिन, हम तुम हुकमी होइ ।

धन षट्टैं रक्खे धरनि, षग्ग महाबल षोर ॥७९॥

॥ कवित्त ॥

षेती हम कुल षग्ग षग्ग हम अषय षजानह ।
षग्ग करैं बस षलक नाम हम षग्ग निदानह ॥ षल
दल षंडन षग्ग षेत इच्छत हम षग्गह । छिति रक्षन
फुनि षग्ग अहितु भग्गो इनि अग्गह ॥ षग धार
तित्थ छत्री धरम आवागमनहि अपहरन । बो षग्ग
बन्ध हम सूर सब धरय न साहि षजान धन ॥ ८० ॥

धन षजान नहि धरय करय नन एह नबल कर ।
जे कीनी जसराज सेव सो करिहैं सुन्दर ॥ आगे हू
आलमह भये बड़ बड़े महा भर । किनहि न ऐसी
कीन धरे किन तुरक सुरध्धर । निश्चेयु एह ह्वै है नहीं
रसना ए नर पट्टिहो । कमधज्ज रज्ज करतार किय
महियल सो क्यों मिट्टिहों ॥ ८१ ॥

॥ दोहा ॥

जा ऐसी यवनेस सों जंपहु दो कर जोरि ।
किंपि न दै रट्ठोर कर कैसी लक्ख करोरि ॥८२॥
बेगि गयो दिल्ली बहुरि दूत साहि दरबार ।
सकल उदंत सुनन्त ही असपति कुप्पि अपार ॥८३॥

॥ कवित्त ॥

कितिकं एह कमधज्ज हमहि सत्थैं रखे हठ ।
दोलति हमहि यु दीन सु तो समुझै न षिस सठ८४॥

रक्षा हमारी रहे बहुरि हम सों पग बंधै। राजा करि हम राखि सरयु हम ही पर संधै ॥ कृत हीन सकल कापुरुष ये कुटिल तें यु सूधे करों। असपती साहि ओरंग हों धाराधर भुजबल धरों ॥ ८४ ॥

बैरी ए बिष बेलि फले जनु रूष सरिस फल। जैसो नृप जसवन्त भयो त्योंहीं ए हैं भल ॥ मार-वारि धर मारि बिदिग इन गिन गिन बट्टो। करि पद्धुर गढ़ कोट के बिजन पद तें कट्टो। ल्याऊं सुख जन लच्छि सब कहों सोइ निश्चै करों। असपती साहि ओरंग हों तों भल दिल्ली पै भरों ॥ ८५ ॥

यों कहि करि अभिमान तबल टंकार त्रहं किय। बज्जे चढ़न सुबग्ग हेट हय गय रथ हंकिय। नारि गोर धज नेजवान कमनैत बिबिधि परि। कुहकबान नीसान तोब सब्बान सोर भरि ॥ चतुरं-गिनि सज्जिय असंख चमु जनु उच्छरिय समुद्र जल। बढ़ी अवाज घन सकल बसु जग्गि अग्गि आराब झल ॥ ८६ ॥

सहस तीन सुंडाल मेघ माला बिसाल मनु। अंजन गिरि उनमान अंग चंगह उतंग धनुं ॥ झिलि कपोल मद झरत गुंज मधुकर ग्रहणंतह। दशन सउज्जल दिग्घ घंट घुघरू घ्रणणंतह,। पचरंग झूल पट कूल मय सुझिझयर ढाल सिंदूर सिर। पिलवान

हत्थ अंकुश प्रबल बनि बहु बरन पताक बर ॥ ८७ ॥

उभय लक्ख बर अश्व सजड पर वर सपलानह ।
पंषी वेग पवंग पवन पय पंथ प्रधानह ॥ एराकी
आरबी षंग कबिला षुरसानी । साणोरा सिंहली
कस्थि कांबोज किहाणी । काश्मीर किहाडा को-
कनी चलत जानि मारुत चपल । षुरतार मार धर-
हरिय षिति प्रचलि शैल षुलि ईश पल ॥ ८८ ॥

पयदल सेन प्रचंड करषि कोदंड उदंडह ।
सनध बद्ध सायुद्ध चित्त अहमेव सुचंडह ॥ तोन
सकति कटि तेग कुंत अरु ढाल सुकत्तिय । गुरज हत्थ
किन गरुअ रोस भरि दिट्ठि सुरत्तिय ॥ मुररंत मुंछ
मय मत्त मनु केइ तोव कंधे बहय । धमकंति धरनि
जिन पय धमक रुप्पि पायरिन सुखर हय ॥ ८९ ॥

सुभर रत्थ बहु शस्त्र कवच बगतर कल हंकित ।
षच्चर भरित खजान सहस इक डोरि सु शोभित ॥
बहु बिधि रषत वषत्त करभ भरि भार अनन्तह ।
चढ्यो बाजि चकतेस घोष नोबती घुरन्तह । मचि
सोर जोर रव लोक मुष हय हीसतु गज्जंत गय ।
सुनियै म सद्द घन भरि श्रवन भूमि सकल हयकंप
भय ॥ ९० ॥

सत्तरि षांन सुसत्थ बलिय उमराव बहत्तरि ।
तरु बन घन तुट्टंत पुहवि उन मग्ग मग्ग परि ॥

रवि नभ ढंकिय रेनु चलत गिरि भय चकचूरह । सर सलिता दह सुक्कि पसरि दिसि दिसि दल पूरह । फनधर सभार संकुरिय फन कठिन कुम्भ पुप्परि कटकि । परि पंच कोस सुपराव यहु झंड रुप्पि बहु बिधि झटकि ॥ ८१ ॥

कूंच २ करि षरिग जय २ सकोस षिति । आए गढ़ अजमेर प्रगटि आवाज जगत प्रति । मारवारि मेवार षंड षेरार खरभरि ॥ बागरि छप्पन बहकि डहकि गढवार चित्त डरि । कांबोज कुक्क परि कलकलिय प्रचलिय कच्छ विभच्छ पह । चल-षलिय चहों दिशि चक्क चढ़ि ओरँग साहि प्रतात यह ॥ ८२ ॥

॥ दोहा ॥

गज्जि झंड अजमेर गढ़ अप्प साहि ओरंग ॥
सवा लाख हय सेन सों रहयो सुरढ़ घन रंग ॥ ८३ ॥
सत्य तुरँग सत्तरि सहस सहिजादा सजि सैन ॥
पठयो सुरधर देश पर लछि कमधज्जी लेन ॥ ८४ ॥
सो सिताव आवत सुन्यौ सज्यौ रट्ठवर सत्थ ॥
हय गय पयदल घनह सम सहस बतीस समत्थ ॥ ८५ ॥
जोधपुरह तें यवन दल पंच कोस सु प्रमान ॥
आइ परयो जानकि उदधि आडंबर,असमान ॥ ८६ ॥
अनुग सुक्कि तिन अक्खि इह सुनहु रट्ठवर सूर ॥

करो कलह हम सत्थ कैं सौंपो धन संपूर ॥ ८७ ॥
लेहु निमिष विश्राम लटि आए हो तुम अज्ज ॥
कल्हि सही हम तुम कलह कही बहुरि कमधज्ज ॥८८॥
बित्यौ बासर बत्तही परी निसा तम पूर ॥
छल करि के तब रिपु छलन सजे रट्ठबर सूर ॥ ८८ ॥

॥ कवित्त ॥

अद्ध रयनि तम अधिक छलन रिपु इक्क कियो छल । संढ पंच सय शृंग जोइ युग युगह लाल झल ॥ हंकिय सो वर हेट उभय चर अरि दल अभि-मुष । अप्प चढ़े दिशि अवर लिये वर कटक इक्क लष ॥ पेखिय चिराक प्रद्योत पथ संड समुष धाए असुर ॥ उन तें सुबीर अजगैब के परे आइ अरि सेन पर ॥ १०० ॥

छन्द भुजंगी ।

परे धाइ अरि सेन परि रोस पूरं । सजे सेन सायुद्ध रट्ठोर सूरं ॥ किये कंठ लंकालि कंकालि कूरं । झनंकी यु षग्गी बजी झाक झूरं ॥ १०१ ॥

मची मार मारं जनं मूख मूखे । मिले जानि गो मंडलं सीह भूखे । सरं सोक बज्जी नभं ढंकि सारं । भटक्के घनं सोर आराब भारं ॥ १०२ ॥

घटक्कै धरा धुन्धरं पूरि धोमं । बढ़े बीर बीरार संलग्गि ब्योमं ॥ फुरे योध हत्थं महा कूह

फुट्टी । इतें आसुरी सेन पच्छी उलट्टी ॥ १०३ ॥

धये धींग धींगं धरालं धमक्के । चहों कोद तें लोकपालं चमक्के । जपे इट्ठ जप्पं जुरे जोध जोधं । करो कंक बंके भरे भूरि क्रोधं ॥ १०४ ॥

मुरे सार सारं ननं मुछ मोरे । पटे टट्टरं वान सन्नाह फोरे ॥ धरे शीश नच्चैं कमंधं प्रचंडं । मही भिन्न भिन्नं करे रुंड मुंडं ॥ १०५ ॥

लरें दोन के शीश पच्छैं लटक्कें । कहूं कंठ ज्यों हड्डु जुडे कटंकें । घने घाउ लग्गे किते बीर घूमें । झुकंते धुकंते किते फेरि झूमें ॥ १०६ ॥

हहक्कं तहक्कं किते हायहायं । परे घंषि षित्तं भरे हत्थ पायं । परे दीप मज्झे किते ज्यों पतंगा । उर्छ छेनि छंछे करे होम अंगा ॥ १०७ ॥

भभक्कंत श्रोनं कटे के भसुंडं । बिना दंत दंती परे ह्वै बिहंडं ॥ बहू बान बेधे कुनंनन्ति बाजी । गए चून ह्वै पैदलं मीर गाजी ॥ १०८ ॥

शिवें संग है ऊतमंगा सरोजा । चवंसट्ठि लागी टगी चित्त चोजा । पिये श्रोन पानं बहे बाह पूरं । षहे बाहु जंघा भुजंतं बिरूरं इ १०९ ॥

बिना सत्थ केते परे लत्थ बत्थें । रत्नं रोस रत्ते रुपे पाइ हत्थे ॥ मचे मुठ्ठ युद्धं, मनौं मल्ल मल्लं । अरे मत्त माहिष्ष ज्यों ह्वै अडुल्लें ॥ ११० ॥

किते कातरा काय ज्यों एन कंपैं । नचे नारदं तुंवरु जैति जंपैं ॥ गहक्कैं शिवा चित्त गोमायु गिद्धं । लहक्कैं पशू पंखिनी मंस लुद्धं ॥ १११ ॥

किते डूब जमदाढ़ कट्टैं कटारी । भरं झुंझरा भीम ज्यों रोस भारी ॥ तिनं मोह माया तजे गेह तीयं । पुकारें बकारें मनू छाक पीयं ॥ ११२ ॥

सराहें रु बाहैं किते सेल सेलं । चुवै रत्तआरत्त ज्यों नीर चैलं ॥ तुटें चाप चम्मं धजा तेग त्रानं । बरं युद्ध आनुद्ध में भो बिहानं ॥ ११३ ॥

फिरे पील सूने परे पीलवानं । लुटैं लछि लुंटाक पिक्खे सु प्रानं । हयं नंषि रुंडं नियं छन्द हिंडै । बली तत्थ बड़ हत्थ रट्ठोर तंडै ॥ ११४ ॥

मनो पाथ पाथोधि छंडी मृजादा । सबै सेन सत्थे भगे साहिजादा ॥ भगी सेन सुलतान की सन्निभीतं । बढ़ी जेति कमधज्ज सत्थे वदीतं ॥११५॥

नियं जेति मन्नी यु बग्गे निसानं । जपै देव जे जे सुरंगे न यानं । षलं षंडि षग्गे वरं खेत सुज्झयो । बहू लुत्थि आलुत्थि किन जाइ बज्झयो ॥ ११६ ॥

परे मीर सैयद्द रन इक्क पंती । गिनैं कोंन है पैदलं और दन्ती । भयो षेम षेमं सबै अप्प सत्थें । कहे मान यों छन्द रट्ठोर कत्थें ॥ ११७ ॥

॥ कवित्त ॥

कलह जीति कमधज्ज सेन भग्गी सुलतानी । झंड नेज झकझोरि तोरि डेरा तुरकानी ॥ हय गय लुट्टि हजार लुट्टि केउ लख धन लिन्नो । स्वामि बिना संग्राम कहर अरि दल सं किन्नो । पैंतीश कोश पच्छो फुल्यौ सहिजादा सुबिहान को । पत्ते सुबीर सब जोधपुर हठ रख्यो हिँदुवान को ॥ ११८ ॥

॥ दोहा ॥

परि पुकार अजमेर पुर सुनि ओरंग सु बिहान ।
कमधज जुरि जीते कलह सेन भगी सुलतान ॥ ११९ ॥
जाने हिंदू जोर वर न तजें टेक निदांन ।
कलह किये नावे सुकर सोचे चित सुलतान ॥१२०॥
करते तो हम ए करी राठोरनि सों रारि ।
इन अग्गें फुनि आहटें है पतिसाही हारि ॥१२१॥
फिरि बसीठ फुरमान लिषि पठयो से पतिसाह ।
करन मेल कमधज्ज पें राखन रस दुहु राह ॥१२२॥

॥ कवित्त ॥

बुल्लय बचन बसीठ मिट्ठ घन इट्ठ सुद्ध मन । सुनहु रट्ठवर सूर वीर तुम युद्ध बियक्खन । कीनो हम रण संग प्रबल तुम प्रान परखन ॥ परि तुम बड़ रजपूत राह रखन अभंग रन । हम तुम सु प्रीति ज्यों आदि है त्यों राखहु रस रीति तुम ॥ आखे सु

साहि ओरंग अब भूलि न को रक्खो भरम ॥ १२३ ॥

भूलि न राखहु भरम नरम अति करिग चित्त तिय। सजि चतुरंगिनि सेन प्रबल हय गय पयदल प्रिय ॥ हम पै आवहु हरषि निरषि नृप जसपति नन्दन ॥ रीझि करौं राजेंद्र अप्पि मुरधर आनंदन। इनमें अलीक जो होइ कछु सुक्रत तो हम फोक सब ॥ कमधज्ज सतो सुलतान कहि अलिय टेक मंडो न अब ॥ १२४ ॥

॥ दोहा ॥

अलिय टेक मंडो न अब जंपै यों यवनेश ॥
रस राजस दुहु राखिये करि सब दूरि कलेश ॥१२५॥
मन्नी सब कमधज्ज मिलि शांत लघ्यो सुलतान ॥
नृप सुत करि अग्गै न्टपति सजि दल बल संधान ॥
आए चढ़ि अजमेर गढ़ पय भेटे पतिसाह ॥
नृप सुत यूग किन्नै नजरि असपति चित्त उमाह १२७

॥ कवित्त ॥

इक दह हय गय एक सज्ज सोवन सिंगारिय। मनि इक मुत्तिय माल उभय चामर अधिकारिय ॥ इक करवाल अनूप एक जमदाढ़ सु अच्छिय। पातिसाह प्रति पेस लखइ गरु २ बसु लच्छिय ॥ कमधज्ज करी रस रंग करि भयो मेल दुहुं दीन भल। हरष्यो सु साहि ओरंग हिय आण दाण बरती अचल ॥१२८॥

॥ दोहा ॥

कहि आलम कमधज सुनहु योगिनि पुर हम जाइ।
नृप गुरु सुत करिहे नृपति, बहु सनमान बढ़ाइ १२९॥
तिहि कारन हम सत्य तुम चलो सकल चित चंग।
प्रभु सब करिहैं पद्धरी भूलि न जानहु भंग ॥ १३० ॥
बहु विधि बचन बिसास तें चूक न चिंतय चित्त।
ढिल्लि नेर दिल्लीस सों सब कमधज संपत्त ॥ १३१ ॥
सेव करत नृप सुतन सों बासर बहुतक बित्त।
परि न देत महराय पद असपति चित अपवित्त १३२॥

॥ कवित्त ॥

दिल्ली पति लखि ढिल्ल कथन कमधज्ज कहावहि। पातिशाह परवरदिगार फद गहर लगावहि ॥ हम आए प्रभु हुकुम देश हम हमकूं दिज्जे। यप्पि जोधपुर थान नृपति गुरु सुत नृप किज्जे ॥ सत पुरुष बैन डुल्लैं न सहि ध्रुव सुराह उर धारियहि। रस किये रसहि रस राखिये। अरज इती अवधारियहि ॥ १३३ ॥

सुनि सुबोल सुलतान उलटि उलटी इह आखिय। रह हम तुम कहा रह्यो सो व तुमही चित राखिय ॥ आगे हू तुम ईश वह्यो हमसो गुमान बहु। जुरिग उजेनी जंग सेन हय गय मिंडिय, सहु ॥ फुनि लुट्टि हुरम धवलापुरहि सल्लरीति सल्ले सदृप।

सो राज रीति तुम संगही सोचि कहो रहि क्यों न सुष ॥ १३४ ॥

रयका कनक अरु रूप धनी तुम जे संचिय धन। सो हम अप्पहु सज्ज गिनिव हय गय खच्चर गन ॥ तो सुमेल हम तुमहिं पुहवि तबही तुम पावहु । अब हम सों अरदास कहा इह बृथा कहावहु ॥ मन्नौं सु कोन महाराय के पुत्त न जाने कब प्रगटि । मय मत्त भयो जनु पंचमुष पातिशाह बचनहि पलटि ॥ १३५ ॥

॥ दोहा ॥

रिपु जन मन राखें न रस, गुन परि को न महंत ।
पन्नग को पय प्यावतें, समझि करे चित संत ॥१३६॥

॥ कवित्त ॥

रिपु जन के रस कहा कहा तिन बचन बिसासह । कहा पिशुन सु प्रतीत कहा अरि कोइ कलासह ॥ महुरे को कहा मीठ कहा हिमशैल शीत जग । कहा स्व प्रगटित अगनि कहा पय पोषित पन्नग ॥ पतिशाह सुबोल पलट्टि कें रढ़ लग्गो सुख आन रुष । शुभ सीष तास को सीखवै लायक नर जो मिलय लष ॥ १३७ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि एसी राठोर सब, भये रोस भर भार ।
सब पतिसाही सेन पर, तुट्टें ज्यों पहतार ॥ १३८ ॥

॥ छंद मोती दाम ॥

जगे कमधज्ज महा रन योध । किये दृग रत्त भये भर क्रोध ॥ बजी बर बीरन हक्क बहक्क । छुटे जनु इभ्भ महा मद छक्क ॥ १३९ ॥

धरातलि धावत उठ्ठि धमक्क । चहूं दिशि दानव देव चमक्क ॥ कढ़ी कर नागिनि सी करवाल । जितं तित ढाहत है गज ढाल ॥ १४० ॥

लसे मनु लोह कि आग्गि लपट्ट । झनंकत नट्ट षरी षग झट्ट । षलं दल कीजत षंड बिहंड । जितं तित मीर परे बिन मुंड ॥ १४१ ॥

खड़क्कत हड्ड सुजड्ड करार । करे जनु कट्टिय शैल कवार । भभक्कत श्रोन सु इभ्भ भसुंड । जितं तित जोर मच्यो षल षंड ॥ १४२ ॥

परे जनु पत्थर रूप पठान । हये जम दाढ़नि कट्ट जुवान ॥ भजे नर कायर भारय भीर । गर्जे प्रति सद्दनि ब्योम गुहीर ॥ १४३ ॥

किते बिन शीश नचन्त कमन्ध । लड़ब्बड़ मत्थ लटक्कत कन्ध ॥ किते घन घाइनि छक्क घुमन्त । जितं तित दोरत पीसत दन्त ॥ १४४ ॥

उभ्भटिय आसुरि सेन अलेख । जितं तित सत्थर ह्वै रहे सेस ॥ गिते कुन गरबर भक्खर ग्यान । बलोचिय लोदिय बिद्धिय बान ॥ १४५ ॥

ररब्बरि षब्बरि रुम्मिय रुंड। झंझोरिय भूरिय तम्मर झुंड॥ रनं घन रोलिय मत्त रुहिल्ल। जितं तित मछिय रत्त चिहल्ल॥ १४६॥

षुरेसिय षग्ग किये षय काल। हवास्सय होइ रहे सु बिहाल॥ सुसे धर सुच्छिय केसरि बानि। जितं तित जाइ परे पय पानि॥ १४७॥

इही विधि आलम के मुँह अग्ग। जितं तित भंग महा भर जग्ग। भरयो दरबार भग्यो भहराय। भगो यवनेश सु अन्दर जाय॥ १४८॥

षरब्भरि आसुर षान जिहान। जितं तित हक्किय आवन जान॥ जरे दरबाननि दुर्ग कपाट। घनें परि घेर रुके जल घाट॥ १४९॥

रलं तलि लोग परी पुर रोरि। दुरे नर भग्गि दई दृढ़ पौरि॥ गृहं गृह कंचन रूब गडंत। भगे बहु भामिनि बाल रडंत॥ १५०॥

गहे कुन कप्पर सार किरान। घरप्पर ठिप्पर ठिल्लहि धान॥ मची घन लम्बी कूह कराल। चहो दिग होइ रहो ढकचाल॥ १५१॥

मुषं मुष जक्किय मारहि मार। हये नर मेछिय केडे हजार॥ ढंढोरिय ढिल्लिय किन्न सुढिल्ल। किये गढ़ कोट उथल्ल पुथल्ल॥ १५२॥

बिहंडिय षंडिय श्रेणि सुहट्ट। जितं तित

कीजत गेह कुघट्ट॥ लक्कहिं लुट्टहिं लुट्टक लच्छि।
गए तिन नाहर नंचन गच्छि॥ १५३॥

बिहस्सिय योगिनि बीर बेताल। महेश सु गुंथहिं मच्छय माल॥ झरप्फहि पंषिनि गिद्धिनि झुंड।
उड़े नभ कंक गहे पल तुंड॥ १५४॥

जितं तित लग्गिय लुच्छित जेट। पशू पल-चारिनि पूरिय पेट॥ बढ़यो रस बैरिन सेन बिभत्स।
सुरासुर मन्निय अद्भुत अच्छ॥ १५५॥

अरे नन आसुर अडुह आइ। लगी जनु मारुत ग्रीषम लाइ॥ चकत्तह चूरि चमू किय चून। फिरे
हय हीसत सिंधुर मून॥ १५६॥

मसक्कहि थक्कहि औरंग साहि। कलंमलि चित उठंत कराहि। हहक्कहि तक्कहि मिड्डहि हत्थ। महल्ल-
नि मज्झ डुलावहि मत्थ॥ १५७॥

गए कितहू तजि मीर गँभीर॥ नहीं सु नवाबनि के मुंह नीर। तुरक्क न कोइ रह्यो हम
तीर। भिरे इन सत्थ करे हम भीर॥ १५८॥

इही बिधि युग्गिनिनैरहि आइ। बली कमधज्ज सुषग्ग बजाइ। चले चतुरंग चमू निय लेइ॥ दमा-
मह दुट्ठनि के सिर देइ॥ १५९॥

॥ कवित्त॥

दिल्लि नयर करि ढिल्ल ढाहि आवास ढँढोरिय।
दुट्ठ महल दलमलिय बग्ग से असुर बिरोलिय।

चूरि चकत्ता चमू चंग हय गय चतुरंगह । लुट्टि अनंत सुलच्छि रजत अरु कनक सुरंगह ॥ भयभीत साहि ओरंग भय जरि कपाट अंदर दुरिय । कमधज्ज सकल रक्खन सुकुल कलह केलि इहि बिधि करिय ॥ १६० ॥

॥ दोहा ॥

करि यौं दिल्लिय पुर कलह रिन अभंग राठोर ।
उद्धंसिय असुरान अति अरयन को मुंह ओर ॥१६१॥
पहर तीन युग्गिनि पुरहि पारी धारि प्रजारि ।
कीन कुरूप कुदरसनी नाइक बिन त्यों नारि ॥ १६२॥
करि अग्गें महराइ के पुत्त प्रभाकर रूप ।
चले सज्जि चतुरंग चमु अप्पन इला अनूप ॥१६३॥
आड़े जे आए असुर सकल लिए सु सँहारि ।
मारवारि पत्ते सुमहि प्रमुदित सब परिवार ॥१६४॥

॥ कवित्त ॥

आए मुरधर इला जीति योगिनिपुर जंगह । सूर रट्ठुवर सैन सकल हय गय भर संगह ॥ घोष निसान घुरंत जोधपत्ते सु जोधपुर । जिन जिन की जो अवनि थप्पि तिन तिन सथान थिर ॥ आलम ओरंग महत अरि अति उद्धत आसुर अकल। भारत्थ युद्ध तिन सत्थ भिरि बसुमति लीनी अप्प बल ॥१६५॥

कितक दिनमि कबिलेश किन्न निय महल मंत कजि । जुरे यवन घन जूह षान उमराव खूब सजि । हय गय केउ हजार पार पायक को पावहि ॥ गुरज-

दार छरिदार जोरि इतमाम जनावहि । जुरि सेन सेनपति जोहरिय काजी कुल्लि दिवान बर ॥ कोतवाल दूत सँधिपाल के दल बहूल जनु साहि दर ॥१६६॥

कहि तब असपति कुप्पि सुनहु श्रवननि नवाब सब । कहो सोइ कीजिये अरि सु आवै न हत्थ अब॥ मुरधर कै मेवासि तेग बंधी हम सों तिन । हमहू अदब उथप्पि लरे हम महल भुलक्खन ॥ उमराव षांन उद्धंसि कें निधि लुट्टी दिल्ली नगर । हम सल्ल भंति सल्ले हिये पत्ते ते रिपु जोधपुर ॥ १६७ ॥

॥ दोहा ॥

तिन कारन हम मन तुरित भंजन रिपु जनु भीम।
काजी पूछहु बेगि कैं, सजैं ब किन दिन सीम ॥१६८॥
करत प्रश्न दिन शुद्धि कहि, काजी पिक्खि कुरान।
भद्दव सित दुतिया भली, सजो सेन सुलतान ॥१६९॥

॥ कवित्त ॥

संवत्सर छत्तीस सीम सतरासें संवत । भद्दव दुतिया धवल चढ्यो पतिसाह चंड चित्त ॥ दोय सहस गुरु दंति पंति जनु हल्लिय पब्बह। उभय लक्ख उत्तंग बाजि बर बेग सु सब्बह ॥ आराव नारि गेरह अधिक रथ जंबी दो सहस रजि । ओरंग साहि आडंबरहि सेन कोटि पायक सु सजि ॥१७० ॥

आवत सुनि ओरंग साहि दल बद्दल सज्जह । दुर्ग दास मिँगदेव कलह कारक कमधज्जह ॥

आदि सकल रट्टौर भए इक मिक्क मंनि भय । मंत इक्क बर मतें युद्ध जिहि भंति लहे जय ॥ रिपु दुठ्ठ धिठ्ठ आरिट्ठ रिन चमू जोर आवंत चलि । किज्जे व युद्ध कबिलेश सो टेक छंडि ज्यों जाय टलि ॥ १७१ ॥

जंपे ताम सुजानराय सोनिंग रट्ठबर । ईश बाल अप्पने सुकल दुतिया जनु ससि हर ॥ सो न जोग संग्राम नृपति जसवंत सुनंदन । सुभट लरें प्रभु संक करें भारथ पिपु कंदन । अप्पन अनाह सबही सु सम हिंडहि अरि सुष किन हुकम ॥ तिन काज रांण श्रीराज सों मिलि रक्खे पित्री धरम॥१७२॥

ए हिंदूपति आदि धनी हिँदवान धरमधर । इन सुबंस अकलंक षग्ग असुरान षयंकर ॥ इन सों मिलत न ए ब एह सरनागय बत्सल । कालंकित केदार नीति गंगा जल निम्मल ॥ नर नाह और इन से नहीं अप्पहिं रक्खन जो सुपहु । श्री राज रांण जगतेश सुअ बंके बिरुद बदंत बहु ॥ १७३ ॥

अबल राय आधार सबल सुलतान सु सल्लह । सुरगिरिवर समतुल्ल अप्प अज्जेज अडुल्लह । चित्र-कोट पति अबल जास इकलिंग ईसवर ॥ ब्रह्म वेद बाहरू उदधि जल दल आडम्बर । पुहवी प्रसिद्ध ए छत्र पति दुज्जन जन घन दल दमन ॥ श्री राज राण जगतेश सुअ राजे ज्यों सीता रमन ॥ १७४ ॥

मानपुरहि मारयो दाह दिल्लीपुर दिन्नह। रूप पुत्ति रट्ठवरि साहि तें सबल सुलिन्नह॥ गुरु हठ कै गोमनी बंधि सलिता सु राजसर। सीरोही सिर दंड किन्न राना राजेसर॥ किती ब कहूं मुँह किती जस बल अनंत हिन्दू सु बर। अब धाइ गहै तिन पथ शरन भंजहि फिरि असुरान भर॥ १७५॥

इन अनिट्ठ ओरंग रज्ज कज्जे राजंधहि। बाप हन्यो हनि बंधु पुत्त हनि सकल प्रबन्धहि॥ कूर गेह कलि गेह जानि अहि ज्यों दो जिब्भह। बचन जास चल बिचल मान मय मत्त कि इब्भह॥ करतें सुछंद सेवा करत पुत्ति देत होतन प्रसन। मिलिये ब राण राजेश सों पातिशाह आवै पिशुन॥ १७६॥

॥ दोहा॥

सुनत एह सारी सभा, सोनिग देव सुमंत।
राजा रावत रट्ठवर, भल भल सकल भनंत॥१७७॥
जान्यों जग प्रभु जोर बर, राजसिंह महरान।
सरन तक्कि कमधज्ज सब, जीवित जन्म प्रमान१७८॥
ठीक मंत ठहराइ के, लिखे ललित फुरमान।
राना श्री राजेश को, विनय विविध बाषान॥१७९॥

॥ कवित्त॥

स्वस्ति श्री सुभ थान प्रगट पट्टन उदयापुर। राजे श्री महाराण रूप राणा राजेश्वर॥ सुर नायक

ससि सूर जास ऊपम युग जानिय । सुरतरु सुरमनि सिंधु देव ज्यों अधिक सुदानिय ॥ अरदास सकल कमधज्ज की मन्नहु सांई प्रसन मन । पतिसाहि पिशुन पच्छें फिरयो आवहिं हम अब प्रभु शरन॥१८०॥

संग्रामहि असमत्थ समझि बिन लहु हम सांई । सांई बिनु कहा सेन तेज सांई ही तांई ॥ महा राय गय मोष सोइ होते समत्थ पहु । अब प्रभु ही सों अदब रहे रटिये कितीक बहु ॥ कमधज्ज कहै इन कलह में करि उप्पर निज जानियहि । राजेश राण जगतेश सुअ ओलम तो बस आनियहि ॥ १८१ ॥

मारे हम बहु मुगल दंद रचि जोर साहि दर । युग्गिनिपुर परजारि पारि कीनी धर पद्धर ॥ लच्छि अमित तहँ लुट्टि चंड चौकी चकचूरिय । हय गय रथ भर हनिय पेट पशु पंखिनि पूरिय ॥ कीने सु षूंत असपत्ति के केतक सुख करि कित्तिये । राजेश राण जगतेश सुअ पहुप साय अब जित्तिये ॥ १८२ ॥

नागोरिय नृप कज्ज दीन पतिसाह जोधपुर । इहै आदि हम उतन सो ब आवै प्रभु उप्पर ॥ यदु- पति ज्यों पंडवनि कलह में आरति कप्पहु । नृप के नंद रु नारि थान निर्भय तहं थप्पहु । आयो ब साह औरंग चढ़ि हम लरिहैं सब प्रभु हुकम ॥ राजेश राण जगतेश सुअ रट्ठोरनि राखहु शरम ॥ १८३ ॥

रबि बंशी महाराण राण राहप हरि रूपह ।
श्री दिनकर सक बंध न्याउ नरपाल अनूपह ॥ कृतब
उंच जस करन पुन्य पालह प्रथवीपति । पीथल
राण प्रचंड भाण सी राण देव भति ॥ भल भीम अजै
सी लषम सी अर सी राण महा अडर । सुलतान गहन
मोषन सकल राण एह राजेश वर ॥ १८४ ॥

राण हमीर सुरीति राण खेतल अभंग रिन ।
लाषन सी बहुलील राण मोकल उदार मन ॥ कुंभ
राण जग कित्ति राण कुल रूप परय मल । सबल राण
संग्राम उदय नित उदय राण इल ॥ कायम प्रताप
अमरह करण जगत सिंह जग जोर बर । सुलतान
गहन मोषन सकल राण एह राजेश बर ॥ १८५ ॥

रामचंद राजेन्द बंधु लच्छन सु बीर बर। कृष्ण
देव रिपु काल कंस आसुर बिधंस कर ॥ कैरव कण
कण करण जंग जोधार जुधिष्ठिर । अर्जुन भीम
अभंग सूर सहदेव अचल सर ॥ नरनाह बिरुद पंड-
वन कुल असुर सँहारन बिरुद इन । राजेश राण जग-
तेश सुअ पुहवि रखी सो क्षत्रियन ॥ १८६ ॥

तुम हिन्दूपति प्रगट तुमहिं दिनकर हिन्दूकुल ।
तुम हिन्दू उद्धरन बिरुद सरनागय बत्सल ॥ तुम करुना
कर सुकृत तुम सु कलियुग दुख कप्पन । अबलनि तुम
आधार तुम सु असुरेश उथप्पन ॥ इन धर अनादि

अवनीश तुम पग्ग तेज बंदे चलक । राजेश राण जगतेश सुअ तुम सब हिन्दू शिर तिलक ॥ १८७ ॥

शीसोदा चहुआंन तुँअर पांवार रट्ठवर । हाड़ा कूरँभ गोड़ मोरि यद्दव बड़गुज्जर ॥ झाला भट्टी डोड दह्या देवरा बुंदेला । बड़गोता दाहिमां डाभि बारड बग्घेला ॥ खीची पड़िहार सु चावड़ा संपुल गोहिल धंधलह । राजेश राण सब हिन्दुपति टांक पुँडीर सु सिंधलह ॥ १८८ ॥

तिन प्रभु शरनहि तक्कि धाइ आवहि आशा धरि । राखहु श्री महाराण हिन्दुपन सबल असुर हरि ॥ दिशि दिशि में दीवान सांइ सम कोइ न दिट्ठो । सुलतानह हम सत्य रोस करि औरँग रुट्ठो ॥ अमरख सुचित्त रक्खें अधिक छत्रीपन मेटंत खल । असुराइन सों ब उथप्पि के बसुमति लीजै अप्प बल ॥ १८९ ॥

॥ दोहा ॥

इहि बिधि गुरुता लखि अधिक पठयो दूत प्रसिद्ध ॥
पत्तो सो उदयापुरहिं अबिलंबन अबिरुद्ध ॥ १९० ॥
हिन्दू पति भेटे हरषि दिय पय नमि अरदास ।
बिनय सु अक्खें मुष बचन सानंदित सोल्लास ॥१९१॥
बंची सो अरदास बर उपमा बिनय अनूप ।
कमधज्ज रु क बिलेश को सकल लिख्यो सु सरूप॥१९२॥

देइ दिलासो दूत को फेरि लिषे फुरमान ॥
सब राठौरनि सत्थ कों सुन्दर बिधि सनमान ॥१८३॥

॥ कवित्त ॥

राज राण मति मेर तदपि इह लषि चतुरंतन । महाराय रावरह राव रावत सब राजन ॥ पूछे निय उमराव कहो कैसो मत किज्जै । काम परयो कमधज-नि साहि दल सज्यो सुनिज्जे ॥ अक्खे सुनाम उमराव इह जानि चित्त वृत्तीहि जिन । वेगे बुलाउ प्रभु रट्ठवर पुहवी रक्खहु अप्प पन ॥ १८४ ॥

सुनि इह श्री महाराण लिषे फुरमान सुलाषन । सुनहु रट्ठवर सूर सदा हम तुमहिं सग्गपन ॥ सजि आवहु हम शरण भूलि नन धरहु चित्त भय । हों अभंग वर हिन्दु षग्ग सब असुर करों षय ॥ सुलतान समर करि संहरों म्लेछ रहें को हम सँमुष । सत षंड करों वर समर सजि दुष्ट तुमहिं जो देइ दुष ॥ १८५ ॥

सेष सकल संहरों सैद पारों सब सप्पर । पच्छारों सु पठान लोदि बल्लोची भक्खर ॥ सरवानी भंभरिय हनो हबसी निय हत्यहिं । रन रोलवो रुहिल्ल मुगल सु करों बिन मत्थहिं ॥ गाडों धर रूमी गक्खरी उजबक्कनि सढ्ढों सु असि । कहि राजराण कमधज्ज हों रक्खों यों तुम रंग रसि ॥ १८६ ॥

उज्जरि करि अग्गरो ढाहि ढिल्ली ढंढोरों । लाहो-

रिय धर लुट्टि तर्टकि तुरकानी तोरों ॥ षनि नंषो षंधार बेगि खुरसान बिहंडों । परजारों पट्टनहि देश भक्खर सब दंडों । सुबिहान साहि ओरंग को गज समेत जीवत गहों ॥ हों राजराण तो हिन्दुपति कहा अधिक तुम सें कहों ॥ १९७ ॥

बिस्तारों बर बेद पुहवि रक्खों सु पुरानह । काजी सत्यक ते ब करों सब ठार कुरानह ॥ चकता करों सुचून थान निज दिल्ली थप्पों । रक्खों हिन्दू रीति आसुरी रीति उथप्पों ॥ ईश्वर प्रसाद बर उद्धरों म्लेछ तित्थ षंडों सु महि । रक्खों सु सकल रट्ठौर कों कोपि राण राजेस कहि ॥ १९८ ॥

मीर मलिक मस्संद भूत सम तेह भयंकर । घन घेरे रिपु घल्लि चुनिग चुनि हनों निशाचर ॥ जुग्गिनि रख सज्जरक बीर पंखिनि बेतालह । देत भूत भष देहु करों असपति षय कालह ॥ रक्खों सु हिन्दुपन बीर रस बसुमति रक्खों अप्प बल । तो राज राण जगतेश सुअ षग्ग प्रान जित्तों सु षल ॥ १९९ ॥

॥ दोहा ॥

बल बँधाई सुबिशेष तें, दल लिषि अनुगहि दीन ।
बेगि बुलाए रट्ठवर, हिन्दूपति सु प्रबीन ॥ २०० ॥
रंग बढ़े सब रट्ठवर, ले निय परियन लच्छि ।
मेद पाट पति सों मिले, अब भख सारो मिच्छि॥२०१॥

॥ कवित्त ॥

इभ गरुये इगवीस दोय दस सहस तुरंगम । कोटिक रूप रु कनक पवर बहु रथ पवनंगम ॥ सतक जंम्बि भर शस्त्र करभ युग सहस मत्त कल । कलहंत-नहि सकज्ज सहस पण बीस पयद्दल ॥ इतनै सु सत्थ परिकर अमित महाराइ सुत मज्झ वर । राजेश राण सों रट्ठवर आइ मिले असुरेश डर ॥२०२॥

गरुअ गात गजराज सकल शृंगार सुसोभित । कनक तोल तिन मोल अश्व एकादश उप्पित ॥ षग्ग एक खुरसान कनक नग जरित कटारह । इक हीरा सु अमोल दाम दस सहस दिनारह ॥ कमधज्ज सकल कर जोरि करि प्रभु नमि मुक्किय पेस-कस । श्री राज राण जगतेश के रक्खी हित धरि रंग रस ॥ २०३ ॥

॥ दोहा ॥

सबही संनमाने सुभट, बर बैठक सु बताइ ।
बीरा श्रीर कपूर बर, सें कर अप्पै साइ ॥ २०४ ॥
षरच कज्ज सुबिचारि षिति, दीने द्वादश ग्राम ।
नगर कैल वासो निरषि, अवनि सकल अभिराम॥२०५॥
किहि मुक्ताफल माल किहिं, हय गय गांउ सहेत ।
रीझि राण राजेश बर दिन २ सुभटन देत ॥ २०६ ॥

इति श्रीमन्मानकविबिरचिते श्रीराजबिलास शास्त्रे महाराणा श्रीराजसिंह जी का शरणागत बिजय पंजर बिरुद बर्णनं नाम अनेक सुमति प्रकाशः नवमो बिलासः ॥ ९ ॥

॥ कवित्त ॥

करिय अहो निसि कूच साहि अजमेर संपत्तह ।
बंकागढ़ बिंठुलिय राज पट महल सुरत्तह ॥ रहे
तत्थ असुरेस बिकट चौकी बैठाइय ॥ परिय कटक
गढ़ परधि जलधि ज्यों दीप जनाइय ॥ निसु नीव
तत्थ आसुर नृपति जाने हिंदू जोर बर । रबि बंश
राण राजेश को शरन गह्यो बर रट्ठवर ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

तपो अधिक तुरकेश तहँ सुनि हिन्दूपति नाम ।
कलमलि उर कर मिंभि कहिं, हा हिय रही सुहाम ॥२॥
हम सों लरि भिरि रक्खि हठ, गए सुतजि धर गेह ।
क्योंं करि रहिहैं दक्खियें, राण शरण अब एह ॥ ३ ॥
जहां जाइ तहां जाइ कैं, गहो युवतिन परि गैल ।
तरु तरु पत्त सुपत्त करि, सब ढंढोरों सैल ॥ ४ ॥
स्वर्गहिं सोढिय जाल जल, पर्बत गुहा प्रदीप ।
षनि कुदाल पाताल षिति, अरि आनो अवनीप ॥५॥

॥ कवित्त ॥

करियों मानस कोप दिन्न फुरमान दिग्घ गस ।
कैलपुरा प्रभु कव्य बढ़हि जिन सुनत बीर रस ॥
सुनहु राण राजेश साहि औरंग समक्खिय । हम सु
शत्रु बहु हठी रट्ठवर क्यों तुम रक्खिय ॥ अप्पो
सुएह हम कज्ज अब के कलहंतन सद्य करु । नन
रहे एह कीनहि नपति उदय अस्त रबि चक्रतर ॥६॥

इन लुट्टो अग्गरो देश दिल्ली धर दाहिय। किये। कलह हम महल पालि सबही पतसाहिय ॥ मारि थान मेंड़ता अप्प बल लयौ योधपुर । सल्लै ज्यों नटसल्ल राह सल्लै यु अम्ह उर ॥ रक्खेयु तुम्ह तिन रिपुन को बढ़ि हेतो अप्प न बिरस । राजेश राण रट्ठौर दै साहि सत्थ रक्खो सुरस ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

बंचि साहि फुरमान बिधि, पाइय सकल प्रवृत्ति ।
राण लिषे फुरमान फिरि, साहि जोग सब सत्ति ॥८॥

॥ कवित्त ॥

रक्खैं हम रट्ठौर सत्थ जसवंत राय सुत । इन जो सत अपराध किये तोऊ इह संमत ॥ करन मतो सो करहु जोर कह कहिय जनावहु । कहो सु आवन कल्हि अद्य सोई किन आवहु ॥ जेहो सु लेइ तब जानियहि प्रभु पन और सुपुरुष पन । राजेश राण कहि साहि सुनि बसुमति रहिहैं बर बचन ॥९॥

आइ गहे को इनहिं देव कह दैत रु दानव । रषख सज्ज खरिसाल मिलिहि जो कोटिक मानव ॥ अब हम त्योंही एह स्नेह हम इन गुरु सद्यन । अप्पै जो इन छेह तो ब कैसो सबीपन ॥ कहिये सु आदि ही अह्म कुल सरनागय बंत्सल बिरद ।

राजेश राण कहि साहि सुनि महि उपगार बडो मरद ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

गयो अनुग अजमेर गढ़, असपति कर फुरमान।
दीनें हिन्दु दिनेन्द को, बीरा रस बाखान ॥ ११ ॥
बंचि बंचि दिल्लीश बर, बाढ्यो रोस बिशेष ।
फेर दुतिय फुरमान दिय, नागद्रहा नरेश ॥ १२ ॥

॥ कवित्त ॥

मिंडि देश मेवार कोट गढ़ ढाहि ढेर करि।
आऊं उदयापुरहि गाहि हय गय पाइनि गिरि ॥
रावर रावत राइ आइ फिरि हैं जे अड्डे । संहरि तिन संग्राम यवन धर थप्पो जड्डे ॥ जरि थान थान थाना यतन रुंधि राह चहुं कोद रुष । राजेश राण सुलतान कहि मंडय को हम सेन मुष ॥ १३ ॥

तोयधि भुज बल तिरै कवन तुल्ले गिरि कव्वहि । पावक को मुंह पिवै सिंह सनमुष रिन सव्वहि । महि को थंभय मरुत नाग कहु कवनं सु नत्थय । गयन थंभ को देय सोब जित्तै हम सत्थय । हठ छंडि अलिय इन देहु हम सीख कहा तुम सिक्खवें । राजेश राण सुलतान कहि अनम सोइ हमसों नवें ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

हिन्दू पति फुरमान यों, बंचिहु तिय बरजोर ।
अप्प दयो फुरमान इह, साहि करो किन सोर ॥१५॥

॥ कवित्त ॥

जरहि थान तुम जिते इक्क दिन तिते उठावहिं ।
आलम प्रथम उथप्पि बहुरि औरहि बैठावहिं ॥
मेद पाट महि रज्ज सहस दस गाम ईश बर । एक-
लिंग अम्ह दिये कबहुं नावै किनही कर । आवो
असुरेस अनेक इहि कट्टि बंधि सूधे करें ॥ राजेश राण
कहि साहि सुनि तोयधि यों भुजबल तिरें ॥ १६ ॥

ऊजर करि अग्गरो धाइ लाहोर लेहुँ धन ।
दिल्ली करो दहल्ल तोरि तुम तखत ततष्षन ॥ अलवर
नरवर आइ थान थप्पै रिनथंभहिं । उज्जैनी आहनों
धार मंडव हनि डिंभहिं ॥ गुजरात देश लै दंड
गुरु सज्जों दल सोरठ सकल । राजेश राण कहि
साहि सुनि तुल्लों यों सुरगिरि अतुल ॥ १७ ॥

दोहा ॥

रोस राण परवान कों, बंचत बढ्यो विशेष ।
तृतिय बहुरि फुरमान तिन, अप्पो बहु असुरेश ॥१८॥

॥ कवित्त ॥

श्री पुर तुम संहर्यो कोप हम विलय सु किन्नह ।
रूप पुत्ति रट्ठवरि लग्गि हम सों फुनि लिन्नह ॥

दंड देत देवल्या नालिबंधन सु निरंतर। दोइ
सहस दीनार ऐन सल्लै उर अंतर ॥ सल्ले यु अनु
ए तुम शरन सो ब सिताब समप्पियहि । राजेश
राण सु बिहान कहि कलह मूल तें कप्पियहि ॥१९॥

राजथान निय रचो बास चित्तोर बसाइय।
आनों दिल्लिय यहां सेन धन लच्छि सजाइय ॥ नौ-
बति नद्द निसान घोष इहि तषत घुराऊं। सञ्चो
तौ हूं साहि बहुत कहि कहा बताऊं ॥ फुरमान लिषेव
कहा सु फिरि तिहूं तिबेर कही सु तुम। राजेश
राण सुलतान कहि अब जिनि कट्टौ दोस हम ॥२०॥

॥ दोहा ॥

यों तीजो फुरमान पहु, राण बंचि राजेश।
क्रूर कोप करि लिषि कहैं, सुनि औरँग असुरेश ॥२१॥

॥ कवित्त ॥

जिहिं रक्खैं जगदीश अप्प इकलिङ्ग ईस बर।
तिहि रक्खैं जोधार राण अनमी राजेशर ॥ जिहिं
रक्खैं योगिनी रधू चित्तोर सुरानी। जिहिं रक्खैं बावन्न
बीर मुष कह कह वानी। पतिसाह मात आवै
प्रगट बरस सहस लौं जो बिढ़य ॥ सुलतान साहि
ओरँग तदपि चित्रकोट कर ना चढ़य ॥ २२ ॥

जो हेमालय गरहु गहो जो कासी करवत।
जो जीवत धर गड्डहु पढ़हु जो चढ़ि गढ़ परबत ॥ जो

जालंधर जाइ सीस कालिका समप्पै। जो दिखि दिखि बल देइ काइ तिल तिल करि कप्पै। आगती जोति ज्वालामुषी जो ज्वालावलि में धँसै॥ राजेश राण कहि साहि सुनि बहुरि जनम ले भल बसै॥२३॥

॥ दोहा ॥

अनुग हत्थ फुरमान इह, दयो तृतीय दिवान।
तहि फुनि करिकैं गति तुरत, सौंप्यो जइ सु बिहान॥२४॥
बंचि साहि सब ही बिगति, जानि हिन्दुपति जोर।
बढ़न कज्ज तबहीं बिपल सज्जी बंब बकोर॥ २५॥
धुर कत्तिय पंचमि सु ध्रुव, सागर जल ज्यों सेन।
सज्जि चल्यो दिल्लीस वर, रबि नभ ढंकिय रेनु॥२६॥

॥ छंद भुजंगी॥

चढ़्यो सेन सज्जें सुबाजी चकत्ता। मनो मास भद्दो महा मेघ मत्ता॥ सजें सिधुरं पाखरंगं सनांहं। करे बंधि षग्गं दुधारा दुबाहं॥ २७॥

किनं पिट्ठि सज्जे लसे नारि गोरं। किनं पिट्ठि नेजा धजा बै किशोरं॥ किनं पिट्ठि सोहै ढलक्कंति ढल्लैं। किनं लोह कोठी हठे मग्ग हल्लैं॥ २८॥

किनं बंधि कट्टार सुंडार दंत्ते। किनं पिट्ठि डोला चले इक्क पंत्ते॥ ठनंकार घंटा रवं तं घनंके। घनं घुंघरं पाइ ग्रीवा षनंके॥ २९॥

झरे दान गंधं भवैं भोंर झौरं। लसे तेल सिंदूर

फुनि शीघ्र चौरं ॥ पढ़ें धत्त धत्ता मुहं पीलवानं ।
अगं गग्ग गज्जें महा मेघ जानं ॥ ३० ॥

चलैं अग्ग पच्छें सभाला चरष्षी । पुले वायु बेगं नभं जोति पष्षी । जरे शृंखला पाइ गट्टे जँजीरं ॥ किनं शात कोंभं सु कुंभं कठीरं ॥ ३१ ॥

किते अग्ग करिणी करे ताम चल्ले । उमत्ते घुमंते तरू के उषल्ले । किनं पिट्ठि नोबत्त बज्जै निहस्सै । सुभे सेन मज्झे करी दो सहस्से ॥ ३२ ॥

हयं हस बंसा तुला हेम तुल्ला । किते अंगए एक देसी असीला ॥ किते कोकनी वाजि कच्छी कबिल्ला । किहाडा पुडा रत्तडा के कनिल्ला ॥ ३३ ॥

किते सिंघली जंगली औसिँघाला । किते जाति साचोर सारंग फाला ॥ पंषाला जंघाला हिंबाला पवंगा । किते आरबी काशमीरा उतंगा ॥३४॥

किते जाति कांबोज बंगाल देशा । षुरासानि कंधारि षेंगा षुरेसा । किते भोंर भारी जनो अंग भ्रंगा । चले चंचलं चाल चाला सुचंगा ॥ ३५ ॥

किते पौन सत्थी धरा पौन पत्था । रजै रूप राजी मनो सूर रत्था । किते पानि पंथा तुटे जानि तारा । किते जाति तेजी तुरक्की तुषारा ॥३६ ॥

किते पब्बती अश्व प्राक्रंम पूरे । सजी साकती स्वर्ण शोभा संपूरे ॥ किते थाल मज्झे ततत्थेइ नच्चें ।

तिने लोयनं लोल संसार रच्चें ॥ ३७ ॥

झिलंती जरी झूल सा पंचरंगे । रजे पूछ ज्यों चौर सालं तरंगे ॥ शिषा दीप ज्यों उंच सोभे सु कर्ण । गुही केसवारं कचं स्याम वर्णं ॥ ३८ ॥

बछ्यो हेष हेषा रवं सोर सोरं । किये कंध बंके चले बंधि कोरं ॥ उभे लष्ष यों पष्षरेहे अनूपं । चढ़े षान सुलतान राजान चोपं ॥ ३९ ॥

पुलें अग्ग पाले हठाले पघाले । रिसाले रुपाले रंगाले सिंघाले ॥ मदाले मुछाले मदाले मरट्टं । दझाले दुझाले कितं नाद रट्टं ॥ ४० ॥

झुझारे करारे अकारे झिलंते । षिलारे षुमारे अषारे षिलंते ॥ छिंभारे डरारे डरें ना डहक्कैं । गिरा गुंज तेगैं गरज्जें गहक्कैं ॥ ४१ ॥

हसंते लसंते धसंते लहक्कैं । कलं कूदते षुंद रत्ते किलक्कैं ॥ सजे आयुधं स्वांग छत्तीस संधैं । कटारी कृपानं दुदो तोन बंधैं ॥ ४२ ॥

गहे तोब कंधे भरे सोर गोरी । गुरू गज्जि आवाज जाने। कि होरी ॥ धनुर्बान कंमान जे हत्थ धारें । प्रहारे उडंते षहं पष्षि पारे ॥ ४३ ॥

सजे टोप संनाह यं जुद्ध मंत्ता । गदा गुर्ज कत्ती किनें हत्थ कुंता ॥ दुरंती लसें पिट्ठि गट्टी सुढल्लं । मिले कोटि पाला दलं जानि मल्लं ॥ ४४ ॥

भरे यान जंबी सु आराव भारं । सयं पंच बीसं सजे साज सारं ॥ धुरा अश्व जोरा किनं श्वेत धोरी । जुपे जंत्रि किहि संवरं रोझ भोरी ॥ ४५ ॥

दलं मध्य दिल्लीसरं अप्प दीपैं । जनो मान लंकेश का सोइ जीपैं ॥ बन्यो रूप आरोहए एक बाजी । सुभे स्वर्ण माणिक्य साकत्ति साजी ॥ ४६ ॥

छजे दंड सोवर्ण जा शीश छत्रं । उभे उद्यलं चौर ढुरते पवित्रं ॥ चहूं ओर जा गुर्ज बरदार चल्लें । छरीदार हज्जार केसे न ढिल्लें ॥ ४७ ॥

भरी खच्चुरं सहस स्वर्णं खजानं । गिने कोन करहा दलं नत्थि गानं ॥ सजी नारि पिट्ठें छुटंती हवाई । किते स्वान चीता सु सत्थे सजाई ॥४८॥

उडे रेनु ब्यूहं सु ढंक्यो अयासं । भयो भानु बिम्बं मनो संझ भासं ॥ महा सेल कट्टें करे सुद्ध-मग्गं । भरं भूरुहं भर करं क्रषि भग्गं ॥ ४८ ॥

करंते पयानं उरझें कुरंगा । जनें जलधि संमेल कालिंदि गंगा ॥ नदी ताल द्रह कुंड बहु सुक्कि नीरं । घुरे घोष निर्घोष नोबति गुहीरं ॥ ५० ॥

मच्यो सेन सोरं सुने कोसु सद्दं । गजे नारि गोरा मनो मेघ भद्दं ॥ प्रति द्यौस दर हाल कीये पयानं । प्रपत्तो दलं मज्झ मेवार थानं ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

मेद पाट पत्तो सुमहि, चढ़ि औरँग असुरेश।
बोलि सकल उमरावबर, राण तदा राजेश ॥ ५२ ॥

छन्द पद्धरी।

रस राजनीति राजेश राण। दरबार जोरि बैठे दिवान ॥ छाजंत शीश नग जरित छत्र। पढ़ि उभय चौंर उढ्ढल पवित्र ॥ ५३ ॥

हय हत्थि पयद्दल मिलि असंख। जिन सजत दिल्लिपति होइ झंष। महाराय सबल पद धरन धीर। बोले सु ताम अरि मीह बीर ॥ ५४ ॥

जय सीह कुँअर बोले सुजान। भल हलत तेज जनु जिट्ठ भान ॥ भल भीम रूप भीमह कुमार। बोले सु जंग बहु जैतवार ॥ ५५ ॥

रावर सु बोलि जस करन रंग। असुरेस सल्ल अन मी अभंग। भल मंत भेद धर भाव सिंघ। राना उत रक्खन जोर रिंघ ॥ ५६ ॥

महाराय मनोहर सिंघ मान। गिरि मेर नंद गिरिवर गुमान ॥ दल सिंह सिंह रिपु दलन दुट्ठ। कंकाल कलह जनु काल कुट्ठ ॥ ५७ ॥

भगवंत सिंघ कुंवर सभाग। बर फते सिंघ गुरु षाग त्याग ॥ सु गुमान सिंघ अरि सिंघ नंद। दर-बार आइ जनु ससि दिनंद ॥ ५८ ॥

रजवट्ट रूप सबलेस राव । चहुवान चंड चित लरन चाव ॥ झाला नरेंद सद्दे जुझार । कहि चंद्र-सेन जसु अचल कार ॥ ५९ ॥

केसरी सिंघ रावत सु किति । जसु कुंवर गंग मह जंग जिति ॥ झनकंत षग्ग झाला सुजैत । दिल्ली-स गहन जो दाव देत ॥ ६० ॥

गढ़ पति पँवार दाता दुझल्ल । बर बीर राव भनि बैरि सल्ल ॥ महसिंघ बंक रावत उमत्त । चबि-यें सु चोंड हर चंड चित्त ॥ ६१ ॥

रन अचल सुरावत रतन सेन । फंदेस रिपुन ज्यों फंदि एन ॥ सामलह दास कमधज्ज क्रूर । नर नाह बिरुद जिन मुक्ख नूर ॥ ६२ ॥

रावत रढाल रिन मान सिंघ । जित्तन सुजंग भुज सबल जंघ ॥ केसरी सिंघ चहुवान राव । घन घटे मिच्छि जिन षग्ग घाव ॥ ६३ ॥

लीयें सचोंड हर नीति लच्छ ॥ केसरी सिंघ रावत सकच्छ ॥ महुकंम सिंघ सगता सुभास । राठौर राय बर दुर्ग दास ॥ ६४ ॥

सोनिंग देव सामंत सूर । चालुक्क राव बिक्रम बिरूर ॥ रावत रुषमांगद सुभट रूप । जसवंत सिंघ झाला सु भूप ॥ ६५ ॥

गोपी सुनाह-राठौर राइ । लहि समर समय

जनु सोर लाइ ॥ प्रोहित सु राजगुरु जग प्रसिद्ध ।
सु गरीबदास बहु मंत सुद्ध ॥ ६६ ॥

गढ़पती महेजा अमर सिंह । बर रतन राव
षीची अबीह ॥ सहु सुअनी उमराव हब्ब । आदर
समान जिन गुरु अदब्ब ॥ ६७ ॥

प्रणमेवि सकल महाराण पाइ । बैठक सुकीय
बैठे सुआइ ॥ श्री राज सिंघ राना सनूर॥ कहि नाम
देत बीरा कपूर ॥ ६८ ॥

॥ कवित्त ॥

सुनहु सकल सामंत रान जंपे राजेसर । सजि
दल बल सब्बान इत्थ आवहि असुरेशर । युद्ध करे
जिहि थान बेगि सो थान बतावहु । भज्जैं जहँ यव-
नेश असुर संहरि घर आवहु । बिन युद्ध किये बुज्झै न
इह दिल्लीपति ओरँग दुमन ॥ इक मंत होइ सब
अवनि पति पत्थोए पारो पिशुन ॥ ६९ ॥

अक्खें तब उमरावं जोरि कर युगल साइ सम ।
असुर कहा हम अग्ग अवहि ठिल्लैं करि उद्धम ॥
सिंहासन सोभियहि साँइ हम हुकम सुकिज्जै । दिशि
दिशि सज्जिव दुर्ग रटक रिपु सों इहि लिज्जै ॥ जैहै
सुभज्जि इह यवन दल कबलों रहि करिहें कलह ।
गहि लेहु असुर पति गज चढ्यो सजि चतुरँग पष्षर
सिलह ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

गरिब दास प्रोहित सुगुरु, अखिय तिन फिरि एह।
एक सुमंत सु अरज इक, अब धारहु सु सनेह ॥७१॥
प्रभु मैं सकल पहार पति, जित्तहु पर्व्वत जोर।
घाट घाट रिपु घेरि के, वेगे देहु वहोर ॥ ७२ ॥
विग्रह इह के बरस लोँ, सुबढ्यौ जानि विशेष।
अगनित दल असुरेस पैं, हम मन इह अंदेश ॥ ७३ ॥

॥ कवित्त ॥

ये सब अद्रि अभंग नीर छाया युत निर्भय। जंग करहुं यवन सों जरिग घन घाट सदा जय॥ लगैं न तह इन लगा असुर कोटिक जो आवहिं। बंके निज बर बीर मंडि अब असपति ढावहिं॥ आपके पंच सत पंच अरि होइ तऊ रक्खैं यु हनि। इहि मंतहि श्री महाराण निति असपति दल अकनूल गिनि ॥ ७४ ॥

उदयाराण अभंग सकूं चीतौर समेसर। आए इन ही अचल अरयो जब साहि अकब्बर॥ सर भर किय संग्राम बरस द्वादश लों विग्रह। अंत भगो असुरेश गयो सिर पटकि स्वकं गृह॥ ए अचल किए इक लिंग हर अचल राज कै काज तुम्ह। इह मंतहि श्री महाराण निति अप्प सु जानि सुमल्लि अम्ह ॥७५॥

प्रगटे राण प्रताप जंग फुनि इहि गिरि जित्ते।

घोघुंदा पुर घाट घेरि आसुर सब पत्ते ॥ अबदुल्ला सु नवाब गिरुअ गज सहित गिराइय। मान सिंघ निय मान गयो कूरभ गमाइय ॥ दल सहस बहत्तरि असुर दलि हिन्दू पति रख्खिय सु हद। इह मंतहि श्री महाराण नित मुगल ईश छंडे सु मद ॥ ७६ ॥

अमर राण अवदात साहि जहँगीर सज्जि दल। आयो चढ़ि असुरेश मज्झ मेवार सु महियल ॥ थप्पि च्यारि असि थान लेन बसुमति सु बढ्यो बहु। सत्त बरस लों सीम नेटि अरि भग्गि रहे नहु। असि च्यारि थान इक दिन उठे अकर राण लिन्नी सु इल। इहि मंतहि श्री महाराण निति बसुधा धारण अतुल बल ॥ ७७ ॥

कुशल रहैं निय कटक बैरि दल होइ बिहंडह। रक्कै आवति रतन भूष मरिहे अरि भंडह ॥ भग्गें असपति भोर हत्थ ज्यों बहुरि न आवहिं। इहे मंत अह्म ईश किये सद्यन सुख पावहिं ॥ करिये न पिशुन भायो कबहिं कत्थन खल क्यों करि कहे। राजेश राण इहि मंत ते दूध डंग दोऊ रहे ॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥

सु वचन प्रोहित के य सुनि राजसिंह महाराण। कुशल जैति दुहु कढ्य ए मन्यो मन्त्र प्रमान ॥ ७९ ॥
करन दुग्ग सजि के कलह जित्तन दल असुरेश।

जानि सु परबत दल प्रबल राण चढ़े राजेश ॥ ८० ॥

॥ कवित्त ॥

राण चढ़े राजेश सहस पण बीश तुरग सजि । घुरत निसाननि घोष रबि सु ढंकिय हय खुर रजि ॥ मयंगल दल मय मत्त घटा उट्ठी कि श्याम घन । पयदल सहस पचीस सज्ज सायुध सूरं तन ॥ रथ जंत्रि सहस सस्त्रहि भरिय कर हां गिनति परंत किहिं । जग मज्झ कवन जननी जन्यो जग आइ जित्ते सु जिहिं ॥ ८१ ॥

सत्थ चढ़े अरि सिंघ वंक ये महा वीर बर ॥ जैत हत्थ जै सिंघ कुंवर करमेत कुलोधर ॥ भीम कुमार सभाग जोध रावर जसवंतह । भाव सिंघ भूपाल अरिन जन करन सु अन्तह ॥ महाराय मनोहर सिंघ चढ़ि नृप दलसिंह सु वीर बर । सामंत राण राजेश के कलह कूर कंकाल कर ॥ ८२ ॥

नृप अरसीह सु नंद कुंवर भगवंत सीह बर । फते सिंह करि फते गुनी सु गुमान सिंह गुर ॥ सबल राव सबलेस चंह झाला सु जैत चिर । सगतावत रावत्त केसरी सिंघ सिंह बर ॥ पांवार सु बैरी मल्ल पहु महा सिंघ रावत मरद । रावत चौंडावत रतन सी महुकम सिंस सु वह विरद ॥ ८३ ॥

सांवल दास सकाज राज रक्खन सु रट्ठवर ।

मान सिंह रावत सुमन्त चोंडावत सुन्दर ॥ चाहु-
वान चतुरंग राव केहरि रिन केहरि । रावत केहरि
रूप चंड चौंडावत उद्धरि ॥ रावत रुषमांगद बीर
रस सोलंकी बिक्रम सु ध्रुव । नृप दुर्गदास सो-
निंग सम सकल रट्ठवर सत्य हुव ॥ ८४ ॥

युग झाला जसवंत गोप रट्ठोर जैत कर ।
प्रोहित गिरवर प्रगट बषत बल बषत सीह बर ॥
रतन सेन षीची सु बीर कन्हा सगतावत । अबू
मलिक अजेज डोड महासिंह सुहावत ॥ गढ़ पती
महेजा अमर गिनि झाला नृप बर सिंचि झिलि ।
चढ़ि चले सज्जि चतुरंग चमु मनो उदधि सुरसरित
मिलि ॥ ८५ ॥

॥ दोहा ॥

मनो उदधि सुरसरित मिलि गुरु लहु अगिनत भूप ।
सत्य राण राजेश के चढ़े बीर रस चूप ॥ ८६ ॥
देवी पानिय देव गिरि, पंच कोश सुप्रमान ।
प्रथम मुकाम तहां प्रवर, मंडि महा मंडान ॥ ८७ ॥
सोर भटक अरु सेन सुर गिरिबर अंबर गाज ।
स्रवनन सद्द सुन्यो परै अरि दल बहुत अवाज ॥ ८८ ॥
प्रथम मुकामहिं हिन्दुपति मिले आइ मेवासि ।
पानोरा मेरह पुरा जूरापुरा जवासि ॥ ८९ ॥
सजि पुलिन्द सब पल्लि पति, सहज पचासक सत्य ।

ध्रुव पय रोपन धनुष धर अमर सूर सु समत्थ ॥९०॥
तरकस युग २ पिट्ठि तिन संपूरित सर युद्ध ।
कथे कत्थ नट बिकट लों दुरय न तिन रिपु युद्ध ॥९१॥
तरु दल छेदे तक्कि कैं ब्योमहिं उड़त बिहंग ।
बदि लाखक में दुद्धनहि बेधन बान अभंग ॥ ९२ ॥
प्रनमि हिंदुपति पाइ सब ठट्ठे महलहिं ठट्ट ।
मनो गंग यमुना मिली सलिल समेल सुघट्ट ॥ ९३ ॥
हुकम दयो तिन करन हर भारहु घाट सभार ।
दस दस सहस रहो सु भर पिशुन न हूै पैसार ॥९४॥
षरच सु लेहु षजान तें ध्रुव पद रोपो धीर ।
रश्चित रुक्कि रिपु रुक्कि के मारो बड़ बड़ मीर॥ ९५ ॥
यों कहि सब अभिमानि के सबनि दये शिर पाव ।
अश्व कनक भूषन अषय बसुधा ग्रास बढ़ाव ॥ ९६ ॥
पंच फौज तिन रचि प्रबल रहे घाट गिरि रुक्कि ।
आवन जान न लहैं अरि थान २ मग थक्कि ॥ ९७ ॥
पत्तनेन बारा सु पहु गिरिवर तहँ गुरु गाढ़ ।
भार अठारह तरु भरित अह निसि लगत असाढ़ ॥९८॥

॥ कवित्त ॥

अह निसि लगत असाढ़ नित्य बरषे तहँ नीरद । नदी नाल नीझरन सरस बसुधा रसाल सद ॥ चहूं ओर गुरु अचल घाट दुर्घट घन घट्टिय । बंको-गढ़ बहु बिकठ न्मरि अरि दलन निहट्टिय ॥ पत्त

सु थान महाराण तिन नेनवारा गुरु गढ़ निपट ।
असपति अनेक आवे तऊ जयति हिंदुपति खग्ग
झट ॥ ९९ ॥

संमुह दल जैसिंघ कुँवर रक्खें स कलापह ।
दल सुभीम दक्खनहिं मंडि बहु सुभट मिलापह ॥
भुजा बाम भगवंत सिंह महशय बंधू सुअ । रखे
पीठि महराय मनोहरसिंह मेरु धुअ ॥ दिसि च्यारि
रक्खि दिग्पाल ए च्यारि च्यारि हाजार हय । नव
सहस तुरग विचि हिंदुनृप जुद्ध राण राजेश जय॥१००॥

पातिसाह दल प्रबल तदपि महराण तेज तिन ।
परे न अग्गे पाउ हिरनपति ज्यों हूतासन ॥ तरु तरु
थंभतु तकतु झकतु जहं तहं गुरु जंगल । ज्यों कुरंग
जंगली समै सम तल महि मंडल ॥ सापुरस सोह
सीवान इन अचल अचल कै आदरत । ओरंग सुसेवत
ओझेत चौंकि चौंकि उट्टंत चित ॥१०१॥

॥ दोहा ॥

असपति अहनिसि ओझकतु राणतेज अहहेज ।
आयो के आयो सुभव अनमी हिंदु अजेज ॥१०२॥
मंडै भूलि न हूं महल सहल न चढ़त जगीस ।
दहल राण राजेश की दुरधौ रहत दिल्लीश ॥१०३॥
डरत डरत असुरेश दल करत सुकास सकोस ।
आए उदयापुर निकट दुज्जन पूरित दोस ॥१०४
वसुधाधर देखे निकट ओघट घाट अजीत ।

थंभो निज दल तिनहि यह भयो साहि भयभीत १०५
धसे न को धाराधरहि धर सम आए धाइ ।
राणनि सुनिये वत्त रचि कविलेश यों कहाइ ।

॥ कवित्त ॥

अब तज्जि न अहमेव उनहिं अहमेव सुआवहु । देखि देखि निज दुर्ग कहा निज मन कंपावहु ॥ धर सम आए धाइ धसो अब क्यों न धराधर । जुरो आइ इत जंग रोस करि लेहु रठा वर ॥ पिखिन पहार परि क्यो रहे पय पय क्यों थंभो सुपथ । राजेश राण कहि साहि सुनि पवन वेग परखरहु रथ ।

॥ दोहा ॥

लरो तो आवहु अचल विचि, न मह कि छंडिव देश।
जाहु शाहि जुग्गिनि पुरहि, राण कहत राजेश ॥
संदेशा यों श्रवन सुनि, लग्गी अरि उर लाइ ।
रोस पूर महराण को, बढ्ढ हिये न समाइ ॥ १०८ ॥
मनु मद पीवो मक्कडहि, डसि वृश्चिक लसि भूत ।
किंकिं कौतुक ना करै, सो दिल्लीपति सूत ॥१११॥

॥ कवित्त ॥

कथन राण अति क्रूर भूरि भृकुटी चढ़ाइ करि। दब्बि अधर करि मींछि भूत भासुर सरोस भरि ॥ चढ़न कह्यो चकतेस बरजि तब खान बहादर । अहो कवि ले आलंमे विकट आयो पहार वर ॥ नन लाग नारि गोरान को हय सहयी निवहे न तहं । इहि मंत

अन्य दल पाठवहु अप्पन साहि रहो सु इह ॥११२॥

मानि महादर मंत दिलीपति रह्यो मानि उर।
सहिजादा निज सद्दि अगुरु सुलतान अकब्बर ॥
सकल भांति सनमानि कह्यो तुम करो कटक्की । जोर हिंद गिरि जोर हलकि गहि लेहु हटक्की । आवै सु धाइ दल लेहु अति शैल सकल करि के सरद । करि जोर हिंदु दल सो कलह मही लेहु बाडम मरद ॥ ११३ ॥

साहि हुकम सुप्रमान लटकि शीशहि चढ़ाइ लिय । सब्ब करी सुसलाम साहि नन्दन अनंत प्रिय । अद्ध लाख सजि अश्व सहस सिंधुर मनु सेलह । किते खान उमराव गर्व्व गाढ़े लिय गैलह । हर बल हुसेन अगोर नारि आरा बगुर? । चढि चल्यो अकब्बर चंड चित पत्तन तक्खन उदयपुर ॥ ११४ ॥

प्रबल पौरि प्राकार पिक्खि प्रासाद गृहं गृह । गोष झरोषा गेरि अजरि तजरी सुजहां तहं ॥ बहु देवल बाजार हट्ट भनि केउ हजारह । संगी काम सपल्ल अटा चित्रसारि अपारह ॥ जहं तहं सुकुंड वर वापिका वन उपवन सर वर सलित । भूनारि शीश जनु भालि पल नगर उदय पुर चैंन नित ॥ ११५ ॥

निरखि उदयपुर नैंन रिपु सुपत्ते अदभुत रस । भुल्लि रोष सुधि भुल्लि देखि कमठान चढ्यौं दिस ॥

सेमुंह करत सराह वाह फुनि वाह वदंतह । राज थान वच्छा सुराय इत माम अनंतह ॥ पुर चहुं-ओर पराव परि विषधर ज्यों चंदन बिटपि । पतिसाह सु ओरंग साहि पहु थान थान तब थान थपि ॥ ११६ ॥

थप्पि थान चीत्तोर थप्पि पुर मंडल थानक । मंडल गढ बैराट भैंस रोडहि सुभयानक ॥ दश पुर नीमच दुर्ग्ग चलहु सनकंध हचाचर । अरु जीरन मंट्राल कपासनि नगर राज बर ॥ जरि थान उदेपुर भरि यवन अति अनीति बरती अवनि । पतिसाहि साहि ओरंग को जवन परत छिति रयनि दिन ॥ ११७ ॥

॥ दोहा ॥

थान जरे जहं तहं सुथिर, अरि ओरंग असुरेश ।
मेदपाट महि मंडलें, राण सुनी राजेश ॥ ११८ ॥

॥ कवित्त ॥

मेदपाटपति महल भूप भूपह सु भूमि भर । महाराइ रावर महिंदरावत घन घुंमर ॥ राजा रावर ठाल आदि उमराव अनेकह । हिंदूपत्ति किय हुकम सजो निज सेन सटेकह ॥ भंजो ब थांन असुरेन भर निज निज धर रक्खो सुनृप । अनसंक कंक अरि उत्थपहु तिलन गिनो सुरकेश तप ॥ ११९ ॥

॥ दोहा ॥

हिंदूपति श्रीमुख हुकम, सुबर वीर सुप्रमानि ।
अप्प अप्प रक्खन अवनि, चढ़े तुरंग पलानि ॥१२०॥

॥ कवित्त ॥

गोपिनाह कमधज्ज चढ़े विक्रम चालुक्कह । रावत रतन उदंड चंड चोंडा उत रूपह ॥ कहिं सगता उत कन्ह रंग रुख मागच रावत । चढ़े राव चहुवान केसरी सिंह सुहावत ॥ समलह दास कमधज्ज चढ़ि चढ़ि दयाल मंत्री सवर । केसरी सिंह रावत चढ़े चोंड़ा उत नृप राघ चिर ॥१२१॥

चढ़े कुंवर वर गंग केसरीसिंह सुनंदन । सगता उत कुल सूर जोर अरि जूह निकंदन ॥ दुर्गदास सोनिंग चढ़े राठौर सुचंडह । महुकम सिंह मरट्ठ चोंडहर अकल अदंडह ॥ काल नरिंद जसवंत चढ़ि दिल्लीपति दल बल दहन । सामंत राण राजेश के गुरु गुमान गय घड़ गहन ॥ १२२ ॥

॥ दोहा ॥

चढ़ि उमराव चतुर्द्द सह, उद्धासन असुरान ।
सेन सहस दस अश्व सजि, निहसत नद्द निसान १२३

इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे महाराणश्रीराजसिंहजीपातिसाहओरंगसाहिसमरसंवादवर्णनं नाम दशमो विलासः ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

सोलंकी विक्रम सुभट गोपिनाह कमधज्ज ।
रोमी तिन चनरल तले, साहसवंत सकज्ज ॥ १ ॥
आवत जब जाने असुर, देव सूरि पुरघट्ट ।
रोमी द्वादस सहस दल, बल आराव विकट्ट ॥ २ ॥
नारि तहां औघट निपट पंचकोस परजंत ।
अश्व एक पथ अति क्रमें, चीटी ज्यों सुचलंत ॥३॥
दीनों आवनहु अन दल, नारि मध्य निरभार ।
रोके तबहु हुहाट के, पहुं निकरन पैसार ॥४॥
मारि मचाई हुहुमरद, विक्रम चालु कबीर ।
गोपिनाह कमधज्ज नैं, मारे बड़ बड़ मीर ॥ ५ ॥

छंद त्रिभंगी ।

विक्रम बलवंता रणरस रंता अति हित मंता सामंता । जे सुननि परत्ता तेजी तत्ता वसुह वदत्ता दुद्दंता । करबालऽरु कुंता हत्थ फुरंता वीर विरंता बाधंता । प्रजरंत पलित्ता जंगहि जुत्ता धम चक धुत्ता गुरुमत्ता ॥ ६ ॥

रोमी मुह रत्ता घेरि सुघत्ता, भय भय भित्ता चल चित्ता । अल्लह उचरंता असुर उधंता, खड़बड़ खंता मदमत्ता ॥ तक्के गिरि गत्ता शरण असत्ता मन सुमिरत्ता तिय पुत्ता । बिसरे सुधि वत्ता के तन छित्ता तरु तरु लित्ता विलपत्ता ॥ ७ ॥

कितने क कविल्ला उररि अमिल्ला अकिल हलल्ला महि मिल्ला । काजी बहु मुल्ला बिफुरि बिलुल्ला झर मुह झल्ला सिर खुल्ला ॥ नर निपट नवल्ला रंग रसिल्ला दंडहु झल्ला मनु मल्ला । खग तेजह भल्ला बान बहिल्ला गुरु जग हिल्ला हर हुल्ला ॥ ८ ॥

कत्ती किल किल्ला सक्ति सलिल्ला तोप बिमुल्ला जाजल्ला । दल मचि दहचल्ला सोह उजल्ला नहिं बिचि पल्ला घर भल्ला ॥ घूमत घामल्ला छक्क छयल्ला तजि गृह तल्ला एकल्ला । तुटि तूरत बल्ला हरि गज हल्ला कापर डुल्ला अकतुल्ला ॥ ९ ॥

सोलंकी सूरा बवकि बिहूरा किय भक भूरा अरि भूरा । नाहर ज्यें तूरा बजि रन तूरा सुर सिंधूरा परि पूरा ॥ पर दल चकचूरा करि बल क्रूरा बरि बर डूरा रन रूरा । अरि बिष अंकूरा सकल समूरा ज्यें जर मूरा उनमूरा ॥ १० ॥

गोपी कमधज्जा सूर सकज्जा अटल अजज्जा गुरुलज्जा । सिंधुर हय सज्जा रूप सुरज्जा धरगिरि धुज्जा खग बज्जा । तीखे तनु तिज्जा भूरत भिज्जा गगन सुगज्जा आबिद्धा । भय करि रिपु भज्जा शीश ससज्जा गिद्धि निषज्जा गहि बुद्धा ॥ ११ ॥

दुज्जन दहवट्टा विमन विकट्टी खग भँग सुट्टा उदभट्टा । नर के ज्यों नट्टा उलटं पलट्टा भरत कु-

लट्टा तँग तुट्टा ॥ जोधा रस जुट्टा घनदलघट्टा डपट दपट्टा गाहट्टा । झुकि झुकि खग कट्टा जम्झट सझट्टा रण रस लुट्टा आहुट्टा ॥ १२ ॥

खरबरि घन रुंडा बिचलि बिहंडा महि परि मुंडा खल खंडा । आसुर सुउदंडा बिलभ बितंडा प्रबल प्रचंडा भुज दंडा ॥ कर सर कोदंडा बहु बल-बंडा भल किय भंडा खल खंडा । करि कट्टि भसुंडा अरिन अखंडा चढ़ि रण चंडा झर मंडा ॥ १३ ॥

॥ कवित्त ॥

मंड्यो झर मुंछाल काल रोमीन खयं कर । सोलंकी नृप सूर नाम विक्रम सुबीर नर ॥ साच वाच साधर्म्म गोपिनायक युग कित्तिय । देव सूरि दुर्घाट यवन सेना तिन जित्तिय । लुटि लच्छि खजान अनेक विधि राणा राजेश्वर सुबल । जयपत्त प्रथम इहि जंग जुटि भल भग्गो असुराण दल ॥ १४ ॥

इति श्रीमन्मानकविविरचिते राजविलासशास्त्रे
देवसूरिदुर्घाटे रोमीसाहु प्रथमयुद्ध-
वर्णनं नाम एकादशो विलासः ॥११॥

॥ दोहा ॥

उदय भान कूअँर अमर, चाहुवान चतुरंग ।
उदयापुर थाने उररि, मारे म्लेच्छ मतंग ॥ १ ॥
रुक्मांगद रावार को कूअँर सूर सपच्छ ।
सहस पचीसक असुर पर, नंखी वग्ग समच्छ ॥ २ ॥

सूरा एकहि सहस सम, सहसहि सद्भुत एक।
सहसनि हू सद्धै नहीं, सूरा एक अनेक ॥ ३ ॥
धनि आसगनि धीर धनि, धनि २ चित्त सुधर्म्म।
साँई कज्जें रचि समर, मारे असुर अधर्म्म ॥ ४ ॥
पचीसोहि पवंग सों, सहस पचीसनि मध्य।
असुरायन उद्धंस तें, निकरे सेन सुसद्धि ॥ ५ ॥

छन्द--हनुफाल।

तुट्टे सज्यो सहतार, कलि उदयभान कुमार।
सह यवन सेन सुमध्य, यों धार मंडिय युद्ध ॥ ६ ॥
करवाल कुंत रु कत्ति, आदेया देबि उमत्ति।
रिपु उदरि परिघ सुरोरि, दल मचिय दोरादोरि ॥७॥
मुख बचन चूक रे चूक भट बिकट अग्गि भभूक।
बिफुरे सुहिंदू बीर, मारंत बड़ बड़ मीर ॥ ८ ॥
हय २ सुकेइ जकंत, के सिलह जीन कुकंत।
उझके सुसोवत केक, कहि तेक तेक रे तेक ॥ ९ ॥
भुंजते के भय भीत, उठिं भगे बारि अपीत।
सतरंज पासा सारि, झरपे सुखेलहि झारि ॥ १० ॥
कितनेक करत निमाज, धावंत ध्यानहि त्याज।
हलहलिय दल परिहाक, छबि उतरि उत्सक छाक ११॥
सुंदरिय नभ घन घोम, गडडंत गज्जत गोम।
भरहरिय कायर भग्गि, लकलकिय उर उर लग्गि ॥१२॥
रिपु रुंड मुंड रुडंत, मुख मार मार सकंत।

उड़ि श्रोन छिंछि अपार, बहि चले रत्त प्रनार ॥१३॥
भल हलत बिलह बभान, भट उभट बज्जि अमान ।
किलकार बीर कुकंत, हलकार केक हकंत ॥ १४ ॥
कटि शीश नचत कमंध, ज्यों फिरत नर आचंध ।
कटकंत हड्ड कटक्क, चनकंत षग्गि भटक्क ॥ १५ ॥
भभकंत इभ्भ भसुंड, बहिरत्त दंड बिहंड ।
हय नरनि परि संहार, हरषंत हर रचिहार ॥ १६ ॥
गिद्धिनिय अरु गोमाय, पल लेइ केइ पुलाय ॥
तुटि टोप तुबक रु त्रान, कोदंड कुंत क्रपान ॥ १७ ॥
चोसट्ठि पीवत चोल, भरि भरि सुपत्र अलोल ।
बिहसंत बीर बेताल, कलिकाल भाल कराल ॥ १८ ॥
अरि मित्र अप्पन आन, तन परत सुद्धि सयान ।
हहरंत के मुख हाय, लगि जानि ग्रीषम लाय ॥१९॥
तरफरत के अधतंग, असि छिन्न भिन्न सुअंग ।
संहरिय आसुर सेन, जनु परिय सिंह सुएन ॥ २० ॥
अटक्यो न किहि मुष आइ, बर बीर धार बलाइ ।
चहुवांन रिन चित चंड, अति सबल सकज अखंड ॥२१॥
निकरे सु अरिन निहत्ति, अपियात अचल सुकित्ति ।
राणा महाराजेश, सनमान कीन विशेश ॥ २२ ॥

॥ कवित्त ॥

सनमानिय सुविशेष दिए बर ग्राम दोय दस ।
सोवन साकति अश्व सरस शिरपाव जरक्कस ॥ कंक
बंक करवाल कनक नग जरित कटारिय । बीरा प्रबर

कपूर बहुत चित हित्त बिस्तारिय ॥ रिन रुपमांगद रावत्त को उदयभान अत्यो कुंवर । चहुवान बीर रस चौगुने राणा कहत राजेश वर ॥ २३ ॥

इति श्रीमन्मान कवि विरचिते श्री राजविलास शास्त्रे उदयपुर स्थान के कुंवर उदय-भानकृत द्वितीय युद्ध वर्णनं नाम द्वादशमो विलासः ॥१२॥

॥ दोहा ॥

अंगज साहि औरंग को, अकबर साहि अमान ।
धस्यो पहारनि मध्य धर, रिन जित्तन महारान ॥१॥
बाजी सह बत्तीस सों, नर वे केइ नवाब ।
नारि गोर आराब गुर, सजि दल चढ्यो सिताब ॥२॥
हरवल अल्लि हुसेन हुअ, पक्को पंच हजार ।
कलह कूर कंकाल कर, रढ छंडे नन रारि ॥ ३ ॥
झंड रुप्पि झारोल यह, द्वादश कोश प्रमान ।
नेनबारा गिरिवर प्रगट, सुभट थट्ट महाराण ॥ ४ ॥
निसु निबत्त हिन्दू नृपति, सामंतनि सनमान ।
पठये आसुरि सेन पर, जंगहि भीषम जान ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ॥

तिनहि बर तुरंत बीर बिफुरंत चिवंतह । तरित जानि तटकंत बिमल कलिकंत बधंतह ॥ महा सिंघ सुंडाल राज रक्खन बड़ रावत । रतन सीह गुरु रोस चढे रावत चोंडावत ॥ चहुवांन राव फुनि सज्जि

चहे केसरि सिंह सुकंक बर ॥ बयवेनि सलित ज्यों सेन तिहुं उलटि जंग असुरान पर ॥ ६ ॥

बीर बैर बिछुरिय भीर उम्भरिय रोस भर । सिंधु राग संभरिय धोम धुन्धरिय ब्योम धर ॥ सांई नाम संभरिय सह संघरिय सुबंबक । धक्क हक्क धम चक्क उद्दरि आसुर झक उम्झक ॥ सुंडास काल लंकाल सम झंड २ देते झपट । रावत्त राण राजेश के लोह छोह पावक लपट ॥ ७ ॥

दुट्टह ठट्ठ हमुट्ठ भुट्ठ आरूढ़ जुझारह । मंडि मार हक चार बज्जि बैरिन शिर सारह ॥ बरषि बान दुरि भान रेनु नभ उज्झिर डंबर । कल कल मचि मचि कूह जहां कबिलान उम्झंझर ॥ तोबा करंत हहरंत हिय घूक भंति रन बन घुसत ॥ रावत्त मत्त महसिंघ मुख शत्रु सेन न धरंत सत ॥ ८ ॥

छंद गीतामालती ।

धसमसिय धर गिर शिहर उद्धसि बीर गुर गव उम्भरे । कलकलिय परि मचि कूह कलकल झलल बिज्जुल उग्घरे ॥ झटझटिय बजि रिन झाक झरझट बिघट घन घट तच्छयं ॥ महसिंघ वंक उमत्त रावत बैरि करन बिभत्थयं ॥ ९ ॥

चल प्रचलें अरि दल सकल चल दल होत रल तल सासहें ॥ झलंमलत सिलह सटोप झलमल चपल

चंचल आरुहैं । करवाल रिपु कुल काल कर महि मरद मारत म्लेछयं ॥ महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभत्थयं ॥ १० ॥

सलसलिय फनधर सधर संकर कंध कच्छप कस-मसे ॥ झलझलिय जलनिधि सलिल थल जल अनल बिनल सु उद्धसे । डर बिडर दिग्गि दिग्गि बिदिग्ग डंबर यहउ झंपर पित्थहं ॥ मह सिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभत्थयं ॥ ११ ॥

चढ़ि चाक चहु चक उभक हकबक छैल मद छक छुट्टयं । किलकंत कंत हसंत कलरव अंग जहं तहं जुट्टयं ॥ मचि मार मार बकंत मुष मुष छज्यों नट इव कत्थयं । महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभत्थयं ॥ १२ ॥

घनकंत घग्ग उनग्ग घग्गन झनकि आनि कि झल्लरी । भनकंत भेरि नफेरि चुंगल तूर चंबक दुरबरी ॥ गावंत सिन्धु राग गोरिय पिशुन पारिन पत्थयं । महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभत्थयं ॥ १३ ॥

कटि कंध अंध कमंध आसुर बीर नच्चत बावरे । झटकंत दिग्गि दिग्गि धाइ षग झट उभट सभट उतावरे ॥ चलहंत सूर सनूर साहस मीर मीरन संमिले । रघु चोंड हर गुरु रतन रावत रिनहि रिपुदल रलतले ॥१४॥

बिबि खंड खंड विहंड बाहू मिलिय मत्थय संभिरे। लखि लोह छोर सुरत्त लोयन वीर रस बर बिस्तरे॥ घट बिघट घाट बिघाट धाइय घुरिय घन घन घुंघले। रघु चोंड हर गुरु रतन रावत रिनहि रिपुदल रलतले॥ १५॥

भभकंत इभ्भ भसुंड तुंडनि प्रचलि श्रोन प्रनालयं॥ ढरि ढाल लाल सुपीत नेजा ढंग मिलि ढकचालयं। घूमंत असि छक विछक घाइल दुट्टि खप्पर टलटले॥ रघु चोंड हर गुरु रतन रावत रिनहि रिपुदल रलतले॥ १६॥

लटकंत किहि शिर पीठि लडलट तदपि चट चट ना घटें। असि कंक बंक उभारि अंबर फिरत टट्टर के फटें॥ उड़ि छिंछि श्रोन सजोर संमुह बोल चख्खर संचले। रघु चोंड हर गुरु रतन रावत रिनहि रिपु दल रलतले॥ १७॥

पय भरत रोपत कुंत धर पर लरत परत न लरथरें। जनु जनमि धर इक जंघ जनपद सूर सूरन संहरें॥ रिण मिलित रोर सुयवन रजवट गलित गज घट गजगले॥ रघु चोंड हर गुरु रतन रावत रिनहि रिपु दल रलतले॥ १८॥

तुटि बिलह टोप सुत्रान तुरकनि तेक तुबक तुरंगमा। धज नेज तोरि झंझोरि झंडनि झाक

बज्जि झमंझमा ॥ गटकंत युग्गिनि रुहिर गट २ द्दबट दह बट दुज्जनां। केसरी सिंघ सुकंक गहि करि राव भल सज्यो रिनां ॥ १९ ॥

गहगहिय बग गोमाय गिद्धिनि झुंड रुंडनि झ फरें। कुननंत अंत फुरंत फेफर तंग भंग सु तरफरें ॥ धावंत शून तुरंग सिंधुर तोरि शृंखल बंधना। केसरी सिंघ सुकंक गहि करि राव भल सज्यो रिनां॥२०॥

हर अट्टहास प्रहास प्रमुदित कमल गल माला गठै। बेताल बपु बिकराल ब्यंतर बीर बब बब करि उठै॥ नच्चन्त नारद तान नव नव बीर बरत बरांगना। केसरी सिंह सुकंक गहि करि राव भल सज्यो रिना॥२१॥

लगि जेठ लुत्थि अलुत्थि लुत्थिन आन अप्पन को लषे॥ परि दंति पन्ति पवंग पाइल धंष धर धरनी धुषे। लुट्टंत हेम सुरूप लुत्थिय करि तुरंगम कूदना॥ केसरी सिंघ सुकंक गहि करि राव भल सज्यो रिनां॥२२॥
दुग सेन दह दिशि भर अचल सो अचल दल कल कंदले। भरहरिय अल्लि हुसेन तग्गिय साहिजादा संपुले॥ जय पत्त जंगहि राव रावत बोल रक्खे बहु गुनां। केसरी सिंघ सुकंक गहि करि राव भल सज्यो रिनां॥२३॥

॥ कवित्त ॥

को अब्दुल्ल हरवल्ल को सु करबल्ल अठित्तह। किं गज ढल्ल मभिल्ल भूप छातल्ल छबल्लह॥ दुज्जन कोन

तुहिल्ल कहा कोतिल्ल व विल्लह । किं सु किन्न बनि निल्ल नेत किं चित्त सुलल्लह । सादुल्ल मल्ल एकल्ल वे हय भल्ल जे चल्ल जिन । रावत्त मत्त महसिंघ सुव रहे न को आसुर मुरित ॥ २४ ॥

रावत चढ़ि रतनेश असुर दल कट्टि अपारह । रर बरि रंक करंक भूमि बल लिय भर भारह ॥ सार धार झंकझार झंपि पिल्यो उद्धम अति । हरवल अल्लि हुसेन भगो सुन सावहि रन भति ॥ भय पाइ साहि दल सब भगो भगो साहिजादा डरत । पय गिरत परत लरथरत पथ धावत पल धीर न धरत ॥२५॥

उद्धंसे असुरान षान सुलतान षुरेसिय । मत्थ थ बिनु किय मुगल सैद संहरे बिदेसिय ॥ पिट्टे शेष पठान लोदि विल्लोचि बिडारे ॥ भंजे भंभर भूरि सकल सरवानि संहारे । हबसी रुहिल्ल उजबक सुअ-नि गक्खर भक्खरि परि गहन ॥ चहुवान राव केहरि सुवहि महाराान किय मह महन ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

तजि पहार भग्गो तुरक, गिरत परत उरभंत ।
घाट घाट घन घट घटतु, हिय सुहारि हहरंत ॥२७॥
कहुं सुनारि हयन्नारि कहुं, कहुं रथ सिलह सभार ।
हय गय भर आसुरन रनि, परि गय मग संहार ॥२८॥
फागुन मास सुफरहरत, तनु थरहरत सुशीत ।
सब निधि कोश पचीस लों, भग्गोरिपु भयभीत ॥२९॥

आए साहि हुजूर सब, कटे बढ़े कद्रूप ।
कहि उद्दंत आलम कबिल, इहि रहना न अनूप॥३०॥
जोरावर हिंदू जुरे, झुंड २ रहे झूमि ।
देस भूमि के भूमिपति, अप्पन सकल अभूमि ॥ ३१ ॥
ए पहार पति आदि के, रहे पहारनि रुक्कि ।
लागत अपनो इहि लगे, थान २ मग थक्कि ॥ ३२ ॥
मारे पर्बत मध्य ए, फुनि जो करे प्रयास ।
गहो धाइ चीतोर गढ़, महा अचल मेवास ॥ ३३ ॥

॥ कवित्त ॥

साहि सुबचन प्रमानि सकल दल साज बेग सजि । कियो सुपत्थो कूंच तबल टंकार तूर बजि । बढ़ि अवाज बसुमती हलकि ज्यों जलधि हिलोरह । उबट बट्ट गज थट्ट बंधि कंठल चहु ओरह । नरवै नवाब उमराव बहु पर अप्पन समुझि न परत । चित्र-कोट जाइ बेगें चढ्यो अति दिल अंदर आदरत ॥३४॥

॥ दोहा ॥

पच्छो भय धरि दिल्लिपति, पुल्यो कोस पचास ।
गह्यो जाइ चीतोरगढ़, उपजी जीवन आस ॥ ३५ ॥

इति श्री मन्मान कवि बिरचिते श्रीराजबिलास
शास्त्रे सुलतान मुखभंजन गोरीदलगंजन बर्णनं
नाम त्रयोदशमो विलासः ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सज्यो सुदुर्ग बिशेष कै, पोरि बुरज प्राकार ।

नारि गोर आराध रुपि, अन्न सुसंचि अपार ॥ १ ॥
कबिल गहृज एसी करत, महि मेवार बसाउ ।
रोकि चित्र कोटहि रहूं, जाव जीव नन जांउ ॥ २ ॥

कवित्त ।

पहिलोने पतिसाह बरस द्वादस करि विग्रह ।
गट लिन्ने बिनु गह्यो गरब गुरु छंडि २ ग्रह । हों
अभंग ओरंग साहि गढ़ सुबस बसांउं ॥ महि सु लेहु
मेवार दाम निज नाम चलाऊं । दिल्ली न जाउ इहि
दुर्ग्ग ही जां जाऊं तां लग रहों । यो लोक सुनाउन
गह्म गुरु साहि करत धर संगहों ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

रह्यो साहि ओरंग रुपि, चित्रकोट गढ़ चंग ।
केहरि ज्यों गिरि कंदरा, रोकि रहे रिन रंग ॥ ४ ॥
बिट्टिय गढ़ दल बल बिकट, ज्यों जलनिधि मधिदीप ।
ठोर ठोर चोकी ठई, उदभट भट अवनीप ॥ ५ ॥
गंग कुँअर गुन अग्गरो, सगताउत सिरमोर ।
आप जनाउन आसुरनि, चढि लग्गो चीतोर ॥ ६ ॥

कवित्त ।

बय किसोर तनु गोर समर बरजोर सूर तन ।
दिल उदार दातार बधत बड बार उंच मन । सब
सयान गुरु मान राज महाराान सभा मुख । भर किवार
मेवार सुभट सिरदार सदा सुख । केसरी सिंह रावत्त
को कुंअर गंग बहु सेन बनि । चढ़ि धाए गढ़ चित्तोड़

को आप जनाउन असुरनि ॥ ७ ॥ सो कुंजर साहि के मग्ग बिचि मिले भरत मद । अंजस गिरि से संग रंग मचकुंद कुसुम रद । घम २ घूघर घमकि ठनन घंटानि ठनंकत । पीठि झूल पट कूल पढ़त पीलवान धत्ता धत । अंकुस प्रहार मानै न जे तोरत संकर साख तरु । बर अगापच्छचरखी चलत लेत लपेटें सुंड भर ॥ ८ ॥

सबल दरोगा सत्य असुर असवार पंच सय । नेजा बजत निसान हेष हेषनि हीसतु हय । तकि २ मारत ताक कठिन कम्मान बान कर । पाषर अरित पवंग मार संनाह टोप शिर । दो दो कटार कटि तोंत दो दो दो तेग बंधे दुमन । चोकी सुदेत बन चोकसी गजनि सिखावत सुगति गुन ॥ ९ ॥

सुंडारे साहि के निरखि बहुरूप निट्ठुवर । गरजे कुंवर गंग फोज असुरनि अड्डो फिरि । फेरो रे कहि पील हक्कि पीलवान हँकारे । सबनि अग्ग संहरो उररि असि बर उब्भारे । महाराण दुहाई कहु सुमुख हत्थि ले चलो गेल हम । नन जान देहु कुंजर सु इक तेक तुबक समरोब तुम ॥ १० ॥

सुनि सु दरोगनि सेन आइ गय हत्थियन अड्डे । मार मार मुख बकत अधिक ढकवार उमंडे । असि उभारि ऊघरी कुंअर धायो जन केहरि । कबिल निकाल कराल झाक बज्जी सुझाट झरि । मारे सु

मीर बड़ २ मुगल उछरि २ उभ्भरि उररि । मचि करल कूह करि जूह मधि गंग जंग मंड्यो सुपरि ॥ ११ ॥

छन्द त्रिभुनाला ।

गरज्जि कुंअर गंग, रोके करि जंग रंग । अंबर उभारे तेग, बाहत पवन बेग ॥ १२ ॥

तुट्टे रिपु तुंड मुंड, बारुण करे बिहंड । लर थरें परें लुत्थि, अंनो अन्य सं आलुत्थि ॥ १३ ॥

आराब छुट्टे अछेह, मानों गज्जें भद्दो मेह । धर गिरि धुआं धोर, उठे बीर चहूं ओर ॥ १४ ॥

किलकि २ केक, तुरकनि झारे तेक । लुंबि झुंबि ललकारि, हक्कें बक्कें मारि मारि ॥ १५ ॥

उछरै उत्तंग श्रोन, छिंछि भिंछि धप्पी छोनि । टट्टर बहें गुरज्ज, प्रथक उड़ै पुरज्ज ॥ १६ ॥

सट्टे खुट्टे तुट्टें सत्थ, लग्गे योधा लत्थो बत्थ । धा किल्ले उठिल्ले धाइ, किन्ने छिन्ने भिन्ने काइ ॥ १७ ॥

उरर देते उप्पट्ट, झाक बज्जें झट्टो झट्ट । खुप्परि षनंके खग्ग, अरि भग्गे अग्गो अग्ग ॥ १८ ॥

कबिल नचें कमंध, छिछटें उछट्टें बंध । घाइन छके घुमंत, जनों दंती दुरदंत ॥ १९ ॥

परिग सुदंति पंति, भरनि पहार भंत्ति । छायो गेंन रेनु छाय, हहरे करें के हाइ ॥ २० ॥

कायर भगे कुरंग, समरि सुगेह संग । सम्हे भिरे सर सूर, बंबक चहक्कें तूर ॥ २१ ॥

तुट्टे टोप तेग त्रान, नोरंगे नेजा निसान । अश्व भारे असवार, धावें लग्गें खग्गें धार ॥ २२ ॥

रोरें जोरे भारे कुंत, उभारे बाहें सुमंत । निकरें परें निनार, दरसें लसे दुमार ॥ २३ ॥

महि रुरें रुंड मुंड, भभक्कें करी भसुंड । सोनठि पीवें सुचोल, उछंगे रंगे अल्लोल ॥ २४ ॥

रुंडमाला गंठे रुद्द, निहरखें नारद्द नद्द । पल-चारी चष्षे प्रेत, डक्कारे हक्कारे देत ॥ २५ ॥

गिद्धनी भाषे गेन, तुट्टे खुट्टे मंस चैन । भारी यों मच्यो भारत्थ, प्रगटे मनो पारत्थ ॥ २६ ॥

नग्गे ते दरोगे भोर, जैसे प्रात होते चोर । हाक फुक्की हाहाकार, दिल्लीपति दरबार ॥ २७ ॥

धाओ रे धाओ को धीर, मारी जोइ बड़े मीर । दंती सोई एक दोर, जाय लिए हिन्दू जोर ॥ ८ ॥

कवित्त ।

जीते कुंअर सुजंग कितक करि जूह भंग करि । कितक भारि पीलवान तोरि संकर गय भर हरि । सब में देखि सरूप हत्थि दस बीस सुहंके । कुंतअनी चुंकरत सुभट हुंकरत सुबंके । निरभय निसंक बहु रेनि गम हत्थिन हल्लत तिन हनत । केसरी सिंघ रावत्त को गंग न आलम कों गिनत ॥ २९ ॥

सुनी साहि ओरंग गंम कुंवर लिन्ने गज । बदत छाइ बिलखाय शीत मारयौ मनु पंकज । उरहि प्र-

सक्कि ससक्कि झुंझि झलमलिय स्वेद तन, गय सुबुद्धि बर बुद्धि हत्य दलमलत दीन मन । गहु २ सु जान पावै न गज गहु सु गंग हम गज गहन । हंसिहैं जिहांन हत्थी गये इन सुबत्त कछु सोह नन ॥ ३० ॥

धपे धींग पर धींग षेंग चढ़ि २ सुसेंग गहि । परतनाल परताल बज्जि पुरताल धुज्जि महि । कवच त्रान पष्षरनि करी झंकुरिय झमंझम । तबल तूर टंकुरिय निगम संकुरिय क्रमंक्रम । कलकलिय सुरव बंबरि बहरि अरकउ झंषरि डरि बिडुरि । पिक्खे कुंआर आवत पिशुन लुब्ब २ जलनिधि लहरि ॥ ३१ ॥

करि अग्गे करि जूह बग्ग थंभे सुबाजि बर । कल हणि कंठल कोर मंझि मोरछा मुहर भर । रुक्कि राह खगबाह करहि करवाल झबक्कृत । ज्यों सलिता जल पूर आइ अड्डै गिरि रुक्कृत । भय सेल मेल भयभीत मचि दंग जंग दरवरि दवरि । बढ़ि लोह छोह तनु मोह तजि समर ईश गंगा गवरि ॥ ३२ ॥

सार सार संघटे धार संधार संतुट्टत्त । झमकि अग्गि झर जग्गि लग्गि पग झट षल षुट्टत्त । बज्जि झनंक षनंक कंक झलमलत सुझांई । घुरिय सुघाट बिघाट सोह हंकरि निज सांई । कहि वाह २ भल २ सुकहि बीर पचारत बिबिहि भति । रिन रोर धोर रलतल रुहिरं गंग कुंअर झुझ्झत सुमति ॥ ३३ ॥

भट किसोर उभि गोर घ्रटकि गरु भारि धरं धरि ॥
खरहरि शिहरि सु श्रृंग धरणि धर हरि परिकंधरि।
गज्जि गोम लगि व्योम बुन्द झर बरषत गोरिय ॥
अधिक गाज आग्राज झमकि बिद्युत षग जोरिय ॥
बजि डुंभ गुंभ आयुध बिषम अति झँझोरिय तनु सुतरु। भारथ उमंडि भट्टव सुभर कुंअर गंग झुझत कहर३४

रुण्ड मुण्ड ररबरत परत धर पर हय बर षुर। तंग भंग तरफरत ससत सरफरत चरन कर। सिंधुर दर बर सबर करर बज्जत तनु पंजर। हर बर षर भर होत समर सज्जे भर सर भर॥ झरहरत अरिन शिर रुहिर झर बजि गुरुज्ज गुरु परि बिहर। च्चवै चले चेल रंग चोल ज्यों चलि प्रबाह चच्चर सुचिर॥ ३५॥

भभकि भसुण्ड बिहंड झरिय करि संड उदंडह। उछरत परत उतंग जानि अजगर अहि जझर॥ कटि सनाह परवरनि कवच कटकंत षग्ग झट। तुट्टि सत्थ लगि बत्थ लुत्थि आलुत्थि लट्ट पट॥ झरफरत गगन षट गिद्धिनिय चिल्ह चंचु जनु कुंत फर॥ कर चरन रु मत्थय आसुरनि गहत उड़त अंबर अधर॥ ३६॥

परे मुगल सय पंच पंच सय परे पठानह॥ शेष जादे सत्त सै सैद इक्क सहस प्रमानह॥ लोदि वलोचि अलेष परे सत्थर सरवानी। गक्खरीन को गिनय भूरि भंभर भर भानिय॥ रूमी रुहिल्ल उजबक असुर परे करंक करंक परि॥ फुनि भगी फोज पतिसाहि की

गंग जैति कीनी बहुरि ॥ ३७ ॥

कहुकनारि करिनारि कहुक करि करभ कहूहय । कहूं सिलह रथ सुभर कहुंक षच्चर षजान मय ॥ कहुँ नेज रु निसान जीन पक्खर तजि भारिय । नट्ठे आसुर निलज हीय हहरत अति हारिय । सगताउत गंग कुँअर सुहर दिल्लीपति दल बल सुदलि । गजराज नवंनव जूह गहि गृह आए जित्ते बकलि ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

एकहि बैर ओरंग के, नव गजराज उतंग ।
भेट किए महाराण को, केहरि कूँअर गंग ॥ ३९ ॥
हरषे हिंदूपति सुहिय, दंती देष दिवान ।
सगता गंग कुंआर को, कियो अधिक सनमान ॥ ४० ॥
हेम तोल चंचल सुहय, साकति हेम सरूप ।
वसुमति ग्राम बढ़ाउ बहु, अरु शिर पाव अनूप ॥ ४१ ॥

इति श्रीमन् मान कवि विरचिते श्री राजविलास
शास्त्रे श्री सगताउत गंगकुँअर जी के न पातिसाह
कस्य हस्तीयूथ ग्रहण वर्णनं नाम चतुर्दशमो विलासः ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

चगता पति चीतोर गढ़, रोकि रह्यो हठ पूरि ।
कितक बरस छाउन कहत, दिल्ली छंडी दूरि ॥ १ ॥
एह गल्ह असुरेश की, बियुरी सनि बिरुदाल ।
भीमराण राजेश को, कूंअर कोपि कराल ॥ २ ॥
दिल्लीपति को देश ते, कट्टन कियो सुमंत ।
सोरठ अरु गुजरात सब, मारन देश महंत ॥ ३ ॥

बज्जे त्रंबक बज्जने बढ़ी सकल भय बात।
भीमसिंह कूंअर चढ़े मारन धर गुजरात ॥ ४ ॥
हय गय रथ पायक सजे, सजे सकल उमराव।
तुंग २ फौजें मिलीं ज्यौं सलिता दरियाव ॥ ५ ॥
बोलत बहु बिरुदावली ढुरत चौंर दुहुं ओर।
चढ़े बाजि चंचल चतुर भीम कुंवर दल जोर ॥ ६ ॥

॥ कवित्त ॥

भीम कुंवर दल जोर चढ़े गुज्जरि धर मारन। कटक बिकट भट उभट सुघट गज घट भट चारन। बोलत बहु बिधि बिरुद मरद भंजत आलम मद। गुर पगार मेवार सूर सुप्रताप ऊंच पद। जय कारजु धार अपार युध दृढ़ प्रहार करवार कर। जगतेश राण राजेश के तो सूं को मंडे समर ॥ ७ ॥

अंबर धर आवरिय रंग भंखरिय रजंबर। धाराधर धुंधरिय दुरिय दुति चंड दिवायर ॥ बढ़ी हेष पर हेष बहरि बबरि कल रव बहु। सुनियत सद्दन श्रवन जूह हय गय रथ गहमहु ॥ अनुसरत इक्क इक अग्ग पग उमग मग्ग परि भरि अवनि। सजि चढ्यो सेन गुज्जरि सधर भीमसेन ज्यों भीम भनि ॥ ८ ॥

भई भूमि भय कंप पचलि पर धर पुर पत्तन। होत कोट संलोट गिरत गढ़ दुर्ग गाढ़ घन ॥ दिग्गि दिश उट्ठि दहक्क भुक्क भय गुरु भर भक्खर। सर सलिता द्रह सुक्कि रुक्कि दर राह धेरद्धर ॥ थरहरिय

थान थानह सुथिर बिथुरि प्रजा डुल्लत अथिर । प्रज-
रंत नेर षरहर सुपरि जहँ तहँ मंनिय जोर डर ॥ ९ ॥

उजरि अहमदाबाद पीर पट्टन ससंक परि ।
षंभायत षरहरिय सून सूरति धन संहरि ॥ जूनागढ़
जंजरे कच्छ कलकलि सुमंनि डर । गोर सिंधु सोबीर
भूमि बहु भई उभंखर । मचि हक्क धक्क चहुं चक्क मधि
आप आप भय बढ़िय उर । चढ़ि भीमराण राजेश
को आयो के आयो कुंवर ॥ १० ॥

सुबच सुभग सुंदरिय दुरिय गिरि खरिय ससं-
किय । सालंकरिय सुबेस चित्तनिय चित्र कलंकिय ॥
नव योबन सोबन सुबान मानिनि मृगनैनिय । रूप
रंभ आरंभ दरस देषें सुख देनिय ॥ पयतन प्रवाल
पल्लव सुपय सत्थन की सत्थी सुबिय । बहु भीमसेन
कूंवर सुभय डोलत बन घन शत्रु तिय ॥ ११ ॥

छन्द पद्धरी ।

सजि भीमसेन सेना बिशेश । दहबट्ट करन
गुज्जर सुदेश ॥ दल बिंटि प्रथम ईडर दुरंग । भट
बिकट जानि चंदन भुजंग ॥ १२ ॥

गढ़ तोरि तोरि गट्टे कपाट । थरहरिय थान
असुरान थाट ॥ नट्ठो सु सैद हासा नवाब । गढ़ छंडि
छंडि किल्ला सिताब ॥ १३ ॥

रलतलिय प्रजा बहु परिय रोरि । डर मंनि

जात बन गहन दौरि ॥ बनिता धपंत लहु नंषि बाल । भूषन पतंत षिरि मुत्तिमाल ॥ १४ ॥

तजि न्हाण बस्त्र इक तनु लपेट । चित चौंकि जात दीने चपेट ॥ ब्याकुलिय इक्क अधगुंथि बेनि । भरि फाल जात ज्यों जात एनि ॥ १५ ॥

निय निय सुकज्ज छंडे निनार । चलचलिय छलक भय भीत भार ॥ को गहय सार कप्पर किरान । नग हेम रूप बदरा निदान ॥ १६ ॥

भूषन जराउ बहु रूच भंति । जहँ तहँ सुगड्डि धन लोक जंति ॥ जरकस सज्योति मुषमल अमोल ॥ सिकलात सूप तनु सुष पटोल ॥ मृद तूल मसद्यर बिबिधि रंग । मिश्रू दुमास चीनी सुचंग ॥ १७ ॥

षीरोदक अतलस सरस ल्हाइ । बुलबुल-चसंम मनु सुषद स्याइ ॥ पामरी पीत अम्बर दुपट्ट । साहि-बी पाट अरु हीर पट्ट ॥ १८ ॥

भैरव भरुत्यि मलमल सुधोत । महमूदि बीर सेला सुपोत ॥ सिंदली भूंन मूसी सुपेद ।खासा अटान टुकरी सुभेद ॥ १९ ॥

ओंधाष सालु इक पट सकोर । चोतार भार तनु पंच तोर ॥ बहु बिधि सुबस्त्र छंडे बजाज । भग्गे सभीति हटश्रेणि त्याज ॥ २० ॥

घृत खंड तेल सक्कर संभार । अति खास अन्न

उघरे अँबार ॥ मधु रस सस्वाद मेवा मिठाइ । हरवाइ गरत सक्कै उठाइ ॥ २१ ॥

मृगमद कपूर केसर लवंग । अहिफेन हीर रेशम सुरंग ॥ तज जायपत्रि पत्रज तमाल । रस नारिकेल पुंगी रसाल ॥ २२ ॥

हिंगरू अगर चंदन सुईठ । एलची जाइफल अरु मजीठ ॥ इत्याद्यनेक छंडे कृयाण । भग्गे सुगंधि रक्खन सुप्रान ॥ २३ ॥

बिधि बरन च्यारि छत्तीस योनि । चोपय प्रत्येक बहु जीव योनि ॥ भरहरिय भग्गि भय यत्र कुत्र । परि गय बियोग तिय भ्रात पुत्र ॥ २४ ॥

ठट्ठोरि हट्ट पट्टन सुढारि । गृह गृहनि जारि सुप्रजारि पारि ॥ सिंघनी सुंघिनर के सुजान । खनि खोदि क्षोनि कट्टे खजान ॥ २५ ॥

धरहरत धरनि खरहरत कोट । लगि बेलदार किन्ने सलोट ॥ आबास ऊंच भयतर उपार । जहँ तहँ सुभूमि परिगय बिहार ॥ २६ ॥

इहि भांति दुर्ग ईडर उड़ाइ । संठे सुभृत्य अन धन सचाइ ॥ भरि कनक रूब धन कोटि भार ॥ हय हत्थि करभ खच्चुर अपार ॥ २७ ॥

राजेश राण नंदन सरोस । भल भीमसेन कूंअर भरोस ॥ कट्टनह दूरि पतिसाह काज । रक्खन सुराह मेवार राज ॥ २८ ॥

॥ कवित्त ॥

ईडर दुर्ग उजारि पारि किन्नो धर पद्धर । खंखेरिय खनि खोदि किए मंदिर तर उप्पर ॥ ढंढोरिय हटश्रेणि कोन भल्लें कर कप्पर । श्री फर सार किरान ठेलि अन धन पय ठिप्पर ॥ नट्ठो सु सैद हासा निलज गुरु नवाब छंडेव गढ़ । जय कीन राण राजेश के भीमसेन रक्खी सुरढ़ ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

ईडरगढ़ उद्धंसयो, सुनी सकल संसार ।
भीमराण राजेश के, कूंवर कुल शृंगार ॥ ३० ॥
पच्छिम निसि पतिसाह दर, परिय सुकरल कराह ।
कोन नींद आलम कबिल, सोए तुम पतिसाह ॥३१॥
भीमराण राजेश को, कूंवर कोपि कराल ।
ईडरगढ़ लीनो अचल, चढ़ि दल किय ढकचाल ॥३२॥
हंस सैद हहरंत हिय, नट्ठो अप्प नवाब ।
अब सुजात गुजरात धर, करहु इलाज सिताब ॥३३॥

॥ कवित्त ॥

सुनि सुकूह सकराल रेनि पच्छिली श्रवन सजि। उझकि चोंकि औरंग उठ्यो दिल्लीश नींद तजि ॥ निकट बुलाइ सुदूत बहुरि बुज्झै दिल्लीवर । कितक सत्थ सो कुंवर अक्खि तिन दल अपरंपर ॥ ईडर उजारि सुप्रचारि दिय उजरि देश गुज्जर सुधर। सोरठ सिंधु सोबीर लों भीमसेन कूंवर सुद्धर ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

रह्यो ओटि पय ज्यों सरिस, म्लेच्छ ईस गहि मोन ।
बोल सुबोलत ना बने, शीशक चढ़ि भय सोन ॥ ३५ ॥

कवित्त ।

राजसिंघ महराण प्रजा पीहर प्रजपालक ।
प्रजाछत्र प्रजपोष प्रजामंडन प्रजधारक ॥ बरण
च्यारि बर शरण दीन उद्धरण दया पर । दीनबंधु दुष
हरण सकल षट दरस सुहंकर ॥ पीरंत पेखि पर प्रज
प्रबल कुंअर भीम कुप्पिय कहर । बड़नगर सुढ़ाशा
सिद्धपुर प्रमुख सकल भंजे सहर ॥ ३६ ॥

लिखे एह परवान राज महराण भीम प्रति ।
प्रीति पोष संतोष सकल सनमान सरस भति ॥ कुल
दीपक तुम कुंअर सबलह मरद्द धुरंधर । तजि बिदेस
सुबिसेस बेगि आवहु निज मंदिर ॥ परवानह करिपर
धरह तन अप्पन श्री इकलिङ्ग बर । प्रज पीड़त
पिक्खी जात इह अनुकंपा उपजंत उर ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

चरहि जाइ दीनो चपल, कुंवर हत्थ फरमान ।
कहि मुख बचन प्रसंस करि, बहु बिधि प्रीति बखान॥३८॥

॥ कवित्त ॥

महाराण परवान सीस सहिवान सुशोभित ।
प्रनमि बंचि शिधि पाइ झुंकि अनिखाइ झझकि
चित ॥ पिता हुकम्म सुप्रमानि दंद मुक्क्यो निज दारुन ।

बहुरे कुमर सुजान जानि अंकुश बर बाहन ॥ धन कोरि जोरि ढंढोरि धर बैर बहोरि अनंत बल। निज गेह आइ बिलसंत नित भीम भोग संजोग भल ॥३८॥

इति श्रीमन्मान कवि बिरचिते श्री राजविलास शास्त्रे श्री भीमसेन कुमारेण गुर्जर देशे द्वंद्वकरण नाम पंचदशमो बिलासः ॥ १५ ॥

—:0‡0—

॥ दोहा ॥

बंकागढ़ बधनोर पति, सांवलदास सकाज
केतुबंध कमधज्ज कुल, मेरतिया महराज ॥ १ ॥
भगति जोर तिनको भई, बंकेश्वरि बरदाइ।
माता त्रिभुवन मंडनी, सांप्रति करन सहाइ ॥ २ ॥
तेग बँधाई देबि तिन, पाती दे करि प्रीति।
जहँ जहँ कीने जंग जिन, तहँ तहँ भई सुजीति ॥३॥

॥ कवित्त ॥

जहँ तहँ कीनी जीति रीति रक्खी रट्ठोरिय। महाराण के काम दंद रचि दल सजि दोरिय ॥ रुक्की आवति रस्त थान भंजे तुरकानी। पीरो परि पतिसाह श्रवन सुनि सुनि सुकहानी ॥ तिन दीन्हों महि मेवार तजि गय औरँग अजमेरगढ़। मेरतिया सांवल दास सम देखि न को सा धर्म्म दृढ़ ॥ ४ ॥

बिंटि थान बधनोर परी सेना पतिसाहिय। धुपटे धर बर धींग गहन गज तन गिरि गाहिय ॥ हय मुंह

सुप्पर कंण रत्त दृग मुंछ रोम बिनु । भारषंध भुज सुभर भार भोजन रु भार तनु ॥ तिन नाम रुहिल्ला नर भखन तजै न को पशु पंखि पल । जहँ तहँ पराव जल उदधि ज्यों उद्धुम गति औरंग दल ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

नायक सब रुहिलानि में, नाम रुहिल्ला खान ।
लंबी तेग लिये रहैं, आसुर जंग अमान ॥ ६ ॥
द्वादस सहस तुरंग दल, नेजा बंध नवाब ।
मदिरा मत्त सुरत्त मुँह, जिह तिह देत न ज्वाब ॥७॥
बिटि रह्यो दल बल बिकट, बसुमति किय बिपरीति ।
पारि प्रसाद प्रजारि गृह, अति ही मंडि अनीति॥८॥

॥ कवित्त ॥

सुनि इह सांवल दास मरद मेरतिया महिपति । खीजि खलनि षय करन थान उत्थपन अरिन थिति॥ सजि सिताब हय गय दुबाह सन्नाह सपक्खर । कवच करी झंकुरत कुंत झलमलत सूर कर ॥ बजि बंब नगारनि घोष बहु बरन बरन धज नेज बनि । चढ़ि चले फौज चहुं फेर घन उदधि जानि उलट्यो अवनि ॥ ९॥

खिति धरहरि हय खुरनि चरन गिरि पल्ल चुल्ल भय । उझिय रेन भरि गैंन भानु भंखरिय ताप खय॥ चारन भट्ट सुचंग रंग बोलत जस रूपक । सांवल दास सनूर कूर-कमधज कुलदीपक ॥ जय करहु

जंग घन हनि यवन आलम दल भंजहु अनम ॥
बैरिनबिनासकिज्जै बसति त्रिपुरा दाहिनहत्थ तुम१०॥
संझ समै लहि संच प्रबल रतिवाह बिहारिय । खान
पान खल दल बिलग्गि दीपक अधिकारिय ॥ तबहिं
तरित ज्यों त्रटकि परे पतिसाह सेन पर । गाहत
दाहत हनत भनत मुख मार मार नर ॥ रलतलिय
रुहिल्लनि परि रवरि दहकि बहकि धकि परि दहल ।
तजि खान पान भग्गे तुरक कलकल कंटल मचि कबिल११

छन्द त्रोटक ।

हय चंचल सांवलदास चढ़े । कर गेंन उभारिय
खग्ग कढ़े ॥ जुरि जोध बिजोध बजे जरके । कटि
टोप कटक्कि करी करके ॥ १२ ॥

षिरि कंकनि कंक सुधार षिरें । झनकंत कृपान
कृसानु झरें । मचि कंदल मीर गंभीर कटें । खननंकति
बज्जति खग्ग झटें ॥ १३ ॥

तुटि सिप्पर खुप्पर लोनि हटें । फिरे छेद
बिछेद ह्वै शीश फटें ॥ छिलि लोह पठान सुछाक छकें ॥
जल आतुर बारिहि बारि बकें ॥ १४ ॥

दुहुं ओर दुबाह दुहाइ बदै । अप अप्पन सांई
चहंत उदै ॥ करि ताक संभारि संभारि कहें । बरसें घन
ज्यों बहु बान बहें ॥ १५ ॥

कर कुंत कटारि सकत्ति धरै । फरसी हर हुल्ल

गुपत्ति फुरैं । गज मुग्गर नेज गुरुज्ज बजै ॥ गगनां-
गन गोर आराब गजै ॥ १६ ॥

धर धुंधरि सोर सुरत्त धखें । जहँ अप्पन आन
न कोई लषें ॥ तजि साहस संकुर सांइ तजे । भय
पाय रु कायर जात भजे ॥ १७ ॥

घन घोष त्रंबागल सिंधु घुरे । सहनाइ सुभेरि
गंभीर सुरें ॥ कुननंत किते कलि कूह करें । रिन जोर
रुहिल्लनि रुंड रुरें ॥ १८ ॥

उतमंग पतंत किते उचरें । सरनाय किते उर
सूल ररें ॥ इक अल्लह अल्लह नाउं अखें । मिलि नैनन
टोप मिलंत सुषें ॥ १९ ॥

भय रूकिनि टूकनि तेइ रमी । निकरें दुहु लोइन
ग्रीव नमी । हब्सी मिलि आपस मेंइ हने । अंधि-
यारि निसा नन सुद्धि गनें ॥ २० ॥

नर आसुर केक कमंध नचें । शिर भूमि अट-
ट्टहास सचैं । हय हत्थि बिना असवार फिरें । घन
पक्खर भार सुढार ढरें ॥ २१ ॥

तरफें अधतंग तुरक्क तुटें । चलि बज्जर बोल नदी
उपटें ॥ भभके करि सुंड बिहंड भई । महि कोन जहां
तहँ रत्त मई ॥ २२ ॥

उड़ि श्रोनित छिंछि अयास तटें ॥ पय कोकम
ज्यों पिचकारि छुटें ॥ गवरीपति अंबुज माल गठें ॥
सब केक हँकारि बेकारि उठें ॥ २३ ॥

गुरु गिद्धिनि तुंडनि मुंड गहैं । झरफैं गगनांगन झुंड बहैं ॥ रत ले युगिनी जल ज्यों अचवैं ॥ चवसट्ठि जयं जय सद्द चवैं ॥ २४ ॥

धज नेज भंभोरिय जोरि घनं । टक चार ढंढोरिय ढान घनं ॥ कमधज्ज महा बलि जैति बगी ॥ भय मंनि रुहिल्लनि फोज गमी ॥ २५ ॥

तजि थानहि तंबु तुषार तई ॥ रथ कंचन बारुन बस्तु नई ॥ निशि ही निशि भग्गि हेरान भए । गति हीन ह्वै साहि के पास गए ॥ २६ ॥

कवित्त ।

गए असुर तजि गर्ब हसम हय गय रथ हारिय ॥ गिरत परत बन गहन भए भारथ भय भारिय ॥ निशि अंधियारी निपट सुबट थट घट्ट न सुज्झत ॥ कानन तरु कंटकनि अंग अंशुक आलुज्झत । उझकंत परस्पर पिक्खि अग सब रुहिल्ल सुगहिल्ल हुअ ॥ कमधज्ज गहिय करवार कर जंग रंग मंड्यो सुजय ॥ २७ ॥

दोहा ।

इहिं परि थान उथप्पि के रख्यो जस रट्ठौर ॥ स्वामिधर्म पन सच्चयो सकल सूर सिरमोर ॥ २८ ॥

इति श्री मन्मान कवि विरचिते श्री राज विलास शास्त्रे सांवल दास कमधज्ज कृत द्वंद वर्णनं नाम षोडशमो विलासः ॥ १६ ॥

—:0:0:—

दोहा ॥

धर पुर हरि गिरिवर भ्रसकि, पयदल मसकि पयाल ।
धारा नगर मालव सुधर, दोरयो साह दयाल ॥ १ ॥
राजा उतपन रोस रस, तारन रित ज्यों तुट्टि ॥
मालव धर उद्धंसि महि, लच्छि अनंत सु लुट्टि ॥ २ ॥
षाग त्याग दुहुं भांति षिति, नितु २ नाम नवल्ल ॥
षाग त्याग बिनु क्षत्रिपन, आख्यो यूं अकतुल्ल ॥ ३ ॥
मंगि हुकम महराणपें, सुवर सुभट संजोर ॥
चढ़यो लेइ चतुरंग चमु, अवनि कंपि चहुं ओर॥ ४ ॥
धरि गिरि अंबरधुं धरिय, दिशि दिशि उठि दहरिक्क ॥
आडंबर रवि आवरिय । चित दिगपाल चमक्क॥ ५ ॥

कवित्त ।

प्रचलि चित्त दिगपाल भूमि तजि भग्गि आय भय । उजरि नेरपुर उभ्भकि बिभ्भुकि गढ़ कोट दुर्ग गय॥ थक्कि राह थरहरिय थान थानह असुरायन । बज्जि अवाज गुरु गाज जानि जग पेी पंचायन ॥ षरहरिय सुप्रज क्षितिधर षलक जनु धारा हर धरहरिय । मालव सुदेश सद्धन सुमहि सजि सुसाह दल संचरिय ॥ ६ ॥

कहुक दंड किज्जियहि कहुक लिज्जियहि पेसकस । थप्पि कहुक निय थान रिपुन रुक्कियहि रोस रस ॥ कहुक बंक बैरिन गहिब्ब घल्लियहि जेल गल । कहुक लच्छि लुट्टियहि कहुक भेलियहि दुर्ग भल । कहु कोट जोट कबिलान के उथलि पथलि थल बिथल

किय । पारन्त रवरि पर धर प्रबल जानि प्रलय कालह जगिय ॥ ७ ॥

म्लेच्छ मुंछ मुंडियहि खंडि महजीदि मदारनि । काजी पकरि कुरान गरहि बंधे बगमारनि । वोरत बारि अथाग धाकवज्जी धागानी ॥ भेष बदलि रिपु भगत बदलि बानी तुरकानी । धकधुनी देश मालव सुधर बारुन ज्यों चंदन बिटपि। मुंह मिल्यो असुर नन मुक्कियहि थिर सुप्रतंग्या एह थपि ॥ ८ ॥

छन्द मोतीदाम ।

चढ्यो दल सज्जि सुसाह दयाल । किधों कलिकालनि को षग्र काल । बहै बहु मग्ग कटक्क बिकट्ट ॥ जनो जल अंबुधि गंग उपट्ट ॥ ९ ॥

सुभें दल अग्गहि श्याम सुंडार । चले जनु अंजन के यु पहार ॥ ठनंकति घंट सुग्रीवहि ठाइ । घमंकत घुंघरु नेउर पाइ ॥ १० ॥

झरे मदवाह कपोलनि झोर । भमैं तिन दोन सुबासहि भौंर ॥ सुभें शिर तेल सुरंग सिंदूर ॥ बहैं बिरुदावलि बंक बिरूर ॥ ११ ॥

मनोहर कुंभहिं मुत्तिनमाल । मझ्झ मझ पोइय पांच प्रबाल ॥ उभै अव शीशहिं चौर सुभंत । सभार स उज्जल दीरघ दंत ॥ १२ ॥

झिलंतिय रंग सुरंगियं झूल । जिगंमिग योति

जरी पटकूल । ढलक्कति ढंकिय बास सुढाल । बने किन पिट्ठहि डोल बिसाल ॥ १३ ॥

पढ़ें धत धत्त मुंहें पिलवान । सचे कर अंकुश बिद्यु समान । पताक प्रलंब बने पचरंग । जरीपट कूल सुचिन्ह सुचंग ॥ १४ ॥

जरे पय लोह सुलंगर जोर । किधों करि श्याम घटा घन घोर ॥ चरक्किय अग्ग रु पच्छ चलंत । खरे इतमाम महा मयमंत ॥ १५ ॥

गराक्किय आरबि अश्व उतंग । कछी कश्मीर कँबोज कलिंग ॥ बंगालिय कोकनि सैंधवि बाज । पयं पय वायु पथे पँखराज ॥ १६ ॥

मजंनस लाषिय रंग सुवंश । हरी हरडे अरु बोर सुहंस । किते किरडे तनु नील कुमेत । सुसिंहलि रोझिय रंग सभेत ॥ १७ ॥

अँबारस भौंर मसक्क अपार । तुरंजे ताजि सुरक्क तुषार ॥ किलकिले कातिले केइ किहार । गंगाजल गारुडे के गुलदार ॥ १८ ॥

बिराजति साकति स्वर्ण बनाव । जरे नग मुत्तिय हीर जराव । गुही घर बेनिय श्याम सुकंध । फुंदा गलि रेसम डोरि सुबध ॥ १९ ॥

ततत्थेइ नच्चत ज्यों नट तान । पुलंतन पखिय पुज्जत प्रान ॥ सचंचल चालने चौकनें चोष । सपक्खर सज्जर हिंस सरोष ॥ २० ॥

चढ़े भर केइ महा चित चंड ॥ अरोणिय जानि कि भीम उद्दंड ॥ बंके बर बीर सभीर बिडूर ॥ झनंकति षग्ग करे झकझूर ॥ २१ ॥

भरे रथ सत्थिय आराब सभार ॥ किते धन रूब रु हेम दिनार ॥ भरे बहु भारहि ऊंट अपार ॥ किती भरि बेसरि भार बिभार ॥ २२ ॥

पयद्दल बद्दल ज्यों दल पूर ॥ उड़ी रज अंबर ढक्किय सूर ॥ परे नन अप्पन आन की सुद्धि ॥ उपट्टिय जानि कि जोर अंबुद्धि ॥ २३ ॥

सुसंकर संकुरि कुंडलि शेश ॥ कटक्किय कच्छप पिट्ठि बिशेश ॥ भये भयभीत पुले दिगपाल । डगंमगि कोट रु दुर्ग्ग दुकाल ॥ २४ ॥

थरत्थरि पत्थर सुत्थिर थान । भगे पुर पत्तन नैरभ यान ॥ रुके दर राह राह सुउट्ठि दहल्ल ॥ सुसे सलिता सर नीर सुहिल्ल ॥ २५ ॥

मच्यो भय मालव देश मझार ॥ उड़ैं प्रज जानि कि टिड्डि अपार ॥ कहूं तिय पुत्त कहूं गय कंत ॥ रड़ैं जननी कहुं बाल रडंत ॥ २६ ॥

कहूं पति भृत्य कहूं परवार ॥ कहूं धन धान रहे निरधार ॥ कहूं भय चोप यहूं परहत्थ । नसे नर नारिन वृन्द अनत्थ ॥ २७ ॥

लुटे केउ लुंटक झुंटक लक्ख ॥ परें बहु कूह

कराह प्रतक्ख ।। जनौं कलपंतर अंतर जग्गि । लुकि-
ढुकि मानस मानस लग्गि ।। २८ ।।

किये प्रति कूंचनि कूच प्रलंब । लखे दल बद्दल
सावन लुंब ॥ धसंमसि विंटिय कोट सुधार ॥ परी
पतिसाह सुगेह पुकार ॥ २९ ॥

कवित्त ॥

मंडव भय मंनियो उजरि प्रज भग्गि उजेंनिय ॥
सारंग पुर भय सून निकरि नट्ठो मृग नेनिय ॥ दहल
परिय देवास धरनि गड्डियहि हेम धन ।। सुनिब स-
संकि सिरोज चलिय चंदेरि चक्रित मन ॥ जहं तहं अ-
वाज संके यवन जंजरि गढ़ करियहि यतन ॥ आयो
सुसाहि यों अरिन पुर उभ्भक अहो निसि मिटय नन॥३०॥

अबखें के असुरानि कंत तिल गहर न किज्जैं ।।
आवत कटत उदंड छंडि गृह के तनु छिज्जैं ।। कह
सोवत सुख सेज उट्ठि उठ राखि सुआतम ।। मो कहु
पूरन मास गहु सुगिरि गुहा क्रमंक्रम ॥ बिलपंत बालके
दार तजि नट्ठि बनं घन गहन नग ।। सकबंध साह
दल चढ़त सुनि बिभजि लोक ज्यों बन बिहंग ॥३१॥

बिंटि कोट बर बीर भंति गो सीस भुयंगम ॥
ज्यों पहार अरु जलधि प्रबल दल दंति पवंगम ॥
किल्ला तजि तिहिं काल पुले आसुर सु पठानी ॥ सेन
असुर घन सहस मुक्कि साहस समुदानी ॥ जगि लुट्टि

गृह गृह जनहिं जन कोन गहे कप्पर मुकर ।
केसर कपूर मृगमद कितक इधन ज्यौं मजरे अगर ॥ ३२ ॥

कंसहि को कर गहें तंब गहि को तनु तोरें । करिय कहा कत्थीर जसद गंठहि को जोरें ॥ पाटहिं को प्रतिग्रहे सूतपट कवन सुसंचै । अंगीकरे न अन्न खंड घृत गुड़ कत खंचै ॥ बहु हेम रजत मौक्तिक विमल पन्ना पांच प्रवाल नग ॥ तुट्टंत लोक लच्छक सुलछि जँह तँह लहत निधान जग ॥ ३३ ॥

जरी सूप सकलात मिश्र सुषमल रु मसज्जर । षीणी षीरोदक दुमास अतलस पीतांबर ॥ नारी कुंजर रहाइ साहि बीततु सुष मनसुष । बुलबुल-चसम्रा पाट पामरी युरमा बहु लष ॥ दरियाइ दुलीचा चंद्रपट उत्तरपट गिनति न परत । पट कूल अमूल प्रसिद्ध पन बसु जन २ बिक्रय करत ॥ ३४ ॥

भैरव बरभरु बक्षी मिट्ठ मलमल महमूदी । भुंना सिंदली सालु सुसी सेला सानंदी ॥ षासा षास अटान पंचतोरे सु प्रकारे । इकतारे श्रीसाप चीर टुकरी चोतारे ॥ स दुमामि दुतारे चौरसे भीन पोत दुति भलमलत । बदियेऽब किते बहु विधि बसन पयदल पाइनि दलमलत ॥ ३५ ॥

नालिकेर ज्योजा बिदाम बर दाष चिरेंजिय । षारिक पिंड षजूरि भूरि मिश्री मन रंजिय ॥ मधुर २ मेवा मिठाइ घृत गुड़ अपरंपर । सकल अघाइय सेन हत्थि हय करभ अनुसर ॥ एलची लवंग अहिफेन रस

सुंठि मरिच पीपरि प्रमुषि । सुक्रयाणा सार संबार सज धषत झार घन अग्नि मुष ॥ ३६ ॥

पनहिं न जिन पय हुती तिनहिं गृह भये तुरंगम । दूत भये दोरतें मिले तिन चढ़त मतंगम । दारिद जिन देषते लच्छि लच्छक तिन लीनी ॥ वामन जिन बपु हुते तिनहु सुषपाल सप्पनी । सपने न संपिखी सुंदरी तिन सुन्दरि युग २ मिलिय ॥ धसि नगर धार बर संहरत कनकहिं षलक निहाल किय ॥ ३७ ॥

दिन दस करिग मुकाम षग्ग बल रचि षलषंडह । नगर धार संहारि देस मालव करि दंडह ॥ नर बहु भए निहाल लच्छि अपरंपर पाए । करि सुबोल कंधाल उमगि उदयापुर आए ॥ मंत्रीश सुमति महाराण के कलह साहि सर भर करिय । अवदात यहै नित २ अचल अचल नाम जग बिस्तरिय ॥ ३८ ॥

इहिं परि धार उद्धंसि बत्त बर बिश्व बखानी । सुनि ओरंग सुबिहान दूत मुष अव दुखदानी ॥ उर कलमलि अकलाय परयो अंदर पछितावत । किन्नो यहै कुमंत सकल परिजन समझावत ॥ आवै न हत्थ बिग्रह सुइह षुस षजान घन षुट्टए । अनमी सुराण हैं आदि के महि किन जाइ सुमिट्टए ॥ ३९ ॥

इति श्री मन्मान कबि बिरचिते श्री राज बिलास शास्त्रे साह दयाल मालपद देशे द्वंद्व कृतं तद्वर्णनंनाम सप्तदशमो बिलासः ॥ १७ ॥

दोहा ।

श्री जयसिंह कुंअार को, अब अवदात अनूप ।
राजसिंह महाराण के, पाट प्रभाकर रूप ॥ १ ॥
सतरा सै सैंतीस के, वर्स असाढ़ बषान ।
मारे मीर मतंग महि, थिर चीतोर सुथान ॥ २ ॥
सामंतनि सनमानि के, किय सुमंत धर काज ।
असुर सँहारन ऊंमहे, गिरिधर अंबर गाज ॥ ३ ॥
आगे ज्यों कूंअरपने, उदयराण मुँह अग्ग ।
कुंअर प्रतापहिं नाम किय, षंडे घन षल षग्ग ॥ ४ ॥
सो सबंत सुबिचारि चित, बढ़ै बीर रस बीर ।
कंठीरव जनु कोप करि, गज्यों गिरा गँभीर ॥ ५ ॥

कवित्त ।

चित्रकोट थानहि सुषंड औरंग सुनंदन । सहि-जादा अकबर सुसेन हय गय रथ स्यंदन ॥ अब्दुलाख साहन अनीक सपलान सपरकर । सहस एक सिंधुर सरूप जनु शैल पट्टभर ॥ पयदल असंष आराव गुरु नारि गोर जंबूर घन । रहि राण धरा रिणथंभ रुपि कोट ओट गह्यो यवन ॥ ६ ॥

दिशि दिशि देत दहल्ल धरा धुपटंत धान धन । गाम २ प्रतिगाहि ढाहि प्रासाद पुरातन ॥ पारि पौरि प्राकार सुरहि बध करत न संकत । रहत छक्यो दिन रैनि बेर बहु बहत अहंकृत ॥ ऐश्वर्य तरुन मद अंध

मन मेष भंति में में करत। सुलतान अकब्बर साहि सुत धरनि न सुद्धे पय धरत ॥ ७ ॥

तषत रवां तपनीय तुंग नग जरित तरनि प्रभ। तहँ सु बइट्ठो तपन तेज असहेज मान इत ॥ उभय पाष चामर ढरंत इतमाम अनेकह। छरीदार प्रतिहार अंग रक्षक सविवेकह ॥ नरवे नवाब बहु पय नवत सेवत ठढ्ढे सत सहस। नित राग रंग पातुर नृतति घुरत निसाननि घन घमस ॥ ८ ॥

कबहुं लरावहिं मल्ल कबहुं मद मत्ते कुंजर। पायक कबहुं प्रचंड कुंत असि नग्न सकति कर ॥ कबहुं सिंह करि कलह कबहुं डोरी डंडायुध। कबहुं सिंह बन सहल कबहुं तिय सत्थ महल मध ॥ कबहूं क बग्ग बर बाटिका सलिता सलिल समूह सुख। क्रीडंत केलि नव नव सुदिन न लिहैकत ससि सूर रुष ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

साहि सुतन के चरित सुनि, रत्त नैन करि रोस।
श्री जयसिंह कुंआर जब, गहयो षग्ग कर कोस ॥ १० ॥
संहरिहौं दिल्लीस सुत, क्यों रहि इह इन कोट।
असुर कहा हम आगए, सकल करं संलोट ॥ ११ ॥
हमहिं दयो इकलिंग हर, इह गढ़ आदि अनादि।
ध्रुव सुरख्य मेवार धर पाइय भाग प्रसाद ॥ १२ ॥
तो अब कौन बपुरो तुरक, गढ़ रहि मंडे गेह।

कितकु एह इत सुख करे, सुन्दरि सत्य सनेह ॥ १३ ॥
बीबी सों छू छू करे, भग्गो सोवत भोर ।
मध्य निसा रिन मंडि के, जीवित गहो सजोर ॥१४॥

कवित्त ।

अंबर इक आदित्य इक्क गिरि गुहा सिंह इक ।
असि इक इक प्रतिकार ठौर औरहिं न एह ठिक ॥
ए सुथान बहु मान नहीं असुरान थान इह । करों भंजि चकचूर साहिजादा रुसेन सह ॥ हम छतें कोन इहिं रहि सके आवो असुर अनेक दल । जब लों सु सिंह नहिं संचरें तबलों जानि कुरंग बल ॥ १५ ॥

तब लग तुम प्रस्तार तार उडुग्रह तबहीं लग ।
तब लग तस्कर जोर घूक दृग बल तबहीं लग ॥ तब लग रजनी रोर ढ़ोर तब लग गल बंधे । षह षद्योत उद्योत चक्क चकई चषु अंधे ॥ किन्नो प्रकास जब सहसकर तब न कोइ ग्रह तार तम ॥ कातिक कुंआर बद्दल कबिल बाहु बहें झूठो बिभ्रम ॥ १६ ॥

करें दहन कर गहन अवर अहि मुंह घर घल्लें ।
सिंह जगावे सुपत बिषम बीरनि सँग बुल्लें ॥ उदधि तरन आसँगे चाह बिष तनु सुष चाहें । त्यों ए तुरक अयान लरन हम सत्य उमाहें ॥ जिन दहे अद्रि बड़ बड़ अगनि तिन मुँह अग्र कितेक तरु । बारुनहिं उड़ावत बायु सों सो चूनी कह जोर बर ॥ १७ ॥

बुल्लय तब बर बीर कुँवर भगवंत सिंह भर । महा-राइ अरि सिंह नंद षट दरस उंच कर ॥ संग्रामहिं सुसमत्थ बेद बसुमति प्रति रक्खन । कबिल करिन केहरि समान बहु बिद्धि बिचक्खन ॥ इतो ऽब कोप इन परि कहा सकल बत्त सुबिशेषियहि ॥ संहरों माहि सेना सकल तो हम हत्थ सुलेषियहि ॥ १८ ॥

कितक एह गुरु काम एह लहु हम तर लायक। कँवल उषारन काज कहा कुंजर दल नायक ॥ कट्टन कांस कुठार कहा केहरि कुरंग कजि । कहा कीटकनि केकि कहा मंडुकनि नाग सजि ॥ कितनैक कबिल ए युद्ध कर गड्डुर ज्यों सब घेरि घन । इक्कैक हनों असि घाउ करि उथपि यान ओरँग सुतन ॥ १९ ॥

(अथ चंद्रसेन झाला के बचन) ॥ प्रयक ऊष ज्यों पीलि दलिग कन ज्यों घन दुज्जन । मूरत ज्यों उनमूरि दूरि नंषो दह दिसि तिन । करषनि ज्यों आकरषि षेत षल तिनु २ तत्थिय ॥ कुसुम कली ज्यों षूंटि षूंटि डिरनी ज्यों मिच्छिय । घन दाव घाव घन घंघलनि अरि असुरानि उथप्पिहों । कहि चंद्र-सेन झाला सुकर फिर निज यानहिं थप्पिहौं ॥ २० ॥

(अथ चहुवान राव सबलसिंह को बचन) सबल सिंह ज्यों सिंह तबहि गुंजो करि तामस ॥ सुनत गेन प्रति सद्द बिकट चहुवान बीर रस ।मारों मुगल

मसंद दंद दलमलहु साहि दल। रिण हम मुख को रहै कहा आसुर अनंत बल। भंजौं 5ब भूरि गिरि बज्र ज्यों चून करौं इन चंड चित। तो नंदराव बलिभद्र को अब उभंटि नंषो अहित ॥ २१ ॥

(अथ रावत रतनसी चोंडाउत के बचन)॥

कवित्त।

ज्यों अंबुधि अंचयो अगस्ति ज्यों तरणि रयनि तम। दावा ज्यौं बन द्रुम अनेक दहि दुर्ग असम सम। ज्यों बद्दल फारत वायु ज्यों इह असुरायन। महन रंभ आरंभ पारि पिशुननि पारायन॥ इकलिंग ईश जो शीश पर तो 5ब कहा परवाह इन। करि प्रबल कोप रघुनंद कहि रावत चोंडाउत रतन ॥ २२ ॥

(तदनु सगताउत कुंअर गंगदास के बचन)।
सगताउत रावत्त केसरी सिंह सुनंदन॥ गरजे कूंअर गंग सैन बध असुर निकंदन॥ कहैं सभारथ कत्थ यूथ घन यवन सँहारौं। पारथ ज्यों हौं प्रबल म्लेच्छ कौरव दल मारौं॥ मधुसूदन ज्यों सायर मथिग हनु ज्यौं शैल समुद्धरौं। गहि साहि नंद गजगाह बँधि कहा बत्त बहुते करौं॥ २३॥

॥ दोहा॥

पंचो भट महराण के, पंचो भारथ भीम।
पंचो मिलि किन्नो मतो, पंचो सुरगिरि सीम॥ २४॥
पंचो दल सज्जें प्रबल, पंचो बिश्व बिख्यात।

ध्रुव रक्खन मेवार धर, लरन असुर संघात ॥ २५ ॥
मंगि हुकम महराण पें, है ठड्ढे शिर नाइ ।
तब बीरा रु कपूर बर, संकर अप्पै साइ ॥ २६ ॥
शिर चढ़ाइ पुनि नाइ शिर, घुरिय निसाननि घाउ ।
बढ़ि अवाज असुरान पर, चढ़ि जय सीह सुचाउ ॥२७॥

कवित्त ।

प्रथम सुहोत निसान चढ़ति बज्जी चावद्दिशि । हय गय पक्खरि भर सनाह पहिरिय सुबंधि असि ॥ दुतिय निसान सुहोत हसम घमसान घनारँभ । मिले सबल सामंत सूर ज्यों समुद सलित अँभ ॥ बाज्यो सु तृतीय निसान जब तब जयसिंह चढ़े सुहय । चामर ढुरंत उज्जल उभय आतपत्र नग रूप मय ॥ २८ ॥

चन्द्रसेन झाला नरिंद गजगाह बंध गुरु । चढ़ें राव चहुआन सिंघ ज्यों सबर सिंघ बरु ॥ बैरी मल्ल पवांर राय बीराधिबीर रण । सगताउत रावत सुसज्जि केहरि केहरि गुन ॥ रावत चोंडाउत रतन सी महुकम रावत बड़ सुमति । चहुवान केहरी सी चढ़ें चपल तुरंगम चंड गति ॥ २९ ॥

महाराय भगवंत सिंह रुषमांगद रावत । षीची राव सुरेण षेंग चढ़ि घुरिय नषावत ॥ मानसिंह रावत सुमंत महुकम सिंघ रावत । गंगदास कूंअर अभंग केहरि चोंडाउत ॥ माधव सुसिंह चोंडा मरद कन्हा

सगताउत सुकर । असवत जैत भाला प्रमुख सजे सकल सामंत भर ॥ ३० ॥

दोहा ।

सबल सह सामंत भर, अनि उमराव अपार ।
सेन कुंअर जयसिंह की, करन असुर संहार ॥ ३१ ॥

छंद गीतिमालती ।

गंगगडु धोंकि निसाम धों करि भद्र भंभा भरहरे । झननंकि ताल कँसाल झननन द्रनन दुरबरि डंबरे । सहनाइ पूरि सँपूरि सिंधुअ ठनन तूर ठनंकियं । डम-डमकि ढोल ढमं ढमं फुनि २ नफेरि भनंकियं ॥ ३२ ॥

संचले दल मुख सबर सिंधुर गात अंजन गिरि-वरा । ससंग भूमि लगंत सुन्दर झरत गिरि ज्यों मद झरा ॥ सिंदूर तेल सुरंग शीशहिं मुक्ति माल मनोहरं । संडुरत उज्वल चोंर सिरि अव सिंह सों बन ओभरं ३३

मुह संड दंड उदंड मंडित तरुन तरु उनमूरते । दृढ़ दिग्घ दंत सभार शशि दुति सकल सोभ सँपूरते ॥ महकंत दांत कपोल मूलहिं गुंज रव अलिगन भ्रमें । ठनकंत घंट सुघंट कंठहिं चरन घुग्घर घमघमें ॥३४॥

सुसनद्ध बद्ध सनाह संकर तदपि पग गति पग धरे । गरजंत ज्यौं घन गुहिर जलधर भीम जतु भद्रव भरे ॥ सुपताक हरित सुरत्त पीतनि चिन्ह हरि रवि चंडियं । कर कनक अंकुसि धत्त धत्तह पीलवाननि तंडियं ॥ ३५ ॥

घर चलत अग्गरु पच्छ घरखी घून तदपि घरे घरे । बहु विरद बंके बंदि बोले भूमि तब इक पय भरे ॥ कर अग्ग करिनी केक करिवर शुद्ध चित तब संचरे । पर दलनि पेलन पील दलपति बिकट कोटनि जे अरे ॥ ३६ ॥

ढलकंत ढाल सवास ढंकित डोल बर किन पर कसें । गुरु नारि गोर जंबूर किन पर लोह कोष्टक किन लसें ॥ किन पिट्ठि नट्ट निसान नौबत कनक के सुभ्भर तरे । गजराज गुरु सुरराज के से स्याम घन जनु संचरे ॥ ३७ ॥

एराक आरब देश उतपति कासमीर कलिंग के । कांबोज कोकणि कच्छि कबिले हय उतंग सु-अंग के ॥ पय पंथ सिंधअ पवन पथ के तरणि रथ के से तुरी ॥ बहु बिबिधि रंग सुरंग मजनसु षेंग वर करते षुरी ॥ ३८ ॥

हंसिले हरडे हरी किरडे रंग लाषिय लीलड़े ॥ रोभ्मीय सिंहलि भेर अँब रस बोर मसकी दूग बड़े ॥ संजाब तुरजे ताजि तुरकी किलकिले अरु कातिले । सुकुमेत गंगाजल किहाडे गरुड गुलरँग गुण निले ३८

जिगमिगति नग युत स्वर्ण साकति बेनि वर षंधे बनी । सुजवादि मंडि रु पाट पचरँग गुंथी मधि मौक्तिक मनी ॥ फबि विविधि फुंदावली रेसम

सुंब झुंब बषानिये । बढ़ि हेष २ सघ्राण बज्जत ओर सोर सुजानिये ॥ ४० ॥

नम्र्‌ंत घृत ततताल नट ज्यों थाल मध्यथलं गने। सकुनीन पूजतु मग्ग संगहिं गिरि उतंगहिं ना गिने ॥ पर करे नष सिष सजर पर कर समर योग सराहिये ॥ मनु मरुत मित्र कि चित्र चित्रित चाल चंचल चाहिये४१

रग चढ़े तिन पर राव रावत अन्य गुरु लहु उम्मरा ॥ वर बीर धीर सभीर नृप भर सिलह पूर सडंबरा ॥ घन घाघ रट थट सुघट अबघट घाट की-जत दल घने । बढ़ि छोह जोह सकोह कंदल क्रूर वर देखे बनें ॥ ४२ ॥

रथ भरति के घन कनक रूब अधुर्य जिन जोरा धुरा । गुरुनारि गंत्रिन सोर गोरिय तीर तर-कस तोमरा । धनु कवच बाण कृपाण भगवति कुंत कत्ती किलकिला । सुवँवारि सार छतीस आयुध करण पल दल कंदला ॥ ४३ ॥

पयदल प्रचंड उदंड संडति सनध बद्ध समायुधा । रिस रोस जोस सुरत्त लोयन सद्द्बेधी संयुधा ॥ पति भक्त पर दल पूर पैरत पाइ नन पच्छें परें। धसमसहि धरनि न चरन धमकनि धकनि कोटति धरहरें ॥४४॥

दल मध्य दिनपति सरिस तनुद्युति कुंअर श्री जयसिंह हैं । आवहे हंस सुवंस हय वर सकल सकल

समीह हैं ॥ उतमांग चौंर ढुरंत उज्जल आतपत्र जराव
को ॥ कवि मान छंद बदंत कीरति देवद्रुम सद भावको ॥४५

दिशि बिदिशि दल २ ज्यों जलधि जल अचल
चलचल ह्वै चले । चल गृहनि चलभल कुंति कल २
खलल भेख्यति खलखले ॥ कलकलिय कच्छप पिट्ठि
कसमस धींग धसमस धावहीं । सुरतार तार प्रतार
बध्यत आनि विश्व जगावहीं ॥ ४६ ॥

शिव संक सकबक इंद अकबक धीर धाता
धकपके । सुर सकल खटपट चंद चटपट अरुण
अटपट हकबके ॥ झलझलिय निधि रवि परिय झंपर
पह उझंपर पिक्खए । सर सलित सलिल समूह संकुरि
वर प्रयान विसिक्खए ॥ ४७ ॥

करिग पयान सकोप चमू सज्जीव चतुरंगनि ।
अरक बिंब आवरिय रेणु भरि गेण सोर भनि ॥ उलटि
आनि जल उदधि कटक भट विकट उपट पट ।
भकित मग्ग सर मुकित चकित चहुं ओर ऊटपट ॥
उरजंत कुरंग बराह बर हरि धर बन पुर असम सम ॥
जयसिंह कुंआर सुकरन जय चढ़ि दल बद्दल गम
अगम ॥ ४८ ॥

एक अग्ग अनुसरत एक धावंत बग्र तजि । एक
कुदावत तुरग हक्क रहवाल चाल सजि ॥ हयनि
हेष नासानिनाद प्रति नाद गैंम मजि । चर मिख

बुद्धि न परति भीति धरि रिप्पुन बन भजि ॥
उन्नत पताक पँच रँग प्रवर तिन उरझत रवि तुरग
पय। तिनतें श्रवंत मुगतानि कन आनि राज्य श्री
श्रवति जय ॥ ४८ ॥

अडग डगति डगमगति अद्रि थरहरति अष्टकुल।
चंड चसु चकचकति उघरि यल गति मुद्रित पल ॥
अचल चलति चलभलति झलकि झलझलति जलधि
बर ॥ अढर ढरति ढरि परति धरनि धरहरति हयनि
षुर ॥ अकबकति इंद हकबकति हर धकपकि
धाता धीर नन। जयसिंघ सेन सजि चढ़त जब तब
त्रिभुवन संकत सुमन ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

प्रबल पयान दिसान प्रति, नाद पूरि रज पूरि।
बन गिरि तुट्टि संपुट्टि बन, भय पर जनपद भूरि ५१
आलम के दल उप्परहिं, तत्ते किए तुषार।
आए तबही गढ़ उररि, श्री जयसिंघ कुंआर ॥५२॥
दिए मलीदा मंगलनि, रातब हयनि रसाल।
सलिल प्पाइ छंटेव मुह, बरत्यो समय बियाल ॥५३॥
बीरा मध्य कपूर बर, लहु एलची लवंग।
नवल जायफल नागरस, रंजे सुभट सुरंग ॥ ५४ ॥
सिंधू गोरी बजत सुर, सूरति बढ़त सुछोह।
त्रिन ज्यों तन धन तिन तजे, मानिनि माया मोह ॥५५॥
पलक जात रजनी परि, बिछुरयो तम सुबिसाल।

तुरकानी दल पर तुरी, तेल न लगे भुवाल ॥५६॥
तवही बग्ग गहें तुरित, सकल सूर सामन्त ।
करें बीनती कुंवर सों, शीतल भाष सुमंत ॥ ५७ ॥

अथ झाला चंद्रसेन जी की अरदास ।

प्रभु हम प्राक्रम पेखियहि, धरहु आप मन धीर ।
प्रथम पदाति युधंत जुधि, तदनु सांइ बरबीर ॥ ५८ ॥

अथ चहुवान राव सबलसिंघ जी की अरदास ।

हम समान सेवक सहस, निपजें बहुरि नवीन ।
सांई सेवक लक्खकनि, पोषन कों प्रभु कीन ॥५९॥

अथ पंवार राव वैरीसाल जी की अरदास ।

सांईं इह सेना सकल, हय गय सुभट समाज ।
समर समय ही को सजे, कहा और हम काज ॥ ६० ॥

अथ सगताउत रावत केसरी सिंघ जी की अरदास ।

सांइ काम सेवक मरे, तो तित स्वर्गहिं ठौर ।
सांइं पंखे संकरें, तिनहिं नरग नहिं और ॥ ६१ ॥

अथ चोंडाउत रावत रतनसिंघ जी की अरदास ।

सांई रक्खे सीस पर, सेवक लरे सुभाइ ।
जब सेवक साहस बढ़ें, तहं प्रभु करे सहाइ ॥६२॥

अथ सगताउत रावत महुकम सिंघ जी की अरदास ।

मनिधर ज्यों थिर यप्पि मनि, आप तास सुप्रकास ।
चेजा करत सचेत चित, त्यों हम लरन उल्हास ॥६३॥

अथ राव केसरी सिंघ जी की अरदास ।

सांई सिरजे हुकम को, हुकम दिपाउनहार ।

हुकमी सांईं के बहुत, अंगवार आधार ॥ ६४ ॥

तदनंतर महाराजा भगवत सिंघ जी की अरदास ।

तोरि पताका तुरक के, नोबति लेइ निशान ।

आवैं तो उमराव तुम्ह, प्रभु हम बचन प्रमान ॥६५॥

तदनु चहुवान रुषमांगद रावत की बिनती ।

सांइ पचारत सेवकनि, हां भल बोलि हुस्यार ।

तब मन दूनों बल बढ़ैं, शत्रुनि करत संहार ॥६६॥

तदनु षीची राव रतन की अरदास ।

इह तन इह मन इह सुधन, इह सुष गेह सयान ।

हैं सांई ही के सकल, परिकर संयुत प्रान ॥६७॥

अथ रावत मानसिंह जी की अरदास ।

राखी पीठि मुरारि रिन, पंडव पंच प्रधान ।

कौरव दल तिल २ कियो, हम मन एह मंडान ॥६८॥

अथ सगतावत रावत महुकम सिंघ जी की अरदास ।

सांइ भरोसे रक्खिये, हम अभंग रन हिंदु ।

कहर काल करवाल गहि, मारहिं मीर मसंद ॥६९॥

अथ सगतावत गंगदास कुंअर की अरदास ।

बिमल बंश जन के विदित, मात पिता प्रभु एक ।

ते सांई के कामतें, टरे न इह तिन टेक ॥ ७० ॥

अथ चोंडावत रावत केसरी सिंघ की अरज ।

देषत चंदहि दूरितें, चुनत कृशानु चकोर ।

त्यों सांई निरषत सुभट, रण सुमचावहिं रोर ॥७१॥

अथ माधोसिंघ चौहानत की अरदास ।

सांई सुष तें हम सुखी, सकल सूर सामंत ।
ज्यों तरु सींच्यो पेड़ तें, पात २ पसरंत ॥७१॥

अथ कन्ह सगतावत की अरदास ।

सांई सकल सयान हो, गुरु बंधे गजगाह ।
एक तमासो अनुग को, देषहु दंदहु बाह ॥७३॥
कर युग जोरि सुललित करि, करि निज २ अरदास ।
करि प्रसन्न जैसिंघ मन, वग्ग थंभि वरहास ॥ ७४ ॥
सहस सुभट हय वर सहस, प्रभु रक्खे निय पास ।
समर धसे हय सहस दस, सुभट सहस दस भास ॥७५॥

कवित्त ॥

सकल सूर सामंत अरज बित्ती सु अद्ध निशि । वरषागम बद्दल वियाल द्रुग चाल बंध दिशि ॥ भेले भय भारथ सुभीम पतिसाहि सेन पर । ऋटकि जानि घन तरित भटकि चित चक्रित असुर भर ॥ वे चूक २ कबिला बकत जानि किसान लुनंत कृषि । बज्जी सुझाक झर षग्ग झट संयुग प्रलय समीर शिषि ॥७६॥

छंद मकुंदडामर ।

झननंकिय षग्ग सुबज्जि झटाझटि धाइधसं-मस धींग धसें । कर कुंत सकन्ति रुकन्ति कटारिय लोह झलंमल झांइ लसें । जरि जोधनि जोध जनो जम जोरिय टोप कटक्कि करी करकैं । झटकंत सनाह कृपान झनंकति हड्ड कटक्कि वजें जरकैं ॥ ७७ ॥

मिलि कंकनि कंक सुधार षिरंतह अग्गि झरंत कि बिज्जु झला। तिन होत उदोत तकै उतमंगहिं कोपित सूर अनंत कला॥ मचि कंदल मीर गंभीर कटैं मधि माझिय जेइ मसंद महा। तनु भार सभारिय षंध भुजा तिन भार पराक्रम षग्ग बहा॥ ७८॥

बहि बज्र प्रहार गदा गुरु मुग्गर पक्खर भार सुढार ढरें। टुटि टोपनि टूक फटैं फुनि टट्टर सैद बिकैद से सून फिरैं॥ लरि लुंब पठान छके छिलि लोहनि षंड बिहंड बितंड भये। प्रहनंत न अप्पन आन पिछानत जानि सुठाण के षंभ गये॥ ७९॥

दुहुं ओर दुबाह उछाह उमाहिय आपने ईश की आन बदै। तजि नेह सुदेह सुगेह सुमानिनि सांईय काम सुहाम रदै॥ करि ताक संभारि संभारि सुहक्कत बेधत बान अभंग बली। तनु त्रान संधान सुआन स मानहिं बेधत आनहिं होत रली॥ ८०॥

सर सोक बजंत सुढ़ंकिय अंबर डंबर जानि कि मेघ अवै। बहि रंग प्रबाह सुराह प्रबालिय चोल रँगे जनु चेल चुवै॥ फरसी हर हुल्ल गुपत्ति फुरंतह धीरज केइक धीर धरै। भननंकिय गोर सुसोर भटक्किय गेन गजैं गिर शृङ्ग गिरें॥ ८१॥

धर पिट्ठि धसक्कि २ धराधर कायर जानि कुरंग भगे। घन घोष सुत्रंबक सिंधु घुरंतह ज्यों बर बीरनि

वीर जगे ॥ कुनमंत किते कबिला कलहंगनि हम्मि बहिल्ल गोहल्ल हरैं । मषि मारहु मार सुमार सुषं सुष भारिय भारत भूप भिरैं ॥ ८२ ॥

उतमांग पतंत कहैं केइ अल्लह के रसना तें रसूल ररें । घन घायल घाउ लगे घट घूमत झूमत ही धर धांसि परें ॥ हवसी उजबक्क बलोचिय भंभर भक्खरि भक्खरि कोन गिनें । परि सत्थर बित्थर बैरि रिनंगन बायक कैसे कहंत बनें ॥ ८३ ॥

कटि कंध कमंध सुअंध गहें असि नच्चत रूप बिरूप लगें । उबरंत परंत गिरंत,कि गिंदुक जिंदु अटट्ट-टहास जगें ॥ गज बाजि फिरंत रिनंगन गाहत भंजि करं कनि भूक करें । तरफैं अधतंग तुटे नर आसुर ज्यों जलहीन सुमीन ररें ॥ ८४ ॥

कर षग्ग कढ़ें शिर षंध लटक्कत आन झटक्कत झुंझि भरें । मुष मार बकंत हकंत हुस्यारिय झार प्रनार सुरंग झरें ॥ नट ज्यों भटकें किन बल्ल निपट्ट उलट्ट पलट्ट कुलट्ट नचें । अनतुंग अनोकुह अंत अलुज्झत मांस रु श्रोनित पंक मचें ॥ ८५ ॥

किम अश्व कटंव धयंत सुपाइन पाइ झरंत सुकुन्त बरें । रहि ठट्ट सुगट्ट कुधंत हकें करपार बदंतन स्रोनि परें ॥ बिन हत्थ किते धपि मारत मुंडहिं ज्यों वृष मेष महीष भिरें ॥ बढ़ि सत्थ लथब्बथ के

हय बाहु सुमुट्ठिन मुट्ठि ज्यों मल्ल जुरें ॥ ८६ ॥

भभकें करि सुण्ड विहंड भसुण्डह बब्बर रत्त प्रवाह चलें ॥ उछरें अरि षंड सुजानि अजग्गर जंगल केलि करंत जलें ॥ उड़ि श्रोनित छिंछि उतंग अयासहिं संझ समान सुबान बढ्यो ॥ बलि लेन बिताल रु बीर बिनोदिय चौंसठि युग्गिनि रंग चढ्यो ॥ ८७ ॥

लगि लुत्थिन लच्छि उलच्छि पलच्छिय हत्थिन हत्थिय ब्यूह अरे ॥ हय सत्थ किते हय ग्रीवह बस्सिय बाढ़ बिहस्सिय भूमि ढरे ॥ टुटि टोप रु त्रान कृपान सरासन तीर तरक्कस कुम्भ तुटें ॥ बर बेरष संबरि झंड उझझरि नेज रु नारि अराब फटें ॥ ८८ ॥

बहु रूप बिलास प्रहास समीहित ईश्वर अंबुज माल गुहें ॥ सब केक हकारि बकारि सुउट्ठहिं गिद्धिनि तुंडनि मुंड गहें ॥ महनंत दुहूं पष बीर पचारत आहि समाहि बदंत बली ॥ तिन सद्द सुनंत सुनारद तुंबर रक्खस जक्ख सुहोत रली ॥ ८९ ॥

अरि मुंड किते हय गय पय ठिप्पर चोट चोगान की दोट भये। रनरंग रलत्तल रत्त महीतल चक्क चलंचल चंड जुए॥ रस भैरव भूत पिचास महोरग दैतरु दानव दंद चहैं। सुर इंद सबै मिलि सूर सराहत हो हिंदुवान की जैति कहैं ॥ ९० ॥

करि रुंड रु मुंडनि नार मलेछनि सेन सुषंड

बिहंड भई ॥ प्रहरेक प्रमान महा झर मंडिय भारथ उद्धम भांति ठई ॥ बरें हूर समूर संपूर सुसूर सनेह गरें बर माल ठवें ॥ जयकार करंति अघाइ समुत्तिन मंगल गाय प्रसून अवें ॥ ८१ ॥

कवित्त ॥

प्रमुदित अर्वति प्रसून गीत रंभागन गावत ॥ बरत सु बर बर बीर बिमल मोतीन बधावत ॥ गरहिं घल्लि बर माल साषि दे सकल सूर सुर ॥ पंकजनैनी पढ़त बरयों मैं प्रगट एह बर ॥ बेताल फाल बिकराल बपु हास अट्ट हरषत हसत ॥ असि झरझरंत तुट्टत असुर धीर बीर रिण धर धसत ॥ ८२ ॥

असि अपार अकरार धार रिपुमार धपंतिय ॥ जंगवार जोधार भार करतार सुभंतिय ॥ झलमलंति झनकंति खिज्जि षल मत्थ बिपंतिय ॥ सोदामिनि-सोदरा समल सन अजय जपंतिय ॥ रँगी सुरँग रल-तल रुहिर सकल सत्तु संहारती ॥ हिंदवान थान रक्खन सुहद भगवति प्रगटी भारती ॥ ८३ ॥

बिफुरि हिंदु बर बीर ढान असुरान ढंढोरत ॥ हय गय नर संहार झार घन झंड झकोरत ॥ लुट्टत लच्छि अलेष कूह फुट्टी अकरारिय ॥ सोवत सुंदरि मत्थ साहिजादा भय भारिय ॥ षलभलिय सु षल-तिय कुल सकल अकल बिकल हिय हरबरत ॥ भग्गो

सभीति गिरि बन गहन निसि अँधियारी अरबरत॥८४॥

हिय हहरंति हुरम्म हार तुट्टत मोतिन गन ॥ परत हीर परवाल लाल श्रम भाल स्वेद कन ॥ निघ-टि स्वास निस्वास भरति लोचन मृगलोचनि ॥ यूथ भ्रष्ट मृग बधु समान चक्रित रस रोचनि ॥ धावंत उ-मग्गनि मग्ग तजि एकाकिनि गिरि गृह सजति । ए ए प्रताप जयसिंघ तुम अरिन बाम रन बन ब्रजति॥८५॥

लुट्टि षजान अमान लुट्टि हय गय सुबिहानिय । साहिगंज ढंढोरि तोरि तंबू तुरकानिय ॥ नौबति लेइ निसान भार रिपु थान सुभज्यौ । जानी सकल जिहान सकल सज्जन मन रंज्यौ ॥ बहुरे निसंक जय करि बहुत मिल्यौ म्लेछ तिन मारयौ । महाराण सुभट सामंत सजि बहु असुरान बिडारयौ ॥ ८६ ॥

दोहा ।

भगौ साहिजादा गयौ गढ़ अजमेर अनिट्ठ ॥
रहे न आसुर और रन नृपत बाब सब नट्ठ ॥ ८७ ॥
करैं सुमुजरो कुअर सों सकल सूर सामंत ॥
छवि छिलते रन छोहले बहु सुष पाय अनंत ॥ ८८ ॥
लहे सु जिन २ लुट्टि के हय बर हच्छी हेम ॥
कुंअर अग्ग ते भेट करि पोषिय प्रबर सुप्रेम ॥ ८९ ॥
रक्खन जोगे रक्खि के सनमाने सत्त सूर ॥
ग्राम ग्राम तिन देइ गुरु सज सिरपाव सनूर ॥१००॥

आए निज गृह जीति अरि करि बहु कंदल काम ॥
उथपि थान असुरेश को हृदय सुपूरिय हाम ॥ १०१ ॥
इहि परि रक्खे निज अवनि राजसिंघ महाराण ।
और हिंदु सेवे असुर षल षंडन षूमान ॥ १०२ ॥

अथ कलस कवित्त । अजमेरह अग्गरो काध दिल्ली धर धुज्जै । रिनथंभह रलतले लच्छि लाहौर लुटिज्जै ॥ षरासान षंधार थटा मुलतान थरक्कै । चंदेरी चलचलय भीति उज्जैनि भरक्कै ॥ मंडवह धार धरनी मिलय डुलय देस गुजरात डर । औ दकै साहि औरंग अति राण सबल राजेश बर ॥ १०३ ॥

अचल युद्ध धर अकल अखल अज्जेज अभंगह ॥ अद्भुत अनम अनंत आदि अवनीस सु अंगह ॥ कालकिन केदार पापि कज्जे प्रयाग पहु ॥ महि सु रग्ग मदवान बिरुद इहिं भांति जास बहु ॥ जगतेश राण सुअ जगत जस अच्छि देत बिलसंत अति ॥ कहि मान राण राजेस यौं छत्रीपन रक्खंत षिति ॥१०४॥

सज्जन सों सनमान दंड भरि थक्के दुज्जन ॥ जसकारक जाचकनि देत हय हच्छि दिन दिन ॥ न्याउ बेद बर नीति दूध कौ दूध जल जल ॥ अजा सिंघ थल इक्क सलिल डुक्कत बिन संकल ॥ ध्रुवर अजास जौलौं धरा प्रगट बिरुद जिन हिंदुपति ॥ कहि मान राण राजेश यों छत्रीपन रक्खंत षिति ॥१०५॥

इन्द्र रूप ऐश्वर्य्य दान जलधर ज्यौं दिज्जै ॥ राजतेज रबि रूप क्रोध रिपुकाल कहिज्जै ॥ लीला ज्यौं लच्छीस न्याय श्री राम निरंतर ॥ अर्जुन ज्यौं सर अचल विक्रमादित्य बचन बर ॥ कलियुग कलंक कप्पन बिरुद मलन असुरपति बिमल मति* ॥१०६॥

ऐं उत्तम आचार निबल आधार सबल नृप ॥ सुरहि संत जन सरन जग्य घन दान होम जप ॥ बिस्तारन बिधि बेद ईश प्रासाद उद्धरन ॥ असुरायन उत्थपन सुकवि घन बित्त समप्पन। दिन दिनहि सदा ब्रत षट दरस भुंजाई यदुनाथ भति। कहि मान राण राजेश यों छत्रीपन रक्खन्त पिति ॥ १०७ ॥

इति श्री मन्मान कवि विरचिते श्री राजविलास शास्त्रे महाराणा श्री जयसिंह जी कुंआरपदे श्रीचित्र-कूट महादुर्गे पातिसाह औरंगसाहि कथ साहिजादा अकब्बर तदुपरि रतिवाह वर्णनं नाम अष्टादसमो विलासः ॥ १०८ ॥

॥ इति श्री राजविलास ग्रन्थ संपूर्णः श्रीरस्तु ॥

नोट— इस छंद का अंतिम चरण हस्त लिखित पुस्तक में नहीं लिखा, परंतु अनुमान से जान पड़ता है कि इसका भी अंतिम चरण वही होगा जो इसके पहले और पीछे वाले छंदों का है। अर्थात "कहि मान राण राजेश यों छत्रीपन रक्खंत पिति"।